सायर तरंगिणी

प्राचीन ढालों का संग्रह

संग्रहकर्त्री

प्रवर्तिनी महासतीजी

श्री सायरकुंवरजी महाराज

सम्पादक एव प्रकाशक

जे. एम. कोठारी

अंडरसन पेट K G F.

द्वितीयावृत्ति १००० सं० २०२१

मूल्य दो रुपये

प्रथमावृत्ति की प्रस्तावना

हर पुस्तक की एक जीवनी होती है, भले ही वह छोटी हो क्यों न हो। इस पुस्तक की भी एक जीवनी है। सं० २०१९ के रावर्टसनपेठ के चातुर्मास में प्रवर्तिनी महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज के मन में बहनों के लिये सामायिक आदि के समय पढ़ने के लिये पुरानी ढालों का एक संग्रह प्रकाशित करवाने की बात आई। उपाध्याय मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज, पंडित मुनि श्री कल्याणऋषिजी महाराज, पंडित मुनि श्री मुल्तानऋषिजी महाराज, महासती श्री हुलासकुंवरजी, पारसकुंवरजी, इन्दुकुंवरजी, शीतलकुंवरजी आदि साधु साध्वियों के सहयोग से इन ढालों का संग्रह किया गया। चूंकि ये ढालें बहुत पुरानी पुस्तकें और हस्तलिखित पृष्ठों पर थीं, इनको सुधार कर सम्पादित करना जरूरी था। महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज ने जब मुझ से इन ढालों को सुधार कर सम्पादित करने के लिये कहा तो मैं कुछ घबरा गया। आज तक किसी भी प्रकार का सम्पादन कार्य मैंने नहीं किया था। न कभी मुझे कोई ढाल आदि पढ़ने का मौका ही मिला था। अत यह कार्य मुझे भारी जान पड़ा, फिर भी महासतीजी के प्रोत्साहन और सहयोग से इस कार्य को मैंने हाथ में लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश आधा सम्पादन होने के पूर्व ही मेरी तबियत बिगड़ गई और कार्य ठप रह गया। पुस्तक की छपाई के लिये जैनोदय प्रेस, रतलाम से बातचीत चल रही थी, और कुछ मैटर भेज भी दिया गया था। आगे के सम्पादन की समस्या पुस्तक के प्रकाशन में विलम्ब कर रही थी। इसी समय जैनोदय प्रेस के प्रबन्धक श्री बसन्तीलालजी नलवाया ने शेष सम्पादन अपने हाथ में सम्भाल कर जो सहयोग दिया वह भुलाया नहीं जा सकता। आभार

प्रदर्शन कर देने मात्र से अपना फर्ज अदा हो जायगा ऐसा मैं नहीं मानता। समय पर पुस्तक को सम्पादित करके सुन्दर ढंग से छाप कर प्रकाश में लाने का श्रेय श्री वसन्तीलालजी नलवाया को ही है।

बिना आर्थिक सहयोग के कोई भी पुस्तक छप नहीं सकती इसी प्रकार यह पुस्तक भी प्रकाश में नहीं आती यदि वार्टन कम्पनी बेंगलोर के अधिपति श्री मधुकर भाई मेहता और उनकी धर्म परायण पत्नी श्रीमती मजुला बहन ने ५००) की सहायता न दी होती। साथ ही रावर्टसेनपेट के श्री घीसुलालजी छाजेड ने ३०१) और ब्यावर के श्री जवतराजजी सिंघी ने २५०) देकर इस पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग दिया। साथ ही अन्य दाताओं ने भी जो सहयोग दिया उसके लिये धन्यवाद देता हू।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जो विलम्ब हुआ उसकी सारी जिम्मेवारी मुझ पर ही है न कि अन्य पर जिसके लिये क्षमा चाहता हू।

एन्डरसनपेट
दीपावली २०१८

विनीत
जे. एम. कोठारी

द्वितीयावृत्ति की प्रस्तावना

'सायर तरंगिणी' की द्वितीयावृत्ति पाठकों के हाथों में देते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। दो वर्ष पहले इसकी २००० प्रतियां प्रकाशित की गई थीं। थोड़े ही समय में सारी प्रतियां समाप्त हो गई और अनेक स्थानों से इसकी मांग होने लगी। इससे यह प्रतीत होता है कि समाज में प्राचीन, वैराग्य से ओतप्रोत सुमधुर विभिन्न रागों में गाई जाने वाली ढालों के प्रति आकर्षण और लगाव है। सचमुच महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज ने प्राचीन ढालों का यह सरस और उत्तम संकलन समाज के सम्मुख रख कर बड़ा सराहनीय कार्य किया है। इसके लिये मैं उनका आभार मानता हूं।

प्रथम संस्करण की अपेक्षा इस संस्करण में कुछ संशोधन परिवर्धन किया गया है। पहले कई स्थानों पर देशियां नहीं दी गई थीं वे इस संस्करण में दे दी गई हैं।

इस संस्करण के प्रकाशन में जिन उदारचेता व्यक्तियों ने आर्थिक सहयोग दिया है उनकी नामावली अन्यत्र दी गई है। उन सब का मैं आभार मानता हूं।

इस संस्करण का मुद्रण कार्य भी पूर्ववत् जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस रतलाम से ही कराया गया है। सुन्दर एवं शुद्ध मुद्रण हेतु मैं प्रेस के संचालक श्री बसंतीलालजी नलवाया को धन्यवाद देना नहीं भूल सकता।

आशा है, इस संस्करण को भी पाठकवृन्द अपना कर अधिक से अधिक लाभ उठावेंगे।

अन्डरसनपेट
रक्षाबंधन २०२१

संघ सेवक
जे. एम. कोठारी

प्रवर्तिनी महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज का जीवन परिचय

जन्म:—सं० १९५९ कार्तिक कृष्णा १३ बुधवार को जैतारण (राजस्थान) में।

पिता:—श्री कुंदनमलजी, डोसँचा बोहरा।

माता:—श्रीमती सिरेकुवर बाई।

विवाह:—स० १९७२ मिगसर कृष्ण २ को अनतपुर (आंध्र) में। श्री सुगालचन्दजी मकाणा के साथ।

दीक्षा:—स० १९८१ फाल्गुन कृष्णा १३ बुधवार को शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म. द्वारा तपस्विनी महासती श्री नन्दूजी महाराज के सानिध्य में बम्बई प्रान्त के मीरी ग्राम में।

चातुर्मासों की सूची:—

स० १९८२–१९८३ अहमदनगर

स० १९८४ पूना १९८५ चिचोंड

१९८६	मालेगांव	१९८७	बोरकुंड
१९८८	बागली	१९८९	सिहर
१९९०	हरताला	१९९१	चिचवड
१९९२	बड़गांव	१९९३	आवलेकारी
१९९४	पीपलगांव	१९९५	वारकुंड

१९९६	मुंडी	१९९७	धूलिया
१९९८	हिोलनापा	१९९९	नेतिया
२०००	पूना	२००१	सिकन्द्राबाद
२००२	हैद्राबाद	२००३	यादगिरी
२००४	बेंगलोर	२००५	बेंगलोर
२००६	मद्रास साहुकार पेठ	२००७	मद्रास साहुकार पेठ
२००८	मैलापुर मद्रास	२००९	करमकुंडा मद्रास
२०१०	साहुकार पेठ मद्रास	२०११	रावर्टसनपेठ
२०१२	बेंगलोर सिटी	२०१३	मैसूर
२०१४	ब्लाकपल्ली बेंगलोर	२०१५	बेंगलोर सिटी
२०१६	रावर्टसनपेठ	२०१७	वेलूर
२०१८	वानियम बाडी	२०१९	रावर्टसनपेठ
२०२०	अण्डरसनपेठ	२०२१	डोडबालापुर

महासतीजी द्वारा दी गई दीक्षाएं

(१) स १९८३ माघ महीने में घोडनदी में सोहन कुंवरजी ।
(२) स १९८४ फागन महीने में पूना में, सुमति कुंवरजी ।
(३) स १९९५ माघ महीने में धूलिया में पद्म कुंवरजी ।
(४) स १९९६ बोरकुंड में पारस कुंवरजी ।
(५) सं १९९७ बोदवड में इन्दुकुंवरजी
(६) स. १९९९ हिवडा में दर्शन कुंवरजी ।
(७) सं. २०१३ मैसूर में शीतल कुंवरजी ।

महासती श्री सायर कुंवरजी महाराज के उपदेशों द्वारा संस्थापित संस्थाओं का विवरण

(१) स १९८१ कडा (अहमदनगर) में विद्यालय ।
(२) ,, १९९० हरताला-स्थानक ।

प्रवर्तिनी महासतीजी श्री सायरकुंवरजी महाराज का जीवन परिचय

जन्म—सं० [illegible] [illegible] कृष्णा ११ [illegible] को [illegible] (राजस्थान) में।

पिता:—श्री कुन्दनमलजी, [illegible]।

माता:—श्रीमती [illegible] बाई।

विवाह:—सं० १९७२ मिगसर कृष्णा २ को [illegible] ([illegible]) में। श्री गुलालचन्दजी [illegible] के साथ।

दीक्षा:—सं० १९८१ फाल्गुन कृष्णा १३ बुधवार को शास्त्रोद्धारक बाल ब्रह्मचारी पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी म० द्वारा तपस्विनी महासती श्री नन्दूजी महाराज के सानिध्य में बम्बई प्रान्त के मीरी ग्राम में।

चातुर्मासों की सूची:—

सं० १९८२–१९८३ अहमदनगर

सं० १९८४ पूना १९८५ चिंचवड

१९८६	मालेगांव	१९८७	घोरकुंड
१९८८	बागली	१९८९	सिरूर
१९९०	हरसाला	१९९१	चिंचवड
१९९२	वडगांव	१९९३	आंवलेकारी
१९९४	पीपलगांव	१९९५	घोरकुंड

१९९६	मुडी	१९९७	धूलिया
१९९८	होलनाथा	१९९९	सेंतिया
२०००	पूना	२००१	सिकन्द्राबाद
२००२	हैद्राबाद	२००३	यादगिरी
२००४	बेंगलोर	२००५	वेंगलोर
२००६	मद्रास साहुकार पेठ	२००७	मद्रास साहुकार पेठ
२००८	मैलापुर मद्रास	२००९	फरमकुडा मद्रास
२०१०	साहुकार पेठ मद्रास	२०११	राबर्टसनपेठ
२०१२	बेंगलोर सिटी	२०१३	मैसूर
२०१४	ब्लाकपली बेंगलोर	२०१५	बेंगलोर सिटी
२०१६	राबर्टसनपेठ	२०१७	वेलूर
२०१८	वानियम वाडी	२०१९	राबर्टसनपेठ
२०२०	अन्डरसनपेठ	२०२१	डोडबालापुर

महासतीजी द्वारा दी गई दीक्षाएं

(१) स १९८३ माघ महीने में घोडनदी में सोहन कुंवरजी ।
(२) स. १९८४ फागन महीने में पूना में, सुमति कुंवरजी ।
(३) स १९९५ माघ महीने में धूलिया में पद्म कुंवरजी ।
(४) स १९९६ वोरकुड में पारस कुंवरजी ।
(५) स १९९७ बोदवड में इन्दुकुंवरजी
(६) स. १९९९ हिवडा में दर्शन कुंवरजी ।
(७) स. २०१३ मैसूर में शीतल कुंवरजी ।

महासती श्री सायर कुंवरजी महाराज के उपदेशो द्वारा संस्थापित संस्थाओं का विवरण

(१) स १९८१ कडा (अहमदनगर) में विद्यालय ।
(२) ,, १९९० हरताला–स्थानक ।

(३) स १९९५ घोरकुड-स्थानक ।
(४) ,, १९९७ धूलिया-कन्या पाठशाला ।
(५) ,, ,, ,, अमोल जैन ज्ञानालय ।
(६) ,, २००४ यादगिरी स्थानक
(७) ,, २००५ बेंगलोर जैन हिन्दी स्कूल ।
(८) ,, २००७ मद्रास की सस्थायें
(१) से जो जैन कालेज ।
(२) जैन कन्या हाई स्कूल ।
(३) मेटरनिटी हास्पीटल ।
(४) विविध जगहो में दवाखाने
(९) सं २००९ अचरापाकम हाई स्कूल, तिटीवनम लाइब्रेरी
(१०) ,, २०११ वेलूर स्थानक
(११) ,, २०१२ रावर्टसनपेठ सुमति जैन हाई स्कूल
(१२) ,, २०१३ मैसूर स्थानक
(१३) ,, २०१५ बेंगलार में
(१) जैन बोर्डिंग
(२) सुमति जैन छात्रालय
(१४) ,, २०१६ रावर्टनपेट कन्या विद्यालय
(१५) ,, २०१६ वानियम वाडी स्थानक
(१६) ,, ,, गुडियातम स्थानक
(१७) ,, २०२० अटरसनपेट कन्या विद्यालय । महावीर प्राइमरी ।

इसके अलावा दक्षिण के मैसूर और मद्रास प्रान्तो में सर उ
महाराजश्री के सदुपदेशों द्वारा तपस्या धर्म ध्यान आदि का बाहुल्य रा

प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशन के लिये प्राप्त आर्थिक सहायता के दानदाताओं की नामावली

राशि	नाम		पति का नाम	स्थान
२००)	श्री सायरबाई	धर्म पत्नी	फूलचंदजी गादिया	अन्डरसनपेट
२५१)	,, उगमबाई	,,	रुघनाथमलजी तालेडा	वेलूर
२०१)	,, मिश्रीबाई	,,	चम्पालालजी रांका	पुदुपेट मद्रास
१०१)	,, चांदाबाई	,,	प्रेमराजजी पचाणुसा बोरा	तेनाम्पेट ,,
१०१)	,, रसालीबाई	,,	माणकचंदजी	आरणी
१०१)	,, मिश्रीबाई	,,	मिश्रीलालजी कात्रेला	बेंगलोर
१०१)	,, जियाबाई	,,	सिवराजजी बोहरा	अन्डरसनपेट
१०१)	,, धीमीबाई	,,	घेवरचंदजी गोलेच्छा	तिरमसी
७१)	,, शृंगारबाई	,,	गणेशमलजी कांटेड	बेंगलोर
५१)	,, गुणवन्तीबाई	,,	सोहनलालजी कांकरिया	पेरनोबेट
५१)	,, हुलासबाई	,,	शकरलालजी कांकरिया	पेरनोबेट
५१)	,, सायरबाई	,,	गुलाबचंदजी सकलेचा	बेंगलोर
५१)	,, चन्द्राबाई	,,	मांगीलालजी रूणवाल	मैसूर
५१)	,, अनोपबाई	,,	भंवरलालजी बाफना	तिरपातूर
५१)	,, घेवरबाई	,,	मिश्रीलालजी धोका	पुदुपेट मद्रास
५१)	,, बिलमबाई	,,	सोहनलालजी छाजेड	रावर्टसनपेट
५१)	,, जननबाई	,,	घेवरचंदजी लुणावत	
५१)	,, उमरावबाई	,,	हरकचंदजी बोरा	
५१)	,, भंवरीबाई	,,	संपतराजजी बोरा	

—: अनुक्रमणिका :—

१	भगवान् श्री महावीर के श्लोक	···	····	२
२	भ. श्री पार्श्वनाथजी के श्लोक	·	···	१२
३	भ श्री नेमिनाथ के श्लोक	·	····	१९
४	भरत बाहुबलि के श्लोक	····	····	२५
५	शालिभद्र के श्लोक	····	····	३२
६	भ. महावीर की ढालें	····	····	४०
७	विजयकुंवर की ढालें	····	···	४६
८	विनय आराधना का चोढ़ालिया	· ··	···	५२
९	शील की नव बाड	·	····	६३
१०	श्री रहनेमी राजमती चरित्र	··	· ··	७३
११	एषणा समिति की ढालें	····	····	८०
१२	पाच समिति तीन गुप्ति की ढालें	···	· ·	८६
१३	आषाढ भूतिजी का चोढालिया	····	····	१०१
१४	थावरचा पुत्र की ढालें	· ··	····	१११
१५	धन्नाजी की ढालें	····	····	११८
१६	खदक मुनि का चोढालिया	··	····	१२६
१७	मेतारज मुनि का चोढालिया	····	·· ·	१३५
१८	मेघकुमार की ढालें	····	····	१४५
१९	नमिराय की ढालें	· ··	····	१५३
२०	चेलना रानी की ढालें	····	····	१६३
२१	आनद श्रावक की ढालें	····	···	१७५

❀ सायर तरंगिणी ❀

दोहा—यह मनोरथ माहरा, पूरो श्री भगवंत,
बालक हठ हाथी चढ़ूं, नहीं जाणे वर पंत।
हुं बालक तुम आगले, हठ कर बैठो स्वाम,
सायत विरद विचार ने, दीजो मोहे मुकाम।१।
बिन करणी तिरनो नहीं, नहीं झूठी अभिलाष,
खोटो हीरो बेचतां, कैसे पावे लाख।
सुख दुख करतो आतमा, संचे पुन्य ने पाप,
जैसा ही फल भोगवे, साखी धर छो आप।२।
सिद्ध साधक मिल्यां विना, विद्या सिद्ध न होय,
कई इक अकरम हुँ करुँ, सो पूठ तुम्हारी होय
मन घोड़ा तन ताजणा, चुप कर लीजै ताण,
तीनुं ने वस राखतां, पावे पद निर्वाण।३।
जनम जरा मरणो नहीं, अविचल सुख अनंत,
क्या जाणूं कद पामसूं, अखे सुमत रो पंथ।४।

फेरो कर स्वर्ग सिधायो। देवानन्द मन आरत आवे सुपना हमारा कुण ले जावे ॥९॥ माता त्रिसला री भाग सवायो, विन मांग्यो पुत्र सहज ही आयो। महल झरोखा मोत्यां री लाली, लटके लूमां ने सेजे सुंवाली ॥१०॥ पोढया त्रिसलादे ढलती सी रेणी, थोड़ी सी निद्रा जागे मृगनयनी। चवदेई सपना उत्तम देखे, जबके सी जागी हर्ष विपेसे ॥११॥ याद करीने हिरदा में धारे, देव गुरु ने धर्म चितारे। उठ सेजां थी धीमा पग ढाले, गज गति चाले जाणे मराले ॥१२॥ घणी उमाई पति पासे आई, पोढया जाणी ने पगाथे जाई। झीणा स्वरसु राग सुणावे नींद में सुता कन्त जगावे ॥१३॥ हाथ जोड़ी ने ऊभी निज मंदिर, पूछे महाराजा किम आई सुन्दर। बैठो सिंहासन बिश्रामो खावो, खेद टाली ने कारज फरमावो ॥१४। आदर पामी निज आसन बैठी, विनय करी ने बोले मुख मीठी। अचरज कारी सपना में दीठा सुणता स्वामीजी लागे अति मीठा ॥१५॥ बोले महा-राजा विविसेति भापो, सर्व सुणाओ शंका मत राखो। मलकंतो गज अंबाडी माथे, दूजो वृषभ ने सिंह साथाते चोथे लछमीजी जाकजमाल, पांच वरण री पुष्पां री माला। छटे उगंतो ससीहर दीवे, सहस किरण तणो सूरज सोहे ॥१७॥ आठमे धजा आकासा लेखे, नवे सम्पूर्ण कलस विपेसे। पदम सरोवर कमल कर छायो, क्षीर समुद्र हिलोलो

क्रीड़ा । जीमण को वेला भोजन कीना, लोंग सुपारी गुछण लीना ॥२८॥ नित नवला पहरे वस्त्र आभूषण, गर्भ प्रतिपाले टाले सब दूषण । पुन्य प्रभावे उपजे शुभ डोला, पूरे महाराजा करती रंग रोला ॥२९॥ ज्ञान प्रभावे गर्भ आलोचे, विनो करीने अङ्ग संकोचे । माता दुख पावे करती विचारो, हाले न चाले गर्भ हमारो ॥३०॥ राजा राणीजी झुरता वेहू, जीवे जठालग संजम नहीं लेऊं, मिल करती आंसूडा नाखे, पग फुरकायो हर्ष विशेशे ।३१। बांटे वधाई हुवो आनंदो, दिन दिन वाधे क्रम दूज नो चन्दो, चैत सुदी ने आधी सी रातो, तेरस ने जनम्या श्री जगनाथो ॥३२॥ छपन कुंवारी मंगल गावे, चौसठ इन्द्र मिल मेरू पर लावें । तीर्थ मेली ने पाणी मंगावे, भर भर कलसा ऊपर पधरावे ॥३३॥ इन्द्र सगलाई अनुकम्पा लावे, बालकवय प्रभूजी असाता पावे, तिण वेला ततखिण परचो दिखलावे, चटी चाम्पी ने मेरु कम्पावे ॥३४॥ ज्ञान प्रजुञ्जी सुरपत विचारी, जाणी प्रभूजी शक्ति तुम्हारी । अनंत वली ने शासन धीरी, शक्र इन्द्र नाम दियो महावीरो ॥३५॥ उछव करीने निज मंदिर लावे, सुंपी माता ने शीश नमावे । देवी देव मिल देवलोक जावे, विच में अठाई उच्छव करावे ॥३६॥ दिन उगे दासी दोडी ने आई, पुत्र जनम्यारी दीधी वधाई । सोना री झारी सुं माथो

वड़ियांरो जीमे सब सातो । सुतक तोली मीजी मकाणा, लोई तिल्ली ने खसखस का दाणा ॥४७॥ दाख बीजोरो खारक खजूर, काची गिरी ने केला अंगूर, किसमिस चारोली बादाम, पिस्ता नुकते पंचरंगी खावे सब हंसता । पूवा बड़ा ने कचोरी ताजी, पापड़ फलियां से सब कोई राजी । दाल सेवां ने मोगर मँगावे, भुज्या पकोड़ी सबने ही भावे ॥४९॥ चीणा चवला ने अम्लोल मेथी, और तरकारियां परोसे केती । केर काचरिया खीच्यां खागोड़ी, पापड़ की गोल्यां ने तिलवा रावोड़ी ॥५०॥ घोल बड़ा ने राईता ल्यावे, जूजू २ मिठाई दूणी जिमावै । आवे अथाणो केरीजी पाको, मांगे सगलाई पुरसण तो थाको ॥५१॥ कढ़ी चावल ने पतली पैले, मीठा पर खाटी सब कोई लेवे । ओला पतासा मिश्री रा पाणी, झारी भरलावे गंधोदक छाणी ॥५२॥ जीमि चूटी ने चलूजी कीना, विविध प्रकारना मूळण लीना । वैन सुवासण भुवाजी आवे, कुरता टोपी ने सांतिया लावे ॥५३॥ गावे मंगल बाजे बाजा, नाम दिरावे सिद्धारथ राजा । नाला री जागा प्रकट्यो निधाना, गुण निष्पन्न नाम दियो वर्धमाना ॥५४॥ वस्त्र भूषण ने रुपिया रोको, देई विदाया सरव संतोको । पाँचे धाया मिल पाले नान्‍- डियो, पोढे पालणिये गावे हालरियो ॥५५॥ छठे महिने खाणो सिखावे, चोटी मदारा केश रखावे । हंसे खेले ने

गोडाल्यां चाले, थाड़ी करावे आँगल्या झाले ॥५६॥ कड़ा मोती ने चाँद्ल्यो छाजै, कण्ठी डोरा ने हार विराजे। कडिया कन्दोरी गुगरिया घमके, पाये झाजरिया चाले छे ठमके ॥५७॥ जांग्या टोपी ने सुतण सोवे, बैठ गाडोले सगलाई जोवे। ताती जलेबी मिश्री ने मेवा, दई माखण सु मॉगे कलेवा ॥५८॥ आडो मॉडी ने रूसनो लेवे, माता मनावे मॉगे जो देवे। चक्री भॅवरा ने ख्याल तमाशा, देखी माताजी पूरे मन आसा ॥५९॥ लोड़ लडावै बेनड़ भुवा, आठे वरस रा झाझेरा हुवा। वेला शुभ देखी भणवा बैठावे, हर्से करीने जोसीजी आवे ॥६०॥ चाँदी री पाटी सोना रो बरतो, लिख लिख पहाड़ा मुख आगे धरतो, खोट जाणी ने कोप चढावे, खोसी पाटी ने सामा डरावे ॥६१॥ ॐकारनो अर्थ करावे, सुण ने जोसीड़ा अचरज पावे। या की बुद्धि रो पार न पावे, ऐसी तो विद्या हमने नहीं आवे ॥६२॥ थर थर धूजतो उठी ने भाग्यो, पोथी लेईने मारग लाग्यो, जोग जाणी ने कीनी सगाई, पुत्र परणायो बहू घर आई ॥६३॥ दास दासी ने डायजो लाई, पंचेद्री ना भोग विलसे सादई। प्रिय दर्शन नाम बेटी एक जाई, परणी जमालि जोगे जमाई ॥६४॥ मात पिताजी बारे व्रत धारी, लीनो अण-सन दोषण सब टाली, काले करीने ऊंची गत पाई, स्वर्ग बारमा उपन्या जाई ॥६५॥ उठासु चवसी अनुक्रमें

बारमा उपन्या जाई ॥६५॥ उठाणुं चवसी अनुक्रमें होई, क्षेत्र विदेह में शिवगत होई। पछे प्रभुजी संजम लेवे, बड़ा भाईजी आज्ञा न देवे ॥६६॥ माता पिता रो पडियो विजोगो, तु कांई भाई लेवे छे जोगो। धीरज राखी ने ठेरो रे भय्या, वर्ष दोय लग निर्लेप रय्या॥६७॥ लोकांतिक देवा तिण वेला आवे, हाथ जोड़ी ने अर्ज करावे। अवसर छे आगो संजम लीजे, भरत क्षेत्र में उद्योत कीजे ॥६८॥ इन्द्र आज्ञाकारी वैश्रमण आवे, भरीया भण्डारा दान दिरावे। मोला मासा रो सोनैयो कीजे,एक क्रोड आठ लाख दान दिन प्रति दीजे। इमर्ड़ा क्रोड़ा रो छमछर दानज दीनो, एकाएकी जिनवर संजम लीणो ॥६९॥ दीक्षा कल्याण उत्सव करावे, नर नारी पाछा नगरी में जावे ॥७०॥ कुटम्ब सहू ने पूछज दीनी, देसे अनारज इच्छा जी कीनी। शस्त्र ले शक्रेन्द्र उभाछे आगे कष्ट घणो छे उर में मागे ॥७१॥ हुई न होवे भगवन्त भाखे, कर्म दूजाणुं टूटे नहीं लाखे। लाड देश में पधारया आया, जीत्या परीसा कर्म खपाया ॥७२॥ बारे समसर ने साडा षट मासो, छद्मस्थ रहा वर्ष तीस घर वासो तपस्या करीने केवल पायो, तीर्थ थापी ने शासन वर्तायो ॥७३॥ गौतम आदि ने चवदे हजारो, सहस छतीसे महासतियां लारो। एक लाख ने गुणसठ हजारो श्रावक हुवा बारे व्रत धारो ॥७४॥ तीन लाख ने सहस

[illegible] ॥७५॥ [illegible] ॥ सु लाजे ॥७६॥ स्फटिक सिंहासन [illegible], [illegible] चीजे ने छत्रजी छाजे । [illegible] नन्दा, दरसण पामी ने हुवा आनंदा ॥७७॥ काया फल कूटी दूधनी धारा, देखी ने पाया अचरज भारा । हाथ जोडी ने गौतम पूछे, वाई सु सगपण प्रभुजी सु छे ॥७८॥ भगवंत भाखे मारी ए माता, समरण सुणी ने पाई सुख साता ऐसा पुत्र नो पड्यो विजोगो, अब तो दोनोइ लेसां मे जोगो ॥७९॥ संजम लेई ने कर्म खपाया, केवल पामी ने मुगते सिधाया । ऐसा तो बेटा जनम्यां परमाणो, मात पिता ने मेल्या निर्वाणो ॥८०॥ गोत्र नगर ने अचारज देसो, पावापुरी में चरमे चोमासो । राजा प्रजा ने देवीजी देवा, निस दिन सारे प्रभुजी री सेवा ॥८१॥ देस अठारा राजाजी आवे, चवदस पखीरा पोसाजी ठावै । चेठ विमान शक्रेन्द्र आवे, प्रदक्षिणा देई ने शीश नमावे ॥८२॥ इतनी प्रभुजी किरपा करावो, थोडी सी उमर और बढावो । भसम गिरह रो जोर हट जावे, दया धर्म रो उद्योत थावे ॥८३॥ हुई न होवे ये वात जी झूठी टूटी उमर के लागे नहीं चूंटी । होण पदारथ निश्चय होई,

टाल सके नहीं सुरनर कोई ॥८४॥ कातीवद अमावस आधी सी रातो, मुगति पधायो छे श्री जगन्नाथो। संघ चारों में हुओ छे सोगो, मोटा पुरषा रो पडियो विजोगो ॥८५॥ पछे झुरंता गोतमजी आया, मोहणी जीत्या केवल पाया। सुधर्मा स्वामी पाटे विराजे, तीरथ चारों में सिंह ज्यूं गाजे ॥८६॥ सात से साधु एक हजारो, चारसे ऊपर महासतियां त्यारो। करणी करीने कारण सारया, केवल पामी ने मुगते पधारया ॥८७॥ वर्ष चोसठ लग केवली रया, पाटोधर तीणुं मुगती में गया। वरत्यो केई वरते वरतणहारो, शासन चाल्यो वरस इकीस हजारो ॥८८॥ केई कथा ने सुत्र में धारी, शिलोको कियो ओछी बुध मारी। अधिको ओछो ने अक्सर हीनो, लीजो सुधारी पंडित प्रवीणो ॥८९॥ ज्ञानी भाख्यो सो तहत करीजे, झूठारी मिछामि दुकडं दीजे। समत उगणीसे साठ रो सालो, श्रावण वद तेरस जैपुर बरसालो ॥९०॥ रतन मुनिजी री सम्प्रदाय छाजे, पूज विनेचन्दजी पाट विराजे। ये कर जोड़ी जड़ावजी वन्दे, महर राखीजे वीर जिनन्दे। ९१॥

कलस-महावीर स्वामी मुगतपामी, दीन जाणी दुःख हरो,
सिधारथ नंदन, जगत चंदन सिध में सानिध करो।
प्रभु सेवक ने साता करो ॥१॥
मन वचन काय, पडूँ पाय, सीस पे दो कर धरी,

अरज एती करूँ केती, सेवा चाऊँ आपरी ॥२॥
संसार सागर तिरण तारण, विरद ऐसो जाण नें,
जग त्याग दीनो सरण लीनो, तार करुणा आण ने ।३।
काल आदि अनादि कलियो, चारगत उजाड़ में,
नन नाट खोटा खाया गोता, अब आयो बजार में ।४।
प्रपन्च फसियो कर्म कसियो, राग द्वेष बँधन करी,
मोह नींद मेटो जीव ठेठो दूरण की करणी करो ।५।
कर सहाय मोरी बांह तोड़ी कर्म कलेशी मार नें,
हेत जीत डंका होय निशंका, कदी न जाऊं हार नें ।६।
ले ज्ञान ध्यान [illegible] गाथे, समकित [illegible]
[illegible] भार मेली, [illegible] अमर सुख [illegible] ।७।

[illegible]

भरिया भंडारो, अष्ट सिद्धि नव निधि अपारो अतिघणू' सुन्दर ओपे ठकुराणी साहु वामादे माता पटराणी ॥४॥ जिणरी तो कूखे जगनाथ जायो, पारस कुंवर जग में नाम कहायो। तीन भवनरो नायक नाथो, मुगत रमणी में वाली छे वातो ॥५॥ चौसठ इन्द्रा रो पुजनीक देवो, निश दिन तो आगल सारे जी सेवो। दस भवांरो वेरी केरी सवायो, कमठ सन्यासो तापस आयो ॥६॥ चहुं-दिस अगनी धुकंती ज्वाला, सिर पर तो सोहे सूरज चढाला। इसड़ी पचागन तपस्या तपंतो, माला रुद्राक्षनी जाप जपंतो ॥७॥ गगा तट पर जी आसन कीनो, जोगी तप जप में अती गणो भीनो। सीस जटा ने मुगट सजुटी भांग धतूरा भखिया अतिवूटी ॥८॥ आसन पद्मासन पूरण छायो, लेपी भसमी नु' धमसम कायो। पहरण पावडियां आगल पडिया, धन कछोटो कसियो छेकडीयां ॥९॥ चहु चलावे जलके छे डाला, सींग रो सेली ने भभुत रा गोला। तीरो त्रिशूल अधिको विराजै, मालो चन्दणरी खोलज छाजै ॥१०॥ सोहे वाधम्बर का ग्रंबर सोहै, देख्या अवधुत ने गयो मन मोहे। अवधुत इसड़ो कोई नहीं आयो जस तपसी रो घणो सवायो ॥११॥ छोडी दुनियां सहु दरसण ने आवे, जल ज्यु' तो जोगी ज्वाला में नावे। इसड़ी वातां अब आई दर-भारो, कहे धामा सुण पारस कुमारो ॥१२॥ जहां जोगो-

सर जाप जपन्तो, दरसण री मन में लागी छे लग्नो, चढ़ि-
या वामादे माता चकडोले, चाकर महेल्या चमर
ढोले ॥१३॥ हुकम माता रो पारस कुमारो, गयवर ऊपर
हुवा असवारो। सरण आया रो साहिब स्वामी, जीव
सगलारो अंतरजामी ॥१४। हमती के हांदे गंगा तट
आया, कपटी कमठ री देखी सहु माया। जितरे तो जिन-
वर ज्ञानकर जोवे, हीये तापस रो मानज खोवे ॥१५॥
सुणहो तपसी एक माहरी वायो, इमडो तो तप महारे
दाय न आयो, इण विधि पंचाग्नी मतिजी
तापो जीव हिंसारो मोटो संतापो ॥१६॥ इणमें लगेगो
बहुत पापो, जाणी परिहर, राखो आपो। छोडो मद
माया दया चित धारो सीधा सुमरण सु होसी निस्तारो
॥१७॥ इतनो सुणी ने कमठजी बोले, आतुर उफलतो
आंखज खोले। गुसो भरीयो ने धड़ धड़ धुजतो, किड़
किड़ जाता ने गड़ २ गुज्यो ॥१८॥ वाले वड़ वड़ने
वके बदनुरो, कड़ कड़तो आंख्या ने दीसे करूरो। राजकंवर
तु दीसे अवतारो, अब तो लेवेगा अंत हमारो ॥१९॥
कुडीतो करतो हम सेतो सेखी, ऐसी तपस्या में हिंसा तुम
देखी। कुडा सो कंवर काम नहीं कीजे, जंगल जोग्यां ने
आल न दीजे ॥२०॥ वरजे वामादे उवा परचावे, रखे
तपसी कोई हुनर चलावे। इतरे लंड़का रा टुकड़ा कर
डाला, बलता आफलता नाग नीकाला ॥२१॥ अंतर

मोरत जीवन काया, प्रभु पारस तिहा नाम सुणाया।
तड़पड़ता पडिया बाहर फणन्दो, पाया अमर पद हुए
धरणिन्दो ॥२२॥ हवे तो तपसी हुवो हैरानो, भरी सभा
में पडीयो खीसाणों। धुकन्ती धूणी जटा बिखेरी, अब
तो खबर है पारस तेरी ॥२३॥ जल जलतो बलतो आफ-
लतो उठ्यो, प्रभु पारस पर गणोइज रूठयो। मारी तपस्या
रो अपजस थायो पारस कुंवर ने होय दुखदायो ॥२४॥
काया कष्ट रो पीड़ परमाणो, चुकूं तो नहीं कुंवर
सुंठाणो। कालमासे करकीना छे काला, उपनो कमठा-
सुर मेघज माला ॥२५॥ ये तो जिनवरजी मोटा उपगारी,
लेसी दीक्षा ने उतरसी भवपारी। नाग नागणी रो कियो
निस्तारो, जस हुवो हैं सगले संसारो ॥२६॥ लोग नगरी
रा सारा सुख पाया, हिवे कंवरजी मेहला में आया। इम
करता उतरियो वरस गुणतीसो, आप आलोचे मन में
जगदीसो ॥२७॥ पहली तो वरसी दानज दीधो, पछे तो
अवसर दीक्षा जो लीधो। सोले मासारो इक कनक
कहीजे, कनक सोले रो सोनइयो लीजे ॥२८॥ आठ लाख
सोनइया एकज क्रोड़ो, नित प्रति देवे इनरारी जोड़ो।
इसडा छमसरी वरली दानज दीधा, जिनवर तेईसमां संजम
लीधा ॥२९॥ तीन सौ मुनिवर हुवा जिणवारो, लारे जुडे
छे उणरो परिवारो। इक दिन प्रभुजी शिवदग वन में,
ध्यान धरीयो छे अविचल मन में ॥३०॥ अब तो कमठा-

प्रकासो ॥३६। वाणी पैंतीसे अतिसे चोतीसो, इणविध विचरे जिनवर तेवीसो, जिठां जिनवर पगल्या पधरावे, असाता आगासु अगली हो जावे ॥४०॥ सौ सौ कोसां में न पड़े दुरभिक्षा, मोटा रोगां सु होवे सघरी रक्षा। कोई सरावक घरे पारणो पावे, देवता सोनइया क्रोड़ वरसावे ॥४१॥ सुरपति भगवंतरी सारे नित सेवा, लाभ अनंत एक क्रोड़ देवा। देवीदेव मिल दर्शन को आवे, रतन कंचन रो तिगड़ो रचावे ॥४२॥ वाणी धुंकारे उठे अति भारी, परदा सारी ही समझी तिणवारी। गाँव नगर पुर सोहे विचरता, भाग्य भवि जीवां रा मिलिया भगवंता ॥४३॥ गुण ना आगर ने सागर गंभीरा, लडिया करमा सुं भारी रणधीरा। अनेक जीवांरा कारज सार्या, भव-सागर सुं पार उतार्या। ४४॥ एक सौ वरसां री पाई छे उमर, जाय तो चढ्या सम्मेदगिरि शिखर। तिथि आठम ने श्रावण सुद मासो, प्रभूजी सीधां में कीदो छे वासो ॥४५॥ उण सिधारी केसु वखाणे, केइक सूत्रा रो मत पिण जाणे। सिध सीलारो इसडो उनमानो, उठे जिनवर रो अविचल स्थनो ॥४६॥ लांबी पोहली लाख पैंतालीस, जोयण कथियो गुणवंता ईस। मोटी वीच में तो आठ जोजनसगली, छेड़े माखी री पांख सी पतली ॥४७॥ सोहे सिधां री अनंत श्रेणी, संख्या सिधपुर की नहीं आवे कहणी। पाणी पवन रो नही लवलेसो, नहीं

पोहवदी दसमी मोटा छे दीनो ॥५७॥ भणे वचने सुणे मदाई, ज्यारे उणयत नहीं रये कोई। सुख संपत दायक लायक स्वामी, तीन भवनरा अन्तरजामी ॥५८॥

इति श्री पार्श्वनाथजी रो शिलोको सपूर्ण

श्री नेमीनाथ भगवान नो सोलोको

सिद्धि बुद्धि दाता ब्रह्मा नी वेटी, बाल कुंवारी विद्या नी पेटी। हंसवाहिनी जगमां विख्याता, अक्षर आपो नी सरस्वती माता ॥१॥ नेमजी केरो केसुं शिलोको, एक मन थी सांभल जो लोको। जंबु द्वीपना भरत मां जाणो, नगर सौरीपुर स्वर्ग समानो ॥२॥ चहुँटा चौरासी बारे दरवाजा, राज करे तिहाँ यदुवंशी राजा। समुद्र विजय घर शिवा देवी राणी, शीले सीता ने रूपे इन्द्राणी ॥३॥ नेह तणी जे कूंखे अवतरिया सहस अठोत्तर लक्षण भरिया। खारो खाटो ने मीठो आहार गर्भ ने हेतु कीधो परिहार ॥४॥ घोर घटा ने जलधर गाजे, सजल नीलांबर पुहवी विराजे। बादल दल मां विजली झबूके, क्षण क्षण अतर मेह ठहूके ॥५॥ पूरण नदिये आव्या छे पूर, पूरण पुहवी पसरया अंकुर। ऋतु मनोहर दादुर डहके, भरया सरोवर लहरे ते लहके ॥६॥ छवी हरीयाली अजब छबीली, नाले आभरणे धरती रंगीली। राग मल्हारनी ऋतु भलेरी आज आवी पांचम

कृष्ण तणी जिहां आयुधशाला तिहां कणे पहुँचा दीनदयाला ॥१७॥ शंख चक्र ने धनुप उदार धनुप खींच ने कीधो टंकार । वलता सेवक इणी पर बोले, गोविंद विना ए चक्र न डांले ॥१८॥टची आंगुलीए चक्र उपाडियुं चाक उणी पर भलु भमाडियुं । अचंक उभा इणी पर भाखे, शंख ने बाजे कृष्णजी पाखे । १९॥ हलवेसुं लई शंख बजाव्यो, साते पाताले सरगे सुणायो । शेप सल-सलिया धरां तहां धमकी,झरोखे बेठी कामिनि झबकी॥२०॥ हबक लागी ने हार तिहां तूट्या, कंचुक तणा बध विछुट्या । समुद्र जलहलीया चढिया कल्लोले, कायर कंपे ने डुंगरा डोले ॥२१॥ हाथी हबक्या ने उबक्या उंजार तेजी त्राठा ने डरया दिक्पाल । पवण थस्यो ने धरती घेराई, कृष्णजी ने सुणो बलभद्र भाई ।२२॥ कोईक नवो ते वेरी अवतरियो, मोटो बलवंत मत्सर भरियो । नादे अणहद अंबर गाजे, एहवो तो शख किणसुंइ न वाजे ॥२३॥ त्रिभुवन मांहे कोई न सुजे, चक्री वारे ने इन्द्र अलुजे । यदुनाथ ने थई ते जाण, वात सुनी ने हुवा हेरान ॥२४। धूजे भूधर चिंते मन मांय, राज काज ते मेल्यां केहवाय । सुगुण सोभागी साहसिक शूरो, एक वाते ए नहीं अधूरो ॥२५॥ मुझ थी बली ओ महा-बलधारी, मोटे सोचे ते पडियो मुरारी । बली बली मनमां चिंते वनमाली, राज हमारुं लेशे उलाली ॥२६॥

कुल कोडी जादव मिलिया, तूर ने नादे समुद्र जल हलिया ॥३६॥ चढी जान ने वाजे छे वाजा, जाणे असाढे जलधर गाज्या । जुगत करीने जादव चढिया, प्रथम घाव नगारे पडिया ॥३७॥ मयगल माता ने परवत काला, लाख बेयालीस बल सुढाला । छाके छकया ने मदे झरंता, मूके सारसी चाले मलकंता ।।३८॥ लाख वेतालीस तेजी पाखरीया, ऊपर असवार सोहे केशरिया । अच्छी अच्छी ने पंच कल्याणा, पूठे पोढा ने पुरुष सुजाणा ॥३९॥ समगते चाले ने चक्र रहंता, चंचल चपल चरणे नाचंता । साज सोने री सोहे केकाण, लाख वेतालीस वाजे निशाण ॥४०॥ लाख वेतालीस रथ जोतरिया, कोडी अडतालीस पाला छे चलिया । नेजा पंचरंगी पांच क्रोड जाणो, अढाई लाख तो दिवीधर लखानो ॥४१॥ सोहे राजेन्द्र सोले हजार, एक सो अस्सी साथे साहूकार । साथे सेजवाला पंच लाख वारु, मांहे सुदरी बेठी देदारु ।४२॥ शेठ सेनापति साथे परवाण भली भांत सु चाली छे जाण । वंदूक नी धुंआसु सूरज छिपायो, रजडंबरे अंबर छायो ॥४३॥ धवल मंगल गाये जा नरडी, जागे सरसतीनी वीणा रणजणी । वागे केशरीया वरगोडे चढिया, काने कुंडल हीरां सुं जडिया ॥४४॥ छत्र चमर ने मुकट विराजे रूप देख ने रतिपति लाजे । जान लेई ने जादव सिधाव्या, उग्रसेन रे तोरण

ने भरत सिधाव्या, साधी षट्खंड अयोध्या आव्य ॥६॥ नगरीना लोक सामां ते आवे, मोतियांरो थाल भरं वधावे । वाजे वाजा ने मुंगल भेरी, शेरीए फुलड़ां नां छे वेरी ॥७। याचक जन तो कीरति बोले, कोई न आं श्री भरत ने तोले । दिन दिन दौलत बधे सवाई बीजानं नहीं तेवी अधिकाई ॥८॥ अनुक्रमे कीधो नगर प्रवेश चक्रनो उच्छव मांड्यो नरेश । चक्र ते रह्युं आकाशे भमे, आयुध शालामें आवे नहीं किमे ॥६॥ सहु मलीं मनमां विमासे, शामाटे चक्र रह्युं आकाशे । सुण साहिब कहे सेनानी, भाई तुमारो एक गुमानी ॥१०। बाहुबल नामे महाबल धारी तेह न माने आण तुम्हारी हठ मांडी ने रह्यो हठीलो, छत्रपति छोगालो छेल छबीलो ॥११॥ अबलो ने ए महाअभिमानी, सेवा कीदी

भरत चक्रवती साहेब हमारो । आयुध शालाए चक्र न आवे, तेणे करीने तमने बुलावे ॥१६॥ करी असवारी वेगे सधावो, तिहाँ आवी ने शीश नमावो । नावो तो करो युद्ध सजाई, मांहो मांही भली समझो बे भाई ॥१७॥ भरत चक्रवती षट् खंड भोगी, अभिमान सहुना रयो आरोगी । ते आगेल शुं गजुं तमारुं, ते माटे कह्यु मानो अमारुं ॥१८॥ इम सुनी बाहुबल जंपे, मुझ आगे तो त्रिभुवन कंपे । चढ्यो क्रोध ने दंतज करडे, होठ करडे ने मूछज मरडे ॥१६॥ एहवा ते कुण भूल्यो छे भारी, जेह तडोवडी करे हमारी । कहे बाहुबल चढावी रीस, करुं युद्ध पण न नामुं शीश ॥२०॥ वेगे खीजी ने दूत ने चलीयो, अनुक्रमे भरत ने आवी ते मलियो । भरत ने जई दूत ते भाखे, आण न माने कटकाई पाखे ॥२१॥ सुणी वात ने मानी ते साची, चढाई करवा भेरी ते वाजी, हाथी घोड़ा ने रथ निशाण, लाख चोराशी तेहनुं परिमाण ॥२२॥ रथ लइने शस्त्र ते भरीया, धवला धोरीडा धिंग जोतरीया । साथे छन्नुं कोड पाला पर-चरिया, नेजा पचरंगी दशकोड धरिया ॥२३॥ पूरा पाँच लाख दीवी धरनार, महीपति मुगटाला बत्रीश हजार । शेष तुरंगम क्रोड अठार, साथे व्यापारी संख न पार ॥२४॥ सवा क्रोड ते साथे परधान महोटी नालनुं तेर लाख मान । साथे रसोइया सहस बत्रीश, लश्कर लईने

छुं बंधव माटे ॥३५॥ वली फेरव्यो पावक वन में, जिम नल राज ने जूवटे जग में। बालपणा ने रुडां संभारी, गर्व ते करजो पछी विचारी ॥३६। भरत सांभलजे साचुं हुं भाखुं, हवे केहनी लाज न राखुं। बालपणानो रमत नाठी, हवे बॉधी छे बाकरी काठी ॥३७॥ एम कहीने रणवट रसीयो, धनुष लई ने सामो ते धसीयो। उवट्यो धुंआडो प्रगडी जाल, बाहुबले तिहाँ, झाली करवाल ॥३८। बॉधी हथियार सामो ते आवियो, प्रथम तुंकारे भरत बोलव्यो, कांई हणावे सुभटनी घाटा, आपण कीजे युद्ध बे काटा ॥३९। कोई बीजानुं इहां नहीं काम, फोगट बीजां ने मारो कां काम। चढीए आपने अवध ज राखी, सुरनर कोडि करयां तिहां साखी ॥४०॥ बेहुने शरीरे रह्या बेहु पासा, तिहां सुर नर जोवे तमासा। भरत बाहुबल अधिक दीवाजे, बेहुने शिर छत्र मुकट बिराजे ॥४१॥ भरत बाहुबल सामा बे भाई, शशि रवि सरीखा रहे थिर ताई निरखी सुरनर रहे सहु अलगा, दृष्टि युद्ध मां प्रथमज वलगा ॥४२॥ नैनां सु नैना मेली ने जोवे, भरत री आंखा सु आंसु चूवे, जिम भादरवे जलधर धारा, जाणे के टूटा मोती ना हारा ॥४३॥ हारयो भरत ने बाहुबल जीत्यो, त्रिभुवन मांहे थयो वदित्तो। बोले बाहुबल बंधव प्रीति, बीजुं युद्ध कीजे शास्त्रनी रीति ॥४४॥ नरहरि

ने मूठ चमचमे, जेम दुहाणो विषधर धमधमे ॥५४॥
ठामे थई भरते हाथ उपाड्यो, मारी मूठ ने भू पर ते
पाड्यो। ढींचण लागे घाल्यो धरती मांही, जाणे रोप्यो
खीलो जग मांही ॥५५॥ गुरते उठ्यां आप संभाली,
भरत ने रीसे मारयो दंड उलाली। घाल्यो धरती मां
कंठ प्रमाण, कायर कंपे ने पड्युं भंगाण ॥५६॥ चक्री
नुं सैन्य थयुं ते झांकुं, भरत विमासे भाग्य छे वांकुं।
बाहुबल कटके वाजित्र वाजे, वीतशोका थई सुभट विराजे
॥५७॥ उठ्यो ते आप धरा धंधोली, क्रोधे ते रहयो चक्र
ने तोली। भरत चक्र ने आज्ञा आपी, बाहुबल मांथुं
लावजे कापी ॥५८॥ बाहुबल मनमां एम विमासे, धिग
बोलीने पछी विमासे। शुं कुखे आव्यो भरत पापी
न्याय नी रीत नाखी उथापी ॥५९॥ मूठी तोली
ने रहयो ते जेवे, जलहल चक्र आव्युं ते तेहवे। वेगे
वल्युं ते वांदी ने पाय, गोत्र में चक्र न चाले क्यांय ॥६०॥
चढ्युं कलंक चिंते ते चक्री, मुजथी नानो पण मोटो ए
चक्री। भरत रहया हवे हाथ खंखेरी, एहनी मुठी नी गत
अनेरी ॥६१॥ दीन हीणो भरत ने जाणी, बाहुबल बोले
ते एहवी वाणी। भरत नुं मारुं भाई सलूणो, मानव
माथुं कोई मत धूणो ॥६२॥ मुठी नुं मन मां आणी
आलोच, मस्तके लई कीधो तें लोच। बाहुबल थयो ते
साध वैरागी, सुर नर पूजे पाय ते लागी ॥६३॥ देव

कोई पण हाथ न धरिया । रत्न कंबल सोले ते लीए, भद्रा वहुओ ने व्हेच ने दीए ॥१४॥ वीस लाख तिहां सोनैया वारु, दीधा गणी ने तेहने दीदारु । लेई सोनैया वेपारी वलिया, मनना मनोरथ तेहना फलिया ॥१५॥ चेलणा राणीनी चिंता जाणी ने, तेडी व्यापारी कहे ताणी ने । करी सपाडा कंबल काजे, श्रेणिक राजा भरी सभाजे ॥१६॥ नृप ने व्यापारी कहे शिर नामी, शाने सपाडा करो छो स्वामी । कंबल सोले भद्राए लीधा, वंगे वीस लाख दीनार दीधा ॥१७॥ मनमां विचारयुं श्रेणिक महाराजे, वाणिये लीधां व्यापार काजे । एम चिंती ने एक संगाते, खाले नाख्यो ते खबर पावे ॥१८॥ वात महल मां तेह वंचाणी, कहे राजा ने चेलणा राणी । इहां तेडीए वणिक अनूप, जोइए केवुं छे तेहनो स्वरूप ॥१९॥ तुरंत महाराज तेहने तेडावे, भेट लइने भद्रा तिहां आवे । भद्रा आवी ने भूप ने भाखे, स्वामी सांभलो राणी नी साखे ॥२०॥ वणुं सुहालुं शालि कुमार, हर्म्य थाये ए कोश हजार । न लहे रात ने दिवस नूर, किहां उगे किहाँ आथमे सूर ॥२१॥ निपट नाजुक छे ते न्हानडियुं, क्यारे केहनी नजरे न पडियो । ते माटे तमो लाज वधारो, प्रभुजी अमारे मंदिर पधारो ॥२२॥ पूरे साथिन्न छोरु ना लाड, स्वामी तेमां शुं पाड गमाड । इम सुणी ने श्रेणिक राय, प्रधान साथे जोवुं दे ठाय ॥२३॥ अभय-

कुमार तब कहे एम, प्रभु तुम घरे आवशे प्रेम। भद्रा भूपने पाय जी लागी, सात दिवसनी अवधि मांगी ॥२४॥ सीख लई ने भद्रा सिधावी, रुडी महलनी रचना रचावी। परिकर लेई ने नृप बिंबसार, पहुंचा शालिभद्र सेठ ने द्वार ॥२५॥ वेगे आगल थी चाल्या वधाऊ, खरी भाखे जई खबर अगाऊ। जोमे जमाडी हरख उपाई, चारु तेहने दीधी छे वधाई ॥२६॥ महल नी रचनां जोतां महाराज अचरज पाय ने मन मां हरषाय। अहो! मैं हूँ अलकापुर राजो, भ्रान्ति ए भूल्यो ने भेद न पाम्यो ॥२७॥ जिम तिम करी ने बीजी भुंइ जाय, तीजे माले तो दिग्मूढ थाय। जोये ऊंचो ते नयन ने जोड़ी, जाण्यो के उग्या सूरज कोडी ॥२८॥ सहु साथ ने बेसाडी तिहां, भद्रा जई भाखे पुत्र छे जिहॉ। श्रेणिक आव्या छे महल मझारी, वेगे तिहॉ आवो तजी ने नारी ॥२९॥ गेले गुमानी कहे ते गाजी, मुझ ने तमो शुं पूंछो छो माजा। श्रेणिक लई ने वखारे भरो, लाभे लोभे वली दीयो ने वरो ॥३०॥ तिहांरे माता कहे न लहे तुं टाणुं, सुतजी श्रेणिक नहीं करियाणुं। मगध देश नो मोटो छे राजो, आण एहनी लोपी न जायो ॥३१॥ एहवुं सुणी ने कुमार आलोचे, सांसे पडयो ते मन माही सोचे। म्हारे माथे पर जो छे महाराजा, तज शुं तो सही भोग ए ताजा ॥३२। एम चिंती ने मुजरो ते आयो, नृपने नमीने महलां सिधायो।

कंपे । ४२॥ पण तुमे तो शूरा पूरा छो, पग रखे हुवे मांडोजी पाछो । कामिनी तजवा नो कहो जो ठाठ, एक वार तो तजो जे आठ ॥४३॥ स्वामी संयमनी वातें छे सहेली, दुष्कर आदरतां खरी छे दोहली । सीख देवा ने सहु सज्ज थाय, तुमने वंदु जो त्रिया तजाय ।।४४॥ भागे भाई तु ताणे ते पाणु, हलवो पाडवा कीधु जो हांसु । तो में आठे ने मेलो उलाली, वचन में कहशो कामनी वाली ॥४५॥ पिउजी हंसी में एहवु में भाख्यु, तुमे हिया मां गांठी ने राख्युं । दिल खेंची ने छेह न दीजे, अबला जाति नो अंत न लीजे ॥४६॥ तरुणी हंसी में तमे जो कहयु, पण हमें तो सांचतु लहयु । साची बेन तु शालिभद्र केरी, फोकट वचन ने अब मत फेरी ॥४७॥ संजम लेवा नी ते सज्ज थई, धन्ने शालिभद्र बोलाव्यो जई । उठ आलसु हुं थयो आगे, महावीर पासे जई महाव्रत मांगे ॥४८॥ धन्नो शालिभद्र संयमधारी, थया विषयनी वासना वारी । भद्रा पुत्र ने वोलावी रलीयां, वहुयर लेइने मंदिर वलीयां ॥४९॥ वीर साथे ते देश विदेश, विचरे वैरागी साधु सुवेशे । तप करी ने दुर्बल तने, वारे वरस ने अंते ते बन्ने ॥५०॥ आव्या राजगृही नगरी उद्याने, मास उपवासी ब्रवते ते वाने । आहार ने काजे वीर आदेशे, पहोता भद्रा ने तेह निवेशे ॥५१॥ आंगन आव्या पण उलख्यां नांही, तत्त्वण पाछा वलीने

हस्तिपाल राजा वीनवें कर जोड़, पूगो प्रभुजी म्हारा मन रा कोड । शीघ्र पधारो अठे चौमासो, करुणा सागर थाजो कृपा नाथ ॥२॥थे॥ रावनी रानी विनवे गद् लोक, पुन्य जोगे मिल्यो थेंरा नो जोग । मनवाछित मह मिल्याजी काज, कृपा कर पधारो जीनो जिनराज ॥३॥थे॥ श्रावक श्राविका कई नरनार, मिलि विनंती कर वारंवार। पावापुरी में पधार्या वीतराग, प्रगटी पुण्याई म्हारा मोटाजी भाग ॥४॥थे॥ वलि हस्तीपाल राजा विनवे भूपाल, प्रभूजी थे छो दीनदयाल । प्रभूती म्हारे मोटी छे शाल, हवे लागो वरषाजी काल ॥५॥थे॥ मानी विनती प्रभु रह्याजी चौमास, पावापुरी में हुवो हर्ष उल्लास । गौतम गणधर गुरांजी पास, निशदिन ज्ञान को करे अभ्यास ॥६॥थे.॥ साधु अनेक रह्या कर जोड़, सेवा करे सदा होड़ा जी होड़ । चवदे हजार चेला रत्नां री माल, दीक्षा लीधी छोड़ माय जंजाल ॥७॥थे॥ वड़ी चेली चन्दन वालाजी जाण, हुई कुंवारी महासती चतुर सुजाण । मोती नी माला छत्तीस सार, सहु में वड़ी साध्वी सरदार ॥८॥थे.॥ चारो ही संघ सेवा नित करे, प्रभुजी ने देखी आंख्यां ठरे । नव मल्ली ने नव लिछी जी राय, ज्यारा दर्शन नी चित्त में चाय ॥९॥थे॥ संघ सघला री हुई मन रंगरली, पुण्य जोगे प्रभुजी री सेवा मिली । ऋषि रायचंद विनवे जोड़ी हाथ, करुणा सागर

ाजो जी कृपा नाथ ॥१०॥थे.॥ शहर नागौर में कियो ौमास, प्रभुजी दीजो मने मगति रो वास । हुँ सेवक ुम साहिब स्वाम, मारे ओर देवां सु नहीं काम ।११।थे.।

इति ढाल दूजी समाप्त

॥ ढाल तीसरी ॥

ासन नायक श्री महावीर तीरथनाथ त्रिभुवन धणी । ावापुरी में कियो चरम चौमास हुई मोच दायक री महिमा घणी ॥ गौतम ने मेल दियो महावीर देवशर्मा ने प्रतिबोधवा ॥१॥ आंकड़ी ॥ उतराध्ययन नो अध्याय छत्तीस कार्तिक वदी अमावस्ये कह्यां । एक सौने वली दस अध्ययन सूत्र विपाक तणा लह्यां ॥ गौतम ॥२॥ पोसा कीधा श्री वीरजी रे पास देश अढार ना राजीया । नव मल्ली ने नव लिच्छवीजी राय वीर ना भगत वाजिया ॥ गौतम ने ॥ ३ ॥ प्रभु शासन ना सिरदार, सर्व संघ ने संताप में । सोले पहर लग देसना दी पछे वीर विराज्या मोच में ॥ गौतम ने ॥ ४ ॥ तीन वरस ने साढा आठ मास, चौथा आरा का बाकी रह्या । दिन दोय तणो संथार मौन रही मुगते गया ॥ गौतम ने ॥ ५ ॥ इन्द्र आवियो जो वृत्ति उदास, देव देवी नी साथ में । जाणे जगमग लग रही जोत, अमावस्या नी रात में ॥ गौतम ने ।। ६ ॥ मुगति पहोंच्या एकाएक, सात सौ हुआ ज्यारे

प्रीतम प्यारी सुणोजी, केम रेसी हो या छानी वात। प्रगट हुवा संयम लेसां पछे लइसा ओ करमां रे साथ ॥सु॥६॥ करे समायां पोसा भेलाजी, एक सेज मंभार। ज्यूं रहे भगिणी भ्रात सुंजी, शील पाले खांडा री धार ॥सु॥७॥ मन वचन काया करी जी नहीं जागे हो काम विकार। सार धर्म जाणयो जिण नणो दूजा जाणयो सहु संसार ॥सु॥८॥ नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे जी वांरे लेखे हो लेउं अवतार। राम कहे ढाल दूसरी, संयम पालो नर नार ॥ सुणोजी शील सुहामणो ॥९॥

दोहा:-चरम शरीरी महा उत्तम ज्ञानी किया गुण ग्राम।
एम सुणवा विस्मय थया, सब कोई करो प्रणाम ।१।
लक्ष्मी भाग न राखती, के दाता के सूर स्वभाव।
इत्यादिक मोय छाना रया, विमल देख्यो कविराव प्रकाश ॥२॥

॥ ढाल तीसरी ॥

तिण अवसर तिण काल, दक्षिण दिशमाय ओ सुखकारी मुनिराज। विमल केवली नामे मुनिवर सोहे हो जिणंद ॥१॥ चम्पापुरी का बाग में उतरया ओ सुखकारी मुनिराज। बहु नर नारी मुनि वंदन परवरिया हो जिणंद ॥२॥ ओ संसार असार मुनि दिखलायो ओ सुखकारी मुनिराज। तन धन यौवन जाता वार न लागे हो

रशन की मन मांय ॥ धन्य २ तेमने, हो भवियण, जो पाले ब्रह्मचार ॥टेर॥१॥ नगर कोशंबी का बाग में, हो भवियण, सेठजी डेरा दिराय । विजय कुंवरजी का तात जी, हो भवियण, मिलवा हर्ष अपार ॥धन्न॥२॥ सेठ कहे किम पधारिया, हो भवियण, दाखो मुझ ने बात । धरम लगपण हम आविया, हो भवियण, तुम सुत दर्शन काज ॥धन्न। ३॥ विमल केवली गुण किया हो भवियण, बाल ब्रह्मचारी तेय । तुम दर्शन की मन मांय वसे, हो भवियण, चित में होवे चाव ॥धन्न ४॥ सेठ सुणी रीस में थया, हो भवियण, लिया कुंवर बुलाय । कैसी भांत का सोगन लिया, कुंवरजी, कांई थांरा मन मॉय ॥धन्न।५॥ कर जोड़ी कुंवर कहे, हो तातजी लीनो अभिग्रह धार । आज्ञा दीजो मुझ भणी, हो तातजी, लेसां संजम भार ॥धन॥६॥ सेठ कहे कुंवर भणी, हो कुवरजी, कठिन मुनि आचार । पड़िया घर का किम रवे, कुंवर, हो मेरुजी जितना भार ॥धन॥७॥ लाख प्रकार नहीं रहॉ हो तातजी संजम लेसां भार । वैरागी पण नहीं रहे ओ तातजी, संयम सुख दातार ॥धन। ८॥ विजया कुंवर पण लीधो हो भवियन, शुद्ध पाले आचार । जप तप करणी खूब करी, हो भवियन, दोनुं पाम्या केवल ज्ञान ॥धन। ६॥ ब्राह्मी ने सुन्दरी दोनुं बेनड़ी हो भवियन शुद्ध पाले आचार । जप तप करणी खूब करी, हो भवियन, दोनुं

पाम्या केवल ज्ञान ॥धन॥१०॥ समत अठारे दस में, हो भवियन, नागोर शेषे काल। फागण सुदी पूनम दिने, हो भवियण, जोड़ी जुगत से ढाल ॥धन ११॥ स्वामी वृद्धिचंदजी का प्रसाद से, हो भवियन गाम किया गुण ग्राम। ओछो अधिको जे कहगो, हो भवियन, मिच्छामि दुक्कड़ा मांय ॥धन॥१२॥

॥ इति श्री विजयकुवरजी की ढाले सम्पूर्ण ॥

॥ अथ विनय आराधना नुं चौढालियो प्रारंभ ॥

दोहा–श्री जिनराज प्ररूपियो, विनयमूल जिनधर्म। यूं जाणी मनि आदरो टूटे आठो कर्म ॥१॥ विनय बिना शोभा नहीं नाक बिना जिम नूर। जीव बिना जिम देहड़ी गन्ध बिना जिम [illegible] ॥२॥ नमसी [illegible] आपने [illegible] न होय। डाल [illegible] नमे सो भारी होय ॥३॥ आंबली जम्बुदिक उत्तम वृक्ष नमंत। तिम गुणी जन जाणिये [illegible] अकड़न्त ॥४॥ मात पिता [illegible] अधिक ही, गुरु उपकार अपार। [illegible] आशा- [illegible] ॥५॥ [illegible] गुरु [illegible] ॥६॥

॥ ढाल पहली ॥

[illegible]

[illegible] गुरु बिन नहीं

गावे। गुरु गुण सागर रे दरिया, चरण करण रत्नागर भरिया ॥गु.॥१॥ मोती जैसा मैला कहिये शक्कर सरीखा खारा मनइये। सुमेरु जैसा समझो रे न्हाना, अणगमता निज प्राण समाना ॥गु.॥२॥ अधीरज कुंजर रे जेहवा, केशरिसिंह जिम कायर कहेवा गुणधर जेहवा ऐ विराधी। भारंड पंछी जिम प्रमादी ।गु॥३॥ सुरगुरु जेहवा रे अभ-णिया, श्रमण जेहवा मूंजी सो जाणिये। क्रोधी तो ए पूरा दीसे, टले नहीं जे कर्म शत्रु अरि से ।गु.।४। शशि सम उष्णता रे जानो अप्रतापी जिम दिनकर मानो। सुर तरु जेहवा रे अदाता, श्री जिन जेहवा लोभः विख्याता ।गु॥५। शमदम उपशम रे करणी,करे गुरुदेव सदा सुख-भवतरणी। भवजल तारक ऐ वाणी, दे उपदेश सदा सुख-दाणी ॥गु।६॥ माहनी कर्म रे अंधो, करतो नीच अका-रज धंधो। दुर्गति पड़तो रे राखे, निर्वद्य वेण मधुर सत्य भाखे ।गु.।७। सत गुरु करुणा रे कीनी, बोध बीज सम-कित घट दीनी। भ्रम मिटायो रे ए भारी, सतगुरु सम नहीं कोई उपकारी ॥गु॥८॥ महिपति संयति रे नामे, पहुँचो वन मृग मारण कामे। गर्दभाली मुनिवर रे तार्यो, संयम लेई निज कारज सार्यो ॥गु.॥९॥ परदेशी हत्या रे करतो, पाप करण सुं रंच न डरतो। केशी गुरु तार्यो रे सोई, गुनचालीस दिन में सुर होई ॥गु.॥१०॥ दृढ़प्रहारी ए नामे, चार हत्या करी जातो परगामे। सत

थाने । मैं कहुं सावत वात वनाई गुरु कथा छेदी वखाणे ।।जा ।।१५।। गुरु वखाण करे तिन मांही कोइक काम वताई । पर्षदां मांही भेद्ज पाड़े, मूरख समझे नांही ।।ज.।।१६। गुरु वखाण करीनें उठे तिणहीज सभा मझारे । सोहीज शास्त्र साहीज गाथा करे अरथ विस्तारी ।।ज.।।१७। हीणता जतावे निज गुरु केरी पंडितपणो वतावे । लोकसरावण सुण कर मूरख, मनमें अति अकड़ावे ।।ज.। १८।। गुरु नां आसण ओघो पूंजणी पगसुं ठोकर देवे । गुरु ने आसण सूवे वेसे ऊचो आसण ठेवे ।जा.।१९। गुरु नी प्रशंसा करे न पोते, सुण कर अति मुरझावे । तेतीस अशातन मूल कही सो, जड़ा मूल सूं हावे ।।जा.।। ।।२०।। गुरु ने आगे वस्तर केरी पालठी मारी वेसे । कर वाँधे किरसाण जु भोलो, टेके वेठे विपेशे ।।जा.।।२१।। पाय पसारी आलस मोड़े पग पर पग चढावे । विकथा मांडे कड़का मोड़े गुरु ने नहीं मनावे ।।जा.।।२२।। हड़वड़ हंसे शरम नहीं राखे, जिम तिम वोले वाणी । काम करे गुरु ने विनपूछियां विच विच वात ले ताणी ।।जा ।।२३।। गुरुजी कोईक चीज मंगावे, जावण को मन नाहीं । उत्तर टाले चोज लगाई ते सुणजो चित्त लाई ।।जा ।।२४।। हाल वखत नहीं गोचरी केरी, अथवा नर नहिं घर में । दिया होसी किवाड़ वारणे, मिले न इण अवसर में ।।जा.।।२५।। वहरावण रा भाव न दीसे, अथवा जिण रे नांई । असूझता

सुता होसी वस्तु न मिलसी ठाई ॥जा.॥२६॥ अवार
हुँ आखर सीखुं लिखसु पानो पूरो। पलेवणो तथा
डेल जानो, अथवा घर छे दूरो ॥जा॥२७॥ सो तो
नूस तथा मिथ्यात्वी मुझ ने नहीं पिछाणे। शरम आवे
क भीख मांगता, जाऊं केम अजाणे ॥जा.॥२८। मुझने
ड वाय न सोमे, तड़को चढिया जासुं। कहे उन्हालो
व वले मुझ, दिन ढलिया थी सिधासु ॥जा॥२९॥
मासे कहे कीचड़ बहुलो, पग लपसे छे महाराज। भूख
गी थकेलो चढियो, पग अकड्या छे सारा॥जा.॥३०॥
हारा शरीर में अड़चन दीसे चालण शक्ति नांइ। एक
र में आणी दीधो अब भेजो परतांई ॥जा.॥३१॥ एक
ाम करावे तिण में, जाणी ढील लगावे। जाणे जलदी
रसुं कारज फेर मुझ और बतावे ॥जा.॥३२॥ विनय
दना करे न पहेली, कहे मुझ ज्ञान सिखावो। पाछे
रजो काम तुम्हारो पहेला बोल बतावो ॥जा.॥३३॥
ंयम लीधो मैं तुम पासे, एता दिन के मांही। काम
काम में काल वितायो, ज्ञान सिखायो नांई ॥जा॥३४॥
अवगुण आपना देखे नाही बात करण को तसियो। पेट
भरीने नींदज लेवे, विकथा सुणवा रसियो ॥जा.॥३५॥
सामी सांज सुं पाय पसारे, भणियो सो न चितारे। टेके
बेठा अक्षर सीखे भली सीख नहीं धारे ॥जा.॥३६॥ गुरु
की कहनी करे वेठ ज्युं, अवगुण ताके परका। सुअर

निर्जरा रूप प्रमादी दीनी । नि.॥३॥ अंग चेष्टा थी
की देखी, सो कारज करणो सुविवेकी । वैयावच्च
आलस छोड़ो भक्ति कियां पहेली मत पोड़ो ॥वि॥
प्रश्न पूछतां हाथ जी जोड़ो, शीश नमावी मान
मोडो । मधुर वचन प्रशंसा करके ज्ञान सीखो
आनंद धर के ॥वि.॥५॥ छोटा मोटा सुं हिल
रहीजे, अधिक भण्या को गर्व न कीजे । खार रोष
सुं राखणो नांई, म्हारो थारो करो मत कांई ॥वि.॥
वाद विवाद झोड़ मत मांडो, विकथा वात तणो
छांडो । वचन कहो मत कोई मर्म नो, मन में सदा
राखो कर्म नो ॥वि.॥७॥ रीस वसे पातरा मत
झटको खाई दुजा पर तटको । जेम तेम बड़ बड़
करिये, लोक व्यवहार सुं अधिको डरिये ॥वि ॥८॥
शब्द करो मत हेला, सुण कर लोक हो जावे ज्युं भेला।
जैन मार्ग की लघुता आवे, ससारी सगा सुण दुख पावे
॥वि ॥९॥ प्रिय धर्मी की आस्था छूटे क्रोधरिपु संजम धन
लूटे । ऐसो काम करो मत शाणा, इण भव निंदा आगे
दुःख पाणा ॥वि.॥१०॥ रिद्धी छोड़ी जिण रो गर्व न
कीजे, अधिक गुणी पर नजर जो दीजे । आगला का
अवगुण मत देखो, अपणा अवगुण को करो लेखो
॥वि.॥११॥ बाल तरुण वृद्ध जो नर नारी, सब थी जी
कारे बोलो विचारी । तुं तुं तुंकारो ओछी बोली, करिये

नहीं कुछ ठट्ठा रोली ॥वि.॥१२॥ नीचे देखी धीरे पग मेलो, न्याय प्रमाण सुणी मत ठेलो। संजम काम में निर्जरा जाणी, उज्ज्वल भावे शंका मत आणो ।वि.१३। पंच व्यवहार प्रमाण करीजे, निश्चे व्यवहार की नय समझीजे। उत्सर्ग और अपवाद पिछाणो, सतगुरु वैन करो प्रमाणो ॥वि.। १४॥ इण विध करणी भव जल तरणी, दुःख दुर्गति आपद हरणी। त्रीजी ढाले विनयरीत वरणी तिलोकरिख कहे शिवसुख वरणी ॥वि.॥१५॥

दोहाः—मान बड़ाई इर्षा, क्रोध कपट दे टाल ॥ म्हारो थारो छोड़ क चाले रूडी चाल ॥ विनय करे गुरुदेव को करे आज्ञा परमाण ॥ तिणने महागुण नीपजे ते सुणजो भवि जाण ॥

॥ ढाल चौथी ॥

विनयतणा फल मीठा, हलुकर्मी सुणकर हरमावे ॥ मुरझावे नर ढीठा रे ॥ भाई ॥ विनय तणा फल मीठा ॥टेर॥ प्रगमे ज्ञान विनीत शिष्य ने, ज्ञान थकी भ्रम भाजे ॥ भ्रम गया सुं समकित पुष्टो, समकित सुं व्रत छाजे रे ॥भाई॥वि.॥१॥ व्रत पाल्यां सु धन धन वाजे आदर अधिको थावे ॥ खमा खमा करे नर नारी, मन-गमती वित पावे रे ॥भा.॥२॥ विनयवंत शिष्य ने सीख चोखी होवे सुशाताकारी। इण भव मांही रिद्धि सिद्धि

ख कहै मूल धरम को,करवा पर उपकारो रे ॥भा.॥१३॥
ण कर राग द्वेष मत करजो समुचय दियो उपदेशो ॥
हीं मानो तो मरजी तुम्हारी निज करणी फल लेशो
॥भा.॥१४॥ दान शील तप भावना भावो ए जग में
त सारो ॥ पालो आराधो विनय यथारथ उतरोगे भव
ारो रे ।भा.॥१५॥ कलश॥ विनय करणी, दुःख हरणी
ुख निसरणी जाणिये ॥ इणलोक शोभा आगे शुभगति
सेधान्त न्याय वखाणिये ॥ धरम मूलसो, विनय दाख्यो
ींचे तो फल पाइये ॥ कहे रिख तिलोक भवि का
आराध्यां शिव गति जाइये ॥सम्पूर्ण॥

॥ अथ शील नी नव वाड़ प्रारम्भ ॥

श्री नेमीश्वर चरण नमुं, प्रणमुं उठ प्रभात ।
बावीसमां श्री जगत गुरु, ब्रह्मचारी विख्यात ॥१॥सुन्दर
अपसरा सारिखी, रतिसमव राजकुमार । भर यौवन में
जुगत सुं छोड़ी राजुल नार ॥२॥ ब्रह्मचारी जिन पालतां
धरता दुष्कर जेह । ते तणा गुण वरणवुं, पावन होवे
देह ॥३॥ सु गुरु पोते कहया, रसना सहस्र बनाय ।
ब्रह्मचारी मे गुण घणा तो पिण कहया न जाय ॥४॥
गलत पलत काया थयी तो पिण न मूके आस । तरुण-
पणे व्रत धारिया बलिहारी जिनराज ॥५॥ जीव विमासन
जो मिले विषम राज गिवार । थोड़ा सुखां रे कारणे

मूरख होमी बदहाल ॥६॥ इण दृष्टांते दोहिलो लाधें नर भव सार। शील पालो नव वाड़ सुं सफल करो अवतार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥

सील सुरतरु सेवियें, व्रत में गिरुआ जेवो रे। दंभ कदाग्रह छोड़ ने धरिये तिण सुं नेहो रे ॥१॥ जिन शासन वन अति भलो, नंदन वन उणिहारो रे। जिनवर वन पालक तिहां, करुणा रस भंडारो रे ॥सी.॥ मन थारो तरु रोपियो, बीजी भावना अंचोरे ॥ सदा सारुण तिह रहेवे विमल समकित अंचोरे ॥सी.॥३॥ मूल जो दृढ़ समकित भलो खंदन वेदंत दाखो रे। साखमहाव्रत तेहने, अणु व्रत लेवो लघु शाखो रे ॥सी ॥४॥श्रावक साधु तणा घर गुण विन पात्र अनेको रे। मोह करम शुभ बांधवा, परि गुण अतिरेको रे ॥सी.॥५॥ उत्तम गुर सुख फूलड़ा [...] सुखते फल जाणो रे। जतन करी व्रत राखजो हिवड़े अतिरंग जाणो रे ॥सी.॥६॥ अध्ययन उत्तराध्याय सोलमो वंभ सामायिक थायो रे। किदी तरु ते पंखानि, ये नववाड़ सुजाणो रे ॥सी.॥७॥

हवे प्राणी जाणी करो, राखो प्रथम वाड़।
जो भांगी ने विनसिये, प्राणी पर आधार ॥१॥
जेम तेम खंडन करे, जो प्रमाद के माय।
शील वृक्ष उपाड़ता, तुरंत वाड़ विनास ॥२॥

॥ वाड़ पहली ॥

भाव धरी नित पालजो, गिरुओ व्रत अतिसार हो भवियण । त्याथी शिव सुख पामिजो, सुन्दर तणो सिणगार हो भवियण ॥भाव.॥टेर॥१॥ तिरिया पशु पंडक रेवे तेहां नहीं रेवे वास हो भ. । तिणरी संगत निवारजो, व्रत रो करे विनाश हो ॥भ.॥भा ॥२॥ मंजारी संगत रमे कुरकुट, मूसा रे संग मोर हो भवि. । कुशल किहां थी तेहने पामे दुख अघोर हो भवि. ॥भा.॥३॥ अग्नि कुंड के पास रहे, पिघले घृत तणो कुंभ हो भवि. । नारी संगत पुरुष जो रहेवे किम रेवे प्रतिबंध हो भवि ॥भा॥४॥ सिंह गुफा वासी यति, रया कोशाल चित्रसाल हो भवि. ॥ तुरंत पड़ियो वस तेहने, देश गयो नेपाल हो भवि.। भा.॥५॥ अकल विकल विना बापड़ा, पक्षी करता केल हो भवि.॥ दिठी लिछमन महासती, रुली घणी इण वेल हो भवि.॥भा.॥६॥ चित चंचल पंडग केरो, धरते तीजो वेद हो भवि. ॥ तज संगत रति तेहनी, कहे मुनि उमेद हो भवि.॥भा.॥७॥

अथवा नारी एकली भली न संगत थाय ।
धर्म कथा नाही सुनै, बैठे तिणरे पास ॥१॥
त्यांथी औगुण ऊपजे, संका पामे लोग ।
अनछतो आल आवसी, बीजी वाड़ विनास ॥२॥

॥ वाड़ तीसरो ।

तीजी वाड़ हिवे चित्त विचारो, नारी सहित बैठनो
ारो रे लाल ॥ एकण आसन इम दुख जाणो, चौथा
में दोष लगावे लाल॥१॥इम बेसंता असंग थावे,असंग
ाया फरसावे लाल ॥ काया फरसे ने विषय रस जागे,
याथी अवगुण थावे लाल ॥२॥ जोवो श्री संभव प्रसिद्धो
फरस न्यारो कीधो लाल ॥ द्वादशमो चक्री अव-
यो चित्त प्रतिबोध तेंने दीधो लाल ॥३॥ इम उपदेश
ा नहीं लाग्यो कायर थयी ने भागो लाल ॥ सातवी
रक तण दुखकारी नरक तणी सॉची सेलाणी लाल ॥४॥
कजी आसन इम दुख जाणो, निज आतम हित परि-
हरो लाल ॥ माँ बहन औ बेटी जी थावे, जो बैठे ने उठ
जावे ओ लाल ॥५॥ कल्पे मुहूर्त एक न पछे जिनवर
ी वाणी सुणो ओ लाल ॥६॥

—चित्र लिखंती पूतली तो पण जोवे नांय ॥
केवल ज्ञानी इम कयो, दशवैकालिक मांय ॥१॥
नारी भेष नरपति थयो चक्षु कुशलयो केवाय ॥
लक्ष्मण चौथी बाड़ तज रूलियां छे ऋषि राय ॥२॥

॥ वाड़ चौथो ॥

मनहर इन्द्री नारी ने देखो वधे विकार भाग्ये लंका
में मृगलो रे फांस रचियो करतार ॥ सुगुण रे नारी रूप

न जोय ॥टेर॥१॥ नारी रूपी दीवलो, कामी पुरुष पतंग ॥ झंपे सुखरे कारणें दामें अंग आनंदो सुगुण रे ॥ना॥२॥ मन गमता रमता किने रे उरक सुरक गुं बंध ॥ आहार लेई भोगी धस्यो रे जोवंता व्रत भंग सुगुणरे ॥ना॥३॥ हाथ पांव छेदिया हुवो रे नाक कान पिण जोय ॥ तं पिण सौ वर्षा लगे रे ब्रम्हचारी तजे तोय सुगुण ॥ना.॥४॥ रूपे जो रंभा सारखी रे, मीठा बोली नार तो पिण हिवे जाई करी रे, ब्रम्हचारी व्रत धार सु रे ॥ना.॥५॥ कामण गारी कामिनी जीत्यो सर्व संसार आखिर आणया कोई न रयो, सुरनर गया सहु सुगुणरे ॥६॥ अबला इन्द्री जोवतां रे, मन भावे प केम ॥ राजिमती देखी करी रे तुरन्त डिग्यो रहनेम सुगुण रे ॥ना.॥७॥ रूप कूप देखी करी रे, मांय पडियो कुमुंद ॥ दुःख मन तो जाणे नहीं जिनवर कहे प्रसंग सुगुण रे ॥ना॥८॥

दोहा—सजोगी पासे रहे, ब्रम्हचारी दिन नीश।
कुशल त्यागा व्रत भणों भागे विरचा वीश ॥१॥
वेठे नही खूंटी आंतरे शील तणो हुए हान।
मन चंचल वस राखवा, सुनो श्री जिनवर वाण॥२॥

॥ वाड पांचवी ॥

वाड़ सुनो हिवे पाँचमी, शील तणा रखवालो रे ॥
चोरज घड़सी ते सही व्रत थासी विसरालो रे

॥वाड़॥१॥टेर॥ भींत परिचय नहीं आंतरे, नारी रहै तिहां रातो रे ॥ केल करे निज कंत सुं विरह मरोड़े निन गावो रे ॥वाड़॥२॥ कोयल जिम टहका करे, गावे मधुरा नादो रे ॥ के रातो मातो थई, धूर सरीखो उनमादो रे ॥वाड़॥३॥ रोवे विरह आकुल थकी, दाजे बहु दुख मालो रे ॥ हीन दीन रा बोलना, काम जगावा चालो रे ॥वाड़॥४॥ काम अंगे हड़ हड़ हंसे, पिऊ मिल्या तन तापो रे ॥ वात करे तन मन हरे, विरह सु करे विलापो रे ॥वा.॥५॥ राग विषय मन हुलसियो हंसियां अनर्थ थाय रे ॥ राम विरन हस्या थका, रावण वाद रयो जाय रे ॥वा॥६॥ ब्रह्मचारी नहीं सांभले, एहवा विरह ना वेणो रे ॥ के जिन दरपे धीरप धरे, चित्त चले सुन सेणो रे ॥वा.॥७॥

दोहा—छट्ठी वाड़ विचारतां, चंचल मन मत डिगाय ॥ खायो पियो विलसियो तिण सुं चित मत लगाय ॥१॥ काम भोग प्रार्थना आपे नरक निगोद प्रत्येक ने कियो किसो, विलसे हिये विनोद ॥२॥

॥ वाड़ छठी ॥

भर जोवन धन,सामग्री,लही पामे अनुक्रम भोगोजी। पाँचों इन्द्रिया रे बस भोगवे, पामे भोग संजोगोजी ॥भर॥टेर॥१॥ चितारिया सो ब्रह्मचारी नहीं, पूरब भोगव्या सुखोजी ॥ अच्छी विनस्यो रे सात में, स्नेह

ढाल दसवीं

श्री वीर द्वादश परिसदा में, उपदेश दियो जिन
ल ॥ शील सदा तुम पालजो । टेर॥ फल तेहनो सरस
ाल, चार कर्म अरिहंत हणया ॥ वे लेसी श्रो शिव
ु प्रवीन ॥सील.। १॥ बत्तीस ओपमा शील नी भाखी
जिनराज, सुर असुर नर सेवा करे ॥ मन वांछित
भे काज ॥शील.॥२॥ त्रिभुवन रे पाय नमुं, शील
म पुण्य नहीं कोय ॥ क्रोड़ी क्रोड़ी धन देवे, शील
मो पुण्य न होय ॥शील.॥ नारी ने दोष नर
की, जिहां नारी तिहाँ नर न होय ॥ ये नउ वाड़ दोनुं
सारखी, ते पाली घर संतोष । शील.॥४॥ संवत सोलह
े अस्सी भाद्रवा वद बीज ॥ उमेद मुनि कहे जुगत सुं,
ालस तज पालजो शील ॥शील॥५॥

॥ इति शील नी नव वाड़ सपूर्ण ॥

॥ श्री रहनेमी राजमती का चरित्र ॥

ोहा:—अरिहंत सिद्ध आचार्य ने उवज्झाय अणगार ॥
पाँचों पद ने नमन करूं अट्ठोत्तर सौ बार ॥१॥
मोक्ष गामी दोनों हुवा, राजिमती रहनेम ।
चरित्र कहूं रलियामणो, सांभलजो धर प्रेम ॥२॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देशी—इन स्वारथ निद्रा चंदायो कद गोती)

राजमती तो सेणी साध्वी, संजम मारग चाले जी ॥
ी आर्च्यां री हो गई गुरुणी, दया धरम उजवाले
। श्री नेम जिणंद ने वांदन चाली राजुल गढ
रनारो जी ॥टेर॥१॥ पांच सौ सतियां रे साथे, लीधो
म भारोजी । दरसण केरो कियो उमावो, चाली
र्ज्यां तिण वारो जी ॥श्री॥२॥ ऊजड़ मांय उठी
बल मच गयो घोर अंधारोजी । गाज बीज कर बरसण
गो, अटवी दडक आरो जी ॥श्री.॥३॥ भींग गई
रज्यां तिण अवसर अंधारो नहीं सूझे जी । बिछुड़
ई ज्यां त्यां सगली किण ने मारग बूझे जी ॥श्री॥४॥
जमती तो चली अकेली हो गई घणी काई जी ॥
ज गया कपड़ा ने माड़ी दौड़ गुफा में आई जी
श्री.॥५॥ राजमती ने रहनेमि रो, हो गयो गुफा में
णो जी ॥ भीगा कपड़ा अलगा मेल्या, साध्वी चतुर
जाणो जी ॥श्री.॥ साध्वी तिहां उघाड़ी ऊभी कंचन
रणी काया जी ॥ बिजली में ऊभो दीठो मानव देखी
गोपरी माया जी ॥श्री.॥७॥ कंपन लागी सगली कायो
ील सोच में बैठी जी ।' अंग प्रत्यंग देख लेवे न कोई
जुल इण विध बैठी जी ॥श्री.॥८॥ रूप देखि रहनेमि
डिग्यो संयम योग सहु भागो जी ॥ कामी अंधो कछु न

।ण कुल ज्यूं किम होवे रे तूं वन्धव सामो जोय ॥
रित्र ओ चिंतामणि जैसो कीचड़ में मत खोय
नि.॥५॥ अंधग विष्णु रा पोतरा थे समुद्र विजयजी
पूत ॥ कुल सामो देखो नहीं थें काचा क्यूं दो सूत
[नि.॥६॥ भोजग विष्णु री पोतरी मैं उग्रसेन मुझ तात
दोनुं कुल दीपता अवे किऊं बिगाड़ो बात ॥मुनि.॥७॥
दन अग्नि वमे नहीं रे समुद्र न लोपे कार ॥ पश्चिम
ज उगै नहीं ज्यूं, कुलवन्त रो आचार ॥मुनि.॥८॥
होवे वैश्रमण देवता रे, नल कुंवर अनुसार ॥ जो
ने इन्द्र देवता सरिखो तोई वाछूं न लिगार ॥मुनि ॥९॥
यां रो धणी ग्वालियो रे तूं मत जाणे कोय ॥ ज्यूं
म रो धणी तूं नहीं ते दीदो संजम खोय ॥मुनि॥१०॥
ल चन्दन बावनो रे कीदो चावे राख ॥ चौथा सूं
वा थका कांई कुल ने लागे साख ॥मुनि.॥११॥ रतन
न कर राखियो खंडियां लागे खोड़ ॥ वले जोबन में
णिये कीजे यतन करोड़ ॥मुनि.॥ थोड़ा सुखां रे
रणे कंई, यूं थे बिगाड़ो बात ॥ पछे घणो पछतावणो
रे कछु न लगसी हाथ ॥मुनि.॥१३॥ मधु बिन्दु रे
रणे थें मूंडो दीधो मांड ॥ अल्प सुखां रे कारणे,
री होसी जग में भांड ॥मुनि ॥१४॥ वचन सती रा
भली ने, आयो ठिकाणे रहनेम ॥ शील संयम दोनुं
णां रहया कुसला खेम ॥मुनि.॥१५॥ हाथी ज्यूं रह-

ाल सागर जितनो संताप सु. ॥८॥हूँ॥ पुरुषां में
ाम हुवा रे लाल नेमिनाथ अणगार सु. ॥ चलिया
त ने दृढ कियो रे लाल ते भिरला संसार सु. ॥९॥हूं॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देसी—नीदडली रे)

थारो मोह पडल अलगो टलियो, घट में प्रगट्यो
रे ग्यान ॥रहनेमी॥ थैं विषय जाणी विष सारखी,
ारा वचन लिया थैं मान रह. ॥ थिर कर लीधी थांरी
ात्मा ॥टेर॥१॥ थारो चित्त आगयो ठाम रे रहनेमि ॥
ांरे शील री नींव सेठी हुई पलटाणा परणाम रे
. ॥थि.॥२॥ थैं मुगति मारग साभा मंडिया, सील
तन पर बैस रे र. ॥ पंथ लियो थें पाद्रो, छोडियो
रम कलेश रे र. ॥थि.॥३॥ जे मन मेले मोकलो ते
ो होवे फजीत रे र. ॥ जे मन जीते मानवी जाय जमारो
जीत रे र. ॥थि.॥४॥ थांरो मन जाय लागो मुगति
सुं थारे गुरु ग्यानी सुं प्रीत रे र. ॥ यश फैल्यों
थारो जगत में थैं आछी कीदी रीत रे र. ॥थि॥५॥
थैं तो त्याग वैराग वधारिया, थाने मिलियो
मित्र संतोष रे र. ॥ शील देसी सुख सास्ता,
थांरे मूंडा आगे मोक्ष रे र. ॥थि.॥६॥ थारे तेज
घणो तपस्या तणो, कीदो समता पूर रे र. क्षमा खड्ग तेग
री ओ थारा, अशुभ करम गया दूर रे र. ॥थि.॥७॥ तूं

नेमजी रे, मनावत राजुल नार ॥ अंकुश रूप कांई, आयो ठांम ते नार ॥मुनि.॥१६॥

॥ ढाल चौथी ॥

(देशी—अलबेलिया)

भला वचन ते भाखिया रे लाल, इम बोले रह सुगण साध्वीए महामती तू मूलगी रे लाल तार वाजेन्द्र ॥१॥ हूँ डिगियो थें थिर कियो रे लाल थें राखी मारी लाज सु. ॥ ते उपकार मोटो कियो लाल, जाणे रंक ने राज सु. ॥२॥हूँ॥ समुद्र मांही डू रे लाल थे मने लीधो झेल सु. ॥ हूँ रूप कूप देखि रे लाल थे शील दीप मे मेली सु. ॥३॥हुं॥ वचन में काडिया रे लाल, कुमति बोल्यो कुबोल सु सुध गई सब माहरी रे लाल, राख्यो थे मारं सु ॥४॥हूं॥ मैं मतिहीनो मानवी रे लाल, कुस कंगाल सु. ॥ पापी मैं पतित थइ गयो रे लाल राख्यो मारो माल सु ॥५॥हूँ.॥ तूं परमेश्वरी सा रे लाल, तूं भगवन्त वीतराग सु. ॥ तुं सतीयां म शिरोमणी रे लाल, शील बडो वेराग सु. ॥६ हूं भूंडो मुंडो छे मारो रे लाल, भूंडा काढिया बैन॥ सुन काया कंपाविया रे लाल निरखता डिगिया नैन सु. ॥७॥हूं.॥ मैं नारी परिसो नासह्यो रे लाल सु. मारे प्रगटियो मन मे पाप सु. ॥ मोटी सती ने मैं दियो

ल सागर जितनो संताप सु. ॥८॥हूँ॥ पुरुषां में
:हुवा रे लाल नेमिनाथ अणगार सु. ॥ चलिया
ने दृढ कियो रे लाल ते विरला संसार सु. ॥९॥हूं॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देसी—नीदडली रे)

थारो मोह पडल अलगो टलियो, घट में प्रगट्यो
ग्यान ॥रहनेमी॥ थैं विषय जाणी विष सारखी,
रा वचन लिया थें मान रह. ॥ थिर कर लीधी थांरी
:मा ॥टेर॥१॥ थारो चित्त आगयो ठाम रे रहनेमि ॥
शील री नींव सेठी हुई पलटाणा परणाम रे
॥थि.॥२॥ थैं मुगति मारग सामा संडिया, सील
न पर बैस रे र. ॥ पंथ लियो थें पाद्रो, छोडियो
म कलेश रे र. ॥थि.॥३॥ जे मन मेले मोकलो ते
होवे फजीत रे र. ॥ जे मन जीते मानवी जाय जमारो
त रे र. ॥थि.॥४॥ थांरो मन जाय लागो मुगति
थारे गुरु ग्यानी सुं प्रीत रे र. ॥ यश फैल्यों
रो जगत में थैं आछी कीदी रीत रे र. ॥थि ॥५॥
तो त्याग वैराग वधारिया, थाने मिलियो
त्रं संतोष रे र. ॥ शील देसी सुख सास्ता,
रे मूंडा आगे मोक्ष रे र. ॥थि.॥६॥ थारे तेज
णो तपस्या तणो, कीदो समता पूर रे र. क्षमा खड्ग तेग
ओ थारा, अशुभ करम गया दूर रे.र. ॥थि.॥७॥ तूं

नेमजी रे, महाव्रत राजुल नार ॥ अंकुश रूप नेत्रे करी कांई, आयो ठांव ते वार ॥मुनि.॥१६॥

॥ ढाल चौथी ॥

(देशी—अलबेलिया)

भला वचन ते भाखिया रे लाल, इम बोले रहनेम ॥ सुगण साध्वी महासती तूं मूलगी रे लाल तारा केणो वाजेव ॥१॥ हूँ डिगियो थें थिर कियो रे लाल ॥टेर॥ थें राखी मारी लाज सु. ॥ ते उपकार मोटो कियो रे लाल, जाणे रंक ने राज सु. ॥२॥हूँ॥ समुद्र मांही डूबतो रे लाल थे मने लीधो झेल सु. ॥ हुं रूप कूप देखि पड्यो रे लाल थे शील दीप मे मेली सु. ॥३॥हुँ॥ निखरा वचन में काडिया रे लाल, कुमति बोल्यो कुबोल सु ॥ सुध गई मन माहरी रे लाल, राख्यो थें मारो तोल सु ॥४॥हूं॥ में मतिहीनो मानवी रे लाल, कुमीनियो कंगाल सु. ॥ पापी में पतित थइ गयो रे लाल, थें राख्यो मारो माल सु ॥५॥हूं.॥ तूं परमेश्वरी सारखी रे लाल, तूं भगवन्त वीतराग सु ॥ तुं सतीयां मांही सिरोमणी रे लाल, शील घटो वैराग सु. ॥६ हूं.॥ भूंडो भूंडो छू मागो रे लाल, भूंडा काढिया बैन ॥ मन काया कंपाविया रे लाल निरखता डिगिया नैन सु. ॥७॥हूं॥ में नारी परिसो नामस्यो रे लाल सु. ॥ आणि्यो मन में पाप सु. ॥ मोटा सती ने में दियो

रे लाल सागर जितनो संताप सु. ॥८॥हूँ॥ पुरुषां में उत्तम हुवा रे लाल नेमिनाथ अणगार सु. ॥ चलिया चित्त ने दृढ कियो रे लाल ते बिरला संसार सु. ॥९॥हूं॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देसी—नीदडली रे)

थारो मोह पडल अलगो टलियो, घट में प्रगट्यो थारे ग्यान ॥रहनेमी॥ थें विषय जाणी विष सारखी, म्हारा वचन लिया थें मान रह. ॥ थिर कर लीधी थांरी आतमा ॥टेर॥१॥ थारो चित्त आगयो ठाम रे रहनेमि ॥ थांरे शील री नींव सेठी हुई पलटाणा परणाम रे र. ॥थि.॥२॥ थें मुगति मारग सामा मंडिया, सील रतन पर बैस रे र. ॥ पंथ लियो थें पाद्रो, छोडियो करम कलेश रे र. ॥थि ॥३॥ जे मन मेले मोकलो ते तो होवे फजीत रे र. ॥ जे मन जीते आनवी जाय जमारो जीत रे र. ॥थि.॥४॥ थांरो मन जाय लागो मुगति सूं थारे गुरु ग्यानी सुं प्रीत रे र. ॥ यश फैल्यों थारो जगत में थें आछी कीदी रीत रे र. ॥थि.॥५॥ थें तो त्याग वैराग वधारिया, थाने मिलियो मित्र संतोष रे र. ॥ शील देसी सुख सास्ता, थांरे मूंडा आगे मोक्ष रे र. ॥थि.॥६॥ थारे तेज घणो तपस्या तणो, कीदो समता पूर रे र. क्षमा खड्ग लेग री ओ थारा, अशुभ करम गया दूर रे र. ॥थि.॥७॥ तूं

जीत्यो स्वाद जिव्हा तणो फिर मन राख्यो थोब रे र.। खावण पीवण परहरणो नहीं थारे लालच लोभ रे र. ॥थि॥८॥ थें क्रोध भडीको नी कियो ने, मान दियो हेठो मेल रे र. ॥ थारो काया में माया नहीं लोभ पाछो दियो ठेल रे रहनेमि ॥थि.।९॥ काम हरण किया भलं रे तिणथी मिटे जंजाल र. ॥ राग द्वेष रह्यो नहीं थे करा बीज दिया बाल रे. ॥थि.॥१०॥ थें तो दया मारग उज वालियो, करमां सुं मांड्यो जंग रे र.॥ थें चलिया चि ने गेरियो तीने घणां मे रंग रे र. ॥थि.॥११॥ राजमती रहनेमजी दोनुं, पामे केवल ज्ञान रे र. ॥ मुगत गया दोनुं जणा, पाम्या अविचल ठाम रे र. ॥थि.॥१२॥ पांचमी ढाल सुहामणी, उत्तराध्ययन अनुसार रे र.॥ सूत्र मिलन्तो मेलियो ने थलें कियो विस्तार रे र. ॥थि॥ ॥१३॥ शील तणो पंच ढालियो सूत्रा में दीठो निचोड़ रे र. ॥ तिन अनुसार रिषी रायचन्द, कहे बेकर जोड़ रे र. ॥थ.॥१४॥

॥ श्री एषणा समिति की ढालें ॥

दोहा—धर्म मंगल उत्कृष्ट है, संयम तपस्या सोय।
ज्यांने सुर ना सेवे, सदा धर्म चित्त चढ़ाय ॥१॥
जिम मधुकर कुसुम थकी, दुःख नहीं देवे लगार।
इम ले दूग करे आत्मा निज ताणो अणगार ॥२॥

नेपजे मोटो अकाजजी॥सो.॥५॥कोधे भरयो कहे रे कृपण
तो नहीं देवे हमने आहारजी । होसे हानि तन धन जणनी
ााया नहीं आसी तुम्फ लारजी ॥सो.॥६॥ तुम दातार
उदार भलेरा और नहीं तुम तोलजी । थें नहीं देसो तो
कुण देशे मान चढावे इम बोलजी ॥सो.॥७॥ दूध दही की
ांछा मन में, मुख सु ं मांगे छाछजी । दाखे सीरादिक
ात्रा मांही, भाषा बदल कहे वाचजी ॥सो.॥८॥ आहार
ारस अधिको ते वेहरे लोभ जणावे दातारजी । दान
देयासु ं अधिको मिलसे लोभ दोष ए जहारजी
।सो.॥९॥ वहोरतां पेली अथवा पाछो वड़ाई दोष दातार
ी । अथवा दोष लगावे कोइक इणविध वहोरे आहारजी
।सो.॥१०॥ विद्या सिखावे आहार खुशामद, मंत्र जंत्र
करि लेहजी । चूर्ण वशी करण जड़ी बूटी, अहार काजे
करे जेहजी ॥सो.॥११॥ ज्योतिष शकुन शास्त्र प्रयुंजी,
ाखे सुख दुख जोगजी । सुपनादिक फल आहार लोभ
ी, मोहे इण विध लोकजी ॥१२॥ विधवा कारण
ार्भ गलावे, मूल करम ए दोषजी । आहार लोलुपी करम
करे इसा, पाप तणो करे पोषजी ॥सो.॥१३॥ ए साला
ोष जा लागे साधु था, संयम नो होय नाशजी ।
तिलोखरिख कहे दोष निवारयां लहिये अविचल
ासजी ।सो.॥१४॥

दोहा-गोचरी उत्पात तणा, दोष कया जगदीश।
जे शिवगामन उठिया, टाले बीसना बीस ॥१॥
गृहस्थी घरे गोचरी गया, दश वली टाले संत।
ते सुणजो आलस टलो, भाख्यो श्री भगवंत ॥२॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(देसी-भाव पूजा नित कीजिये)

सोला दोष उद्गमन ना, एताही उतपातोजी। और
कोई दूषण तणी शंका पड़े कोई वातोजी ॥१॥ तो मुनिवर
वेहरे नहीं ।टेर। जे अवसर का जाणोजी। आप तथ
दातारने शंका अभिप्राय पिछाणोजी ॥तो.॥२॥ हाथरेख
आली होवे, अंगुठादिक ठामोजी। चोटी पटा दाढी मूं
में, आलो रहे कोई जामोजी ॥तो॥३॥ सचित द्रव्य नी
धरयो, ऊपर द्रव्य अचितोजी। या अचित पर सचि
धरयो, गृहस्थी सो द्रव्य देतोजी ॥तो॥४॥ लूण ख
जल सचित सु ठाम जो खरड्यो होवेजी, तिणमें
लावे आहार ने एहवो भोजन जोवेजी ॥तो.॥५॥ दात
आंधो ने पांगलो, अथवा कंपन व्याधिजी। चालन
शकति नहीं, अथवा कपल उपाधीजी ॥तो.॥६॥ पूरो श
नहीं परगम्यो, अधकाचो रह्यो जेहोजी। होला उ
पुंखड़ा आद दे, गृहस्थी वेरावे तेवोजी ॥तो.॥७॥ त
को लींप्यो आंगणो, टपका पाड़तो लावेजी। एषणा
दश दोष ए श्री जिनवर फरमावेजी ॥तो॥८॥ए दश द

न जेह में वेहरावे दातारोजी, तिलोख रिख कहे तीजी
ढाल में, दोपण तेणो विचारोजो ॥तो.॥६॥

दोहा-दोप चयालीस टाल ने, आहार लावे अणगार ।
पंच मांडला ऊपरे दोप करे परिहार ॥ १ ॥
तं सुणजो सुगुना रखि, रसना वश कर राख ।
तो सुख लहिसो शाश्वता, सर्व सिधान्त की साख ।२।

॥ ढाल चौथी ॥

(देसी–पार्श्व जिनेश्वर रे स्वामी)

एह रिख मारग रे नाइ, स्वाद करणा करे आहार
माही । राजी गमतो रे आया, अणगमतो करे सोच
वाया ।.ए.। १॥ताकी ताकी रे जावे,ताजा ताजा मालज
लावे । नीरस ने चोरे नाही, घन रया कुंदो लाल सदाई
॥ए.॥२॥ जीमण देखी रे धावे, रसलंपट ने लाज न
आवे । मिलियां सुं शोभा रे करतो, अणमिलिया पर
निंदा उच्चरतो ।ए.॥३॥ भोंड ज्युं कहिये रे तेहने,
परभव खटको रंच न जेहने । दूवज आयो रे फीको,
(आया लागसी नीको ॥ए.॥४॥ दाल अलूणी रे
, लूण विना तो स्वाद न कांई । चटनी पापड़ रे
वे, नाना विध संजोग मिलावे ॥ए॥५॥ गमतो
ाहारंज आवे, दाबी चांपी ने अधिको खावे । जिनजी
ो आज्ञा रे भंगे, वली अशाता अति उपजत अंगे
।.ए.॥६॥ भोजन आयो रे भातो, देखी मन में अति

हरपातो । सनड़का लेइने रे खाने, चटपट चटपट मुंडा बजावे ॥ए.। ७॥ गरम मसालो रे भारी, बगारी धुंगारी रूड़ी तरकारी । चतुरणी नारी रे दीसे, उण घरे जावणो विसवा बीसे ॥ए.॥८॥ खाता प्रशंसा रे करतो, दिन उग्यांथी सांझ लग चरतो । चारित्र ने दाहज लागे अंगारा सम ओपमा सागे ॥ए.॥९॥ आहार नीरसो देखी चित्त में आरत आणे विशेखी । मिरचां लूणज नांई घर नारी ए नहीं छमकाई ।ए॥१०॥ बोले मुखसुं रे खोटो, पाड़े सजम धन को टोटो । कारण विन आहार खावे, पांचमो दोष ए स्वामी सुणावे ॥ए.। मंडल दूषण रे पांचां, तिलोख रिख कहे सुणजो सांची । उग-णीसे छत्तीस र साले, ग्राम सोनई दक्षिण सुविशाले ॥ए.॥१२॥ आहार ना दूषण रे जाणो, चोथी ढाल रसाल वखाणो । जे मुनि दूषण र सेवे, ते तो भवजल मांहीज रेवे ॥ए.॥१३॥ छिन्नु दूषण रे सारा टाले सो धन धन अणगारा । इण भव शोभा रे भारी, आगे अजर अमर सुख त्यारी । एह रिख मारग रे नांई ॥१४॥

॥ पांच समिति तीन गुप्ति को चौपाई ॥

दोहा-पांच समिति तीन गुपती आठों प्रवचन मात।
जो सुख चाचो साधुजी तो खप करो दिन रात ॥१॥

शुद्ध कहिजे साधु ने, जो पाले निरतिचार।
सावधान थई. सांभलो सुमति गुप्ति विस्तार ॥२॥

॥ ढाल पहलो ॥

(देसी–साधुजी नो मारग रे)

ज्ञान दर्शन चारित्र तणी काल ना तीन प्रकार, भविकजन । कुपंथ छोडो सुपथ आदरो, जयणा रो आगे अधिकार भविकजन ॥१॥ चोखे चित्त करने रे इरिया मारग शुद्ध जोयजो ॥टेर॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल भाव, वलि जयणा रा च्यार भेद रे भ० । द्रव्य थकी तो रे जीव छः काय ना, जोवो धरि उम्मेद रे ॥भ०॥चो०॥२॥ पृथ्वी पानी आग ने वलि चौथी वायु काय रे भ० । लीलण फूलण रे वरजे, वनस्पती से मोटा मुनिराय रे भ० ॥चो०॥३॥ लट गिंडोला ने कीडी कुंथवा, वलि चौरिन्द्री जात रे भ० । पाँचों इन्द्री रे पूरी पामियो, तेहनी टालो घात रे भ० ॥चो०॥४॥ क्षेत्र थकी तो रे हाथ साढ़ा तीन प्रमाण भ० । भाव थकी तो रे दर्शवाना वर्जता, ज्यु मुगति तणा सुख होय भ० ॥चो०॥५॥ ढोल नगारा रे कंशमा दलवती, सुरणाई मोरचंग भ० । भला शब्द रे माग सुणी, ज्हांसु चरे नहीं प्रसंग भ०॥चो०॥६॥ व्याव बधावे गावे गोरड़ी वलि सितारया रा गीत भ. । ये सुनी रे हियो हरखे नहीं, या साधु री रीत भ. ॥चो.॥७॥ भला चित्राम नहीं जोवणा, वलि स्त्री

रा रूप भ. । गेणा गांठा रे नम्न भारी गेरिया, न देखता धर चुप भ. ॥चो॥८॥ हाथी घोड़ा रथ ने पालकी, वलि नाटकीया रा नाच भ. । मार्ग मांही दीठा थका, राग धरी मत राच भ.॥चो.॥९॥गुलाब चंपा चमेली ने केवड़ी अगर अबीरा गंध भ. । कपूर कस्तुरी चोवा चंदन, ज्यांसु करे नहीं प्रतिबंध भ. ॥चो.॥१०॥ आगी सामी रे न करणी परियछणा, अणुपेहा धर्म विचार भ. । धर्म कथा नो उपदेश देणो नहीं, ए मारग अनगार भवि. ।चो।११। केई नाम धरावे रे साधु मोटका, चलता मारग मांय भ.। आडा अवला रे ऊंचे मुख जोवता, इरिया री खबर न कांय भ. ॥चो.॥१२॥ लडाई रे मारग में न करे, निंदा ने गुणग्राम भवि. । अवगुण इतना रे द्रव्ये ऊपजे, ते सुणजो अविराम भवि. ॥चो॥१३॥ ठोकर लागे रे पग पीड़ा हुवे, भागे कांटा ने सूल भवि. पांव भरिजे मिट्टादिक करी, मारग जावे भूल भवि. ।चो.।१४। वलि अकड़ ने रे हेटो पड़े भागे पग ने हाथ भवि.। दिठा विना रे खबर न कांई पड़े, दिन थोले जाने रात भवि. ॥चो.॥१५॥ जयणा करजो रे जीव छः कायनी, इरिया समिति निशान भवि. । प्रथम सेलाण रे शुद्ध साधु नों, लीजो चतुर पिछाण भवि. ॥चो.॥१६॥ समिति साचे मन सु पाले रे ते जति, ते करे भवना फंद भवि. । ऋषि रायचंद जोडि कहे, शासता पामे परमानन्द भवि. ॥चो.॥१७॥

।-समिति सुणो हिवे दूसरी, भाखु तिणरो नाम ।
शुद्ध मारग ने सेव ने तजो दूसरो काम ॥ १ ॥
भाषा समिति जाणिये, जिन शासन रो मूल ।
साधु भेष लेसु कियो घोलां पाड़ी धूल ॥ २ ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देसी—रे लाल महाबल कुंअर)

सत्य व्यवहार भाषा भली रे, बोलनी भाषा दोय साधु । असत्य ने मिश्र परिहरो, ज्युं दोष न लागे कोय साधु । निर्वद्य भाषा बोलजो ज्यां दूजी सुमति थाय साधु । मीठी मिश्री सारखी जाणो मेल्यो दूध साधु ।नि.।१। क्षेत्र थकी तो चालतां, करनी नहीं कोई बात साधु । ऊतावला नही बोलनो, गया पीछ पहर रात साधु ॥नि.॥२॥ मन अति उज्ज्वल राखणो दीनी सीखावण पाल साधु । भाव थकी भली तरह, आठ वाना देवो टाल साधु । नि.॥३॥ क्रोध मान माया वशे, लोभ हंसी भय जाण साधु । मुखे और विकथा वलि, एह त्याग्यां निर्वाण साधु ॥नि.॥४॥ कंई नाम धरावे साधु रो, बोले कड़वा बोल साधु । भेष लजावे लोक में, थारो बधे कठा सुं तोल साधु ॥नि.॥५॥ रीस वशे रेकारा दिये, बड़का बोले तेह साधु । तुरत तुंकारो काढ दे, थोड़ा में काढे छेह साधु ॥नि०॥६॥ पोते बखाण करे आपणा, कुण छे मुझ समान साधु । ते साधु स्याणो नहीं, ओलख्यो नहीं

( )

ज्ञान साधु ॥नि०॥७॥ [illegible] में समभ घणी, [illegible]
बोले [illegible] साधु । कदाचि घणी [illegible] उमो
साधु जाणे [illegible] साधु ॥नि०॥८॥ [illegible] [illegible]
कर, पोताने [illegible] साधु । [illegible] में [illegible] घणी,
बोलगा [illegible] साधु ॥नि०॥९॥ [illegible] में लाग्यो
रहे, साथापन्न भरपूर साधु । बोले [illegible] रीस करे,
विनय भक्ति सुं दूर साधु ॥नि०॥१०॥ गुरु सुं विण
आदर नहीं गुरु भायां सुं तोडे हेत साधु । आगो सु
आंट राखे घणी लड़ कांढे पादरं खेत साधु ॥नि०॥११॥
श्रावक सुं समाधि २ करे, वधारे घणो वाद साधु । ऊपर
आगे बोल आपणो, तिण मे किस्यो सवाद सा०
॥नि०॥१२॥ श्रावका सुं शुद्ध बोले नहीं, करित सरखा
वेण साधु । दुःखकारी दुर्भागियो, शत्रु कर दे सेण साधु
॥नि०॥१३॥ पर ने पीड़ा ऊपजे तिण भाषा लागे पाप
साधु । अवगुण अधिको ऊपजे, कह्यो जिनेश्वर आप
साधु ॥नि०॥१४॥ साधु साध्वी सेणा होवे, बोले ते अमृत
वाण साधु । करे नहीं कदाग्रहो, ए उत्तम रा सेलाण
साधु ॥नि.॥१५॥ चतुर ते बोले चुकसुं कदाचित निकल
जाय साधु । गौतम स्वामी आणंद खमी दियो, कह्यं
सातमां अंग माय साधु ॥नि.॥१६॥ घणा सूत्रा में दे
लो, जीभ ने करणी सदा वश साधु ॥ ऋषि रायचंद क
सांभला ज्ञान पणा रो रस साधु ॥नि.॥१७॥

दोहा—समिति सुणो हिवे तीसरी, एपणा करनी शुद्ध।
मुक्ति मार्ग ने उठिया, निर्मल ज्यांरी बुद्ध ॥१॥

ढाल तीसरी

(देसी—प्राणी ते पाप)

तीजी समिति एपणा आहार तणो अधिकारो ए। सांचे मन सु पालजो ज्यानें होवे मुक्ति मंभारो ॥१॥ साधु ने लेणो सूझतो द्रव्य क्षेत्र काल भावो ए। सूत्र भण्या साधु ते सही ज्यांरे नहीं संसार सु दावो ए सा.। ॥२॥ साधु ने अर्थे कियो ते आधा कर्मी आहारो ए। उद्देशी नहीं आदरे देवण ने कीधो त्यारो ए ॥सा.॥३॥ पुई कर्मी नी शीत मिले ते तो आहार अशुद्धो ए। मिश्र सु मन ना करे तेहनी निर्मल बुद्धो ए ॥सा.॥४॥ थाप राखे साधु ने अर्थे, पाहुणा करे आगा पाछा ए। अंधारा में करे चांदणो, साधु ने लेणा रो त्यागो ए ॥सा.॥५॥ मोल लेई ने दिये वली उधारो देवे आणी ए। बदलाई लावे भलो आपे सामो आणिये ॥सा. ६ छांदो किवाड खोल दे, ऊंची अव की ठामो ए। निर्बल पासे सु खोसी दे, एम सिरी आपे तामो ए ॥सा ॥७॥ आदण में ऊरे घणो दोप हुवा ए सोला ए। लगावे शुद्ध साधु ने गृहस्थी हुए जो मेला ए ॥सा.॥८॥

ढाल चौथी

(देसी—भाव धरी नित्य पालजो)

खुशामदी करे दातार नी और रमाड़े बाल। जाणे

दोष बयालीश एहवा टाले ते अणगार ॥ओं.॥१३॥ क्षेत्र थकी दोष दोय ते आधौं मत खांच। काल थकी तीन प्रहर रे, मांडला रा पांच ॥ओं.॥१४॥ रसनो लोलुपी थकी, मेले आहार जोग। अच्छो मिल्या हर्षित हुवे, भुन्डा मिल्या सु शोक ॥ओ.॥१५॥ टक टक जावे गोचरी लावे ताजा माल। नीरस ऊपर मन नहीं बन रयो कुन्दो लाल ॥ओ.॥१६॥ रसना नो गृद्धी थको, आरा टाणा में जाय। लघुता लागे लोग में निंदा धर्मनी थाय ॥ओ.॥१७॥ भारी आहार भली तरह खावे थांडा थांड। भांजे वाड भोलो थको हुवे लोक में भांड ॥ओ.॥१८॥ वेसवाद भारी गालिया भलो दियो बगार। तीवण ताजी तरकारियां, भलो दियो छमकार ॥ओ.॥१९॥ चावल दाल में घी घणो, सराह सराह ने खाय। चारित्र ने करे कोयलो, कह्यो सूत्र भगवती मांय ॥ओ.॥२०॥ नीरस आहार तेम तेम वलि, नहीं मिरच ने लूण। चारित्र ने कर धुंधलो खावे माथो धूण ॥ओ.॥२१॥ छ कारण आहार लेवे वलि छांडे छे प्रकार। हर्ष वेराजी न हुवे, चलावे संजम भार ॥ओ.॥२२॥ चारित्र नी महता है घणी, पहले ही अंग। दशवैकालिक देख लो ठाम ठाम सूत्र संग ॥ओ॥२३॥ वस्त्र पात्र ने शय्या, चौथो वलि आहार। साधु ते साधु भोगवे, ज्यांरी है बलिहार ॥ओ.॥२४॥ तीजी समिति आराधतां पावे शास्ता सुख। ऋषि रायचंद

इम कहे वीतरागे नहीं किणरी रूख ॥श्रो.॥२५॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देसी-हूं बलिहारी श्रो जादवा)

मंडल नो दोष पांचमो, कारण तिणरो नाम। आहार करे छः कारणे संयम राखण काम ॥१॥ धन्य मारग जिनराज नो, पाले जे मुनिराय। तिरण तारण गुरु जगत के सारे आतम काज ॥धन्य॥२॥ क्षुधा पीड़ा न खम सके, व्यावच करी न जाय। इरिया सूझ सब नहीं, संयम न सके निभाय ध. ॥३॥ कर पग चालत लड़थडे, धर्म चिंता न सके जाग। आहार करे इ कारणे भाखे इम वीतराग ॥ध.॥४॥ आहार नीहार विहार हैं, और देह स्वभाव। जिन खाखे तिम ही एहीज मुक्ति उपाय ॥ध.॥५॥ छवे कारण छे मांहि आयो अवसर देख। करी आलोयणा तन तजे, संथारो संलेख ॥ध.॥६॥ आतक जीव आशा तजो, उपसर्ग। ब्रह्मचय राखी न सके देह तजे देई धिग ॥ध. जीव दया पाली न सके, अथवा नहीं सहीजे, ममता उतरिया देहथी, करे तजवारी खप ॥ध. कायर ज्युं डरतो रहे, आयो मरण अतीव। सावद्य आदरे, वलि निकल जावे जीव ॥ध॥६॥ श्रावक श्राविका, भोला आर्या साध। मोह विन करसी किसुं, पड़ जा इसे प्रसाद ॥ध.॥१०॥ अ

ड णीखेवना, चोथी सुमति छे एह । उख्या शिवपद
धुजी, पालमी निश्चय देह ॥ध.॥११॥

॥ ढाल छठो ॥

(देसो–मुनीश्वर एक करू अरदास.)

साध ने आर्या तणा जी, उपकरण संख्या बत्तीस
ई एक मोटा कारणे जी, भाख्या छे जगदीश ॥१॥
ऋषीसर चोथी सुमति शुद्ध पाल ॥टेर॥ द्रव्य क्षेत्र काल
व सु रे दोषण सगला टाल ॥ऋ॥ २॥ तीन जातरा
तरा जी, तीन तेना रे थान । झोली गोछो मांडलो
ी, पड़ला तीन पिछान ॥ऋ॥३॥ पाय केसरी ने पुंज-
ीजी, पछेवडी तीन होय । चोलपटो रजहरणो मुंह-
तिजी, ए सतरे उपसर्ग जोय ॥ऋ॥४। ए कह्या दशमे
ंग में जी पांचवें संवर द्वार । चिलमिल ते डोरी
लीजी, परहेज करतां आहार ॥ऋ॥५। अंकुचण पट
ांचुओजी, जांघ्यो ने जोग पट । ए तीन उपकरण
आर्ज्या तणा जी, वृहत्कल्प में प्रकट ॥ऋ॥६॥ कांवल
करणि पूछणो जी ए कल्प सूत्र रे मांय । दशवैकालिक
ांचवें जी पात्रा ने लुणो थाय ॥ऋ॥७॥ हिवे दस
उपकरण कारणे जी दांडो छत्र ए दोय । मातरियो
लाठी पाटलीजी ए पाँचों अनुक्रम होय ॥ऋ॥८॥ चेल
ने चिलमिल कांवली जी, चर्म अने कोप । चर्म छेदन
दसमो कह्यो जी, कारणे एहनी दोप ॥ऋ॥९॥ सरवाले

ए साधु ना जी, उपकरण कह्या छत्तीस । पायदिक
हारियाजी, लेण रह्या जगदीश ॥श्र॥१०॥ द्रव्य
सहुविधि कही जी, क्षेत्र थकी सर्व जाग । कालए
टका वलिजी, दिन रो सोलमो भाग ॥श्र॥
पडिलेहिने पूंजनो जी तेहना भेद पचीस । उत्तरा
याईस में जी, नहीं होवे तो मत करो रीस ॥श्र॥
अखोड़ा पखोड़ा कह्या जी, नौं नौं एम अठार
पुरिमा एक दृष्टि कही जी, ए है पचीस प्रकार ॥श्र॥
दोष छः पडिलेहणाजी, भांगा कह्या वलि आठ ।
भांगो पडिलेहो जी, शेष सातु इम आठ ॥श्र॥
पाट बाजोट ने पाटियो जी, ज्यां पहली नजरा दे
पुंजी ने लेजे पीछे जी, दया विना छे भेष ॥श्र॥
वस्त्र पात्र आपणो जी, गृहस्थी ने घर मांय । मेलों
नहीं जावणो जी, दोष कह्यो जिनराज ॥श्र॥१६॥ धर
धरतो पूंज ने जी, पीछे सहु मेल । ज्युं जयणा ऊं
जीवनजी, अरिहंत वचन मत ठेल ॥श्र॥१७॥ दी
तेहना दोय काल ने जी, बीच नहीं करनी बा
उत्तराध्ययन छवीस में जी, ज्ञानी देखाड़ी बात ॥श्र॥१८
झटक पटक मत करो जी, जो नाम धरावो साध
अजयणा करतां थका जी, उल्टी, पड़े छे गाद ॥श्र॥१९
चोथी सुमति ने साचवें जी पावे शिव सुख पर्म ॥ कु
रायचंद इम कहे जी, समकित सहित छे धर्म । श्रीम

सुमति शुद्ध पाल ॥२०॥

—पाँचमी सुमति शुद्ध तरह, पाले जे अणगार।
इण भव आराधिक हुवे, पर भव में खेवे पार॥१॥
संसार सुं सन्मुख हुवे, पर भव सामी पूठ।
साधु भेष ले शुं कियो, जनम गमायो झूठ॥२॥

॥ढाल सातवीं॥

(देशी—आज पछी इण तीरथ रे लाल)

परठाण सुमति ए पांचमी जी, द्रव्य क्षेत्र काल
व। अर्थ न्यारा ओलखोजी, प्रणमी ने सत्गुरु पाय
१॥ सुमति साधु तणी पाँचमी जी, द्रव्य थी बोले
आठ। बड़ी नीति लघु नीति खेल छे जी नाक नो मल
निर्घाट ॥सु.॥२॥ शरीर नो मेल आहार वध्यो जी,
ऊपदी आठमा देह। दश जागा क्षेत्र थी वर्जणी जी
भलो मार्ग छे जेह ॥सु.॥३॥ प्रथम भांगे सहु परठवे
, न होवे प्राणी नी घात। भूमि होवे पोली नहीं
ी, मुके वेगो दिन ने रात ॥सु.॥४॥ घणी भूमि अति
दूरो नहीं जी, नहीं अति हूंकडो होय। ऊंदरा प्रमुख
ना विल विना जी, त्रस प्राणी बीज न होय ॥सु.५॥ रात
तथा दिन काल थी जी, भाव थी भांगा छे चार। तीन
भांगा तज परठवा जी, चोथो भांगो श्री कार ॥सु॥६॥
वस तो देख ले भूमि ने जी, पुंज ने परठे रात। चार
अंगुल परमाण थी जी न होवे जीवनी घात ॥सु.॥७॥

[illegible] जी, [illegible] के [illegible]
[illegible] जी, [illegible] ॥सु.॥८॥
[illegible] जी, [illegible]
नहीं [illegible] ॥सु.॥९॥
नित्य प्रति देखणी भूमिका जी, [illegible] कोई काम
तीन [illegible] जी, [illegible] नाम ॥सु॥
॥१०॥ पगलां देखी पूंज ने जी, कह्यो छे जिन देव।
'आवस्सही' कहने निकले जी, इन्द्र तणी आज्ञा ले
॥११॥ पुंज धरती ने परठणी जी उच्चार पासवण खेल
छीदा छीदा कर छांटना जी, मांहे मांहे लाय नहीं मे
॥सु.॥१२॥ वोसर वोसरे कर परठवें जी, निस्सही का
निषेध । गमणागमण पडिक्कमणो जी, इत्यादिक
भेद ॥सु.॥१३॥ एक एक साधु ने साध्वी जी, ओ
ऊजलो थाय । पर धरती पुंजे नहीं जी, ओघो मेलो
जाय ॥सु.॥१४॥ ऊंचो राखे हाथ में जी, फूटरो कीनो
धोय । देखण रो छे काम रो जी, पन जीव जतन न
होय ॥सा.॥१५॥ कांजो पिण काढे नहीं जी, युंही ति
फिर रयो भार । पेट भरण रो अरथ रो जी, करदे ज
खुवार ॥सा.॥१६॥ दिल मांय सुं नाठी दया जी, पुं
सुं नहीं प्रेम । खांच मले जो आप में जी, सहुने सि
मण एम ॥सु.॥१७॥ साधु साध्वी शुद्ध तरह जी, आ

न आनन्द । गुण लीजो ने अवगुण टालजो जी, ऋषि
ायचन्द भापे संबंध ॥सु.॥१८॥

ोहा-सुमति संबंध पुरो हुवो, सुणि मत थायजो दीन ।
जो तुमने तिरणो हुवे, तो पालो गुप्ति तीन ॥१॥
तीन गुप्ति वलि तिम कहुँ, जो पाले अणगार ।
आवागमन अलगा करे, पावे भव नो पार ॥२॥
मन वचन काया करी, पाले संयम भार ।
शील सरोवर झूलतां, धन धन ते अणगार ॥३॥

॥ ढाल आठमो ॥

(देसी—पूर्ववत्)

मन गुप्ति कही पहेलडी रे लाल, करडो तिणरो
ाम हो मुनिसर ॥१॥ तीन गुप्ति आराधिये रे लाल,
ाधु तणी छे रीत हो मु । थोडा दिनांरी जांजली रे
ाल, जासां जमारो जीत हो मु.॥ती.॥२॥ आरंभ सारंभ
हीं चिंतवे रे लाल, देखे रूपवंती नार हो मु. । भोग-
णी वंछे नहीं रे लाल, जिम वमियो आहार हो
॥ती.॥३॥ क्रोध ने माया ना करे रे लाल, लोभ ने
ोधो छोड़ हो मु. । धर्म शुक्ल ध्यावे सदा रे लाल,
ुगति जावण रो कोड हो मु. ॥ती.॥४॥ संजम सेती
ाहिरे रे लाल, बारे न काढे मन हो मु. । संकल्प
ेकल्प ना करे रे लाल, एहना साधु धन्य हो
. ॥ती.॥५॥ वचन गुप्ति वलि दूसरी रे लाल, विकथा

जीव जंत नहीं जिण जगा जी, थंडलो छे निर्दोष।
दृष्टि चोखी तरह देखजो जी, मिलसी तुम ने मोक्ष॥सु.॥८॥
प्रेम सु' धरती पू'जणी जी, लीलण फूलन टाल। जिहां
नहीं वनस्पति जी वलि कीडियां तणो नाल ॥सु.॥९॥
नित्य प्रति देखनी भूमिकाजी, रात रा पड़े कोई काम
तीन सौ सत्ताइस मांडलाजी, जेहनी जोवणी ताम ॥सु॥
॥१०॥ पगलो देणो पुंज ने जी, कह्यो छे जिन देव।
'आवस्सही' करने निकले जी, इन्द्र तणी आज्ञा लेव
॥११॥ पुंज धरती ने परठणा जी उच्चार पासवण खेल
छीदा छीदा करे छांटना जी, मांहे मांहे खाय नहीं भे
॥सु.॥१२॥ वोसरे वोसरे कर परठवेजी, निस्सही का
निपेध। गमणागमणं पडिक्कमणो जी, इत्यादिक ब
भेद ॥सु.॥१३॥ एक एक साधु न साध्वी जी, ओ
ऊजलो थाय। पर धरती पुंजे नहीं जी, ओघो मेलो
जाय ॥सु.॥१४॥ ऊंचो राखे हाथ में जी, फूटरो कीनो
धोय। देखण रो छे काम रो जी, पन जीव जतन न
होय ॥सा.॥१५॥ कांजो पिण काढे नहीं जी, युंही लि
फिर रयो भार। पेट भरण रो अरथ रो जी, करदे ज
खुवार ॥सा.॥१६॥ दिल मांय सु' नाठी दया जी, पुंज
सु' नहीं प्रेम। खांच मले जो आप में जी, सहुने सिखा
मण एम ॥सु.॥१७॥ साधु साध्वी शुद्ध तरह जी, आबजो

मन आनन्द । गुण लीजो ने अवगुण टालजो जी, ऋषि रायचन्द भाषे संवंध ॥सु.॥१८॥

दोहा-सुमति संवंध पुरो हुवो, सुणि मत थायजो दीन ।
जो तुमने तिरणो हुवे, तो पालो गुप्ति तीन ॥१॥
तीन गुप्ति वलि तिम कहुं, जो पाले अणगार ।
आवागमन अलगा करे, पावे भव नो पार ॥२॥
मन वचन काया करी, पाले संयम भार ।
शील सरोवर झूलतां, धन धन ते अणगार ॥३॥

॥ ढाल आठमो ॥

(देसी—पूर्ववत्)

मन गुप्ति कही पहेलडी रे लाल, करडो तिणरो काम हो मुनिसर ॥१॥ तीन गुप्ति आराधिये रे लाल, साधु तणी छे रीत हो मु । थोडा दिनांरी जांजली रे लाल, जासां जमारो जीत हो मु.॥ती.॥२॥ आरंभ सारंभ नहीं चिंतवे रे लाल, देखे रूपवंती नार हो मु । भोग-वणी वंछे नहीं रे लाल, जिम वमियो आहार हो मु.॥ती.॥३॥ क्रोध ने माया ना करे रे लाल, लोभ ने दीधो छोड़ हो मु. । धर्म शुक्ल ध्यावे सदा रे लाल, मुगति जावण रो कोड हो मु. ॥ती.॥४॥ संजम सेती बाहिरे रे लाल, बारे न काढे मन हो मु. । संकल्प विकल्प ना करे रे लाल, एहना साधु धन्य हो मु. ॥ती.॥५॥ वचन गुप्ति वलि दूसरी रे लाल, विकथा

शील हो मु. ॥ती.॥१४॥ पांच सुमति तीन गुप्ति रे लाल, प्रवचन पाले आठ ओ मु.। ते सुख पासी शाश्वता रे लाल, देवे कर्मा ने फार हो मु.॥ती.॥१५॥ उत्तराध्ययन चौवीस में रे लाल, सुमति गुप्ति अधिकार हो मु.। तिण अनुसारे इहा कह्यो रे लाल, वलि चीज विस्तार हो मु.॥ती.॥१६॥ अधिको ओछो जो कह्यो रे लाल, मिच्छामि दुक्कडं मोय हो मु.। पुज जयमलजी रे प्रसाद थी रे लाल ऋषि रायचंद कहे जोड़ हो मु.॥ती.॥१७॥ संवत अठारे इकसमो रे लाल, गढ जोधाणा मझार हो मु.। फागण वद एकम दिन रे लाल, सुणतां जय जय थाय हो मु.॥ती ॥१८॥ सम्पूर्ण ॥

॥ श्री आषाढ भूतिजी को चौढालियो ॥

दोहा-दर्शन परिसह बाइसमो, काठो तिणरो काम।
पाँचो दूषण परिहरी, सेठा राखो परिणाम ॥१॥
उत्तराध्ययन सूत्र मध्ये, चालियो आषाढ़ भूत।
पहला परिणाम पोच पडिया, पछे सेंठा रो पियासुत।२।

॥ ढाल पहली ॥

(देसी-तिण अवसर मुनिराय)

आषाढ़ भूति अणगार, बहुत त्यांरो परिवार, मन मोहन स्वामी, आचारनी चढती कला ए ॥१॥ आगम अरथ अपार, हेतु दृष्टान्त कर सार, मन० चेला भणाया चूंप सुं ए ॥२॥ एक शिष्य कियो जी संथार, गुरु बोल्या

तिग वार, गुण चेला म्हारा. जो तूं थाने देवता रे ॥३॥ थूं मने कहो जे आय, जेज मत करजे काय, गुण. गुरु सम जग में कोई नहीं रे ॥४॥ आगे तीन चेला कियो जी संथार, पिण कोई न पूछी म्हारी सार, गुण, किण ही आय कह्यो नहीं जी ॥५॥ थूं मारो चौथो चेलो होय, तो सम ओर न कोय, गुण में साज दियो संजम तणो ए ।६॥ थू मारो शिष्य सुविनीत, थारी मने पूरी प्रीत, सुण, तू अंतर भगतां मांयरो र ॥७॥ थूं मने मत जायजे भूल, करले वचन कबूल सुण. थू तो वेगो आवजे जी ।८॥ चेले ते छोड़ियो प्राण, जाय उपनो देव विमान, मन मोहन स्वामी, ऋद्धि वृद्धि पामी घणी ए ॥६ जग मग लग रही जोत, जाणे सूर्य उद्योत, मन. जाली झरोखा झिल रया ये ॥१०। थांवे पुतलियां रही थांव, महला मांय महराव, मन. रतन जड़त वर आंगनो ए ॥११॥ पाणा रतन जड़ाव ईस उपला सोना रा थाव, मन. रतन जड़त वाणु पच रंगनो ए ॥१२। तूंवे कचिया मेज, दीठां उपजे एद, मन. सुंवाली माखन सारखी ए ॥१३॥ चोंवो चदन सपेल अंतर रेला पेल, मन. गुलाब रा डाचा खुल रया ए ।।१४॥ कपड़ा माहिं गलतान, गेणा रो नहीं ज्ञान, मन, देखतां ने नेतर ठरे ए ॥१५॥ महल बिचे डोली वाग, चले छत्तीसो राग, मन. नाटक वत्तीस प्रकारना ए ॥१६॥ दीपति देवियां री देह, जाग्यो नवलो

स्नेह, मन, देवियां सु मोह्या देवता ए ॥१७। एक नाटक रे झनकार, वरस जावे दो हजार, मन, गुरु कह्यो याद आवे कठे ए ॥१८॥ लाग रह्या सुखां रा ठाठ, गुरु जोवे चेला री वाट, मन., देवता अजै आयो नहीं ए ॥१९॥ चेलो भिल रयो पूरो नेह, पड्यो गुरु ने संदेह मन, समकित में शंका पड़ी ए ॥२०॥ आ हुई पहली ढाल, ऋषि रायचंद भणी रसाल, मन., आगे निर्णय सांभलो ए ॥२१॥

दोहा-आषाढ भूति मन चिंतवे, नहीं स्वर्ग नहीं मोक्ष।
निश्चय में नहीं नारकी, सगली वातां फोक ॥१॥
चित वल्लभ चेलो हुंतो, मुझ सु पूरो प्रेम।
सूत्र वचन सांचा हुवे तो, पाछा न आवे केम ॥२॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देसी सहेलिया आम्बो मोरियो)

आषाढ़ भूति-मन चिंतवे, पाछो जासूं ओ मारे घर वास। सुन्दर सु सुख भोगवुं, घरे विलसूं हो हुं तो लील विलास ॥१॥ चरित्र सु चित चलि गयो, घरे चालिया हो, हुई श्रद्धा भ्रष्ट ॥ अरिहंत वचन उथापिया खाली हुवा हो, गमाई सम दृष्ट ॥२॥ तिण समय सिंहासन कांपियो, देव दीधो हो, तिहां अवधि ज्ञान ॥ गुरु ने घरे दीठा जावतां मारग में हो, मांडियो नाटक प्रधान ॥३॥ छिः महिना लग नाटक निरखियो हो, आचार्य हुवा मन

णाव ॥३॥ कर पात्रा ओवो खाक में, मूंडे मुहपत्ति ाल । इरिया मारग सूं सती, चाले भीणी चाल ॥४॥ ारग में साधु मिलिया, देख साध्वी तेम । लाज हीन ूं पापिणी, भेष लजावे केम ॥५॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(देशी—प्रक्षेप चोकसी)

सुण महासती इण लखणां सूं, जैन धर्म अति लाजै, ुण नही सती लोगा मां, निर्ग्रन्थणी तूं वाजे ॥१॥ तूं ाले चालां करती, इरिया समिति नही धरती, तूं लोक ाज सुं नही डरती ॥सुण.॥२॥ थैं नेणा काजल सारयो ें संयम गुण ने विसारियो, थें गुण विन भेप ज धारयो ।सु.। ३॥ थारे कंचन चुड़लो खड़के, मंजन सुं तन मन ़लके, विजली ज्युं तन भलके हो ॥सु.॥४॥ थूं जग में ाजे गुरुणी, थारी बिगड़ गई सब करणी, थूं लाजै ही उदर भरणी ॥सु.॥५॥

दोहा—कहे आरजका आप के, कपट घणो मन माय।
नै तो सरल स्वभाव सु., चौड़े दिया दिखाय ॥१॥
पण थें सुणो हो साधुजी, किसड़ा बोलों बोल।
पावरा हाथ सुं मेल ने, लाज हमारी खोल ॥२॥

॥ ढाल चौथी ॥

सुणो मुनिवरजी मत देखो पर दोप विचार ने बोलो,

मणो जिनराजनी [illegible] मन [illegible] किया की तोको ॥१॥ पर [illegible], [illegible] देवो पग पग में, पाप [illegible] ॥गु॥२॥ [illegible] नहीं जाने, निश दिन [illegible] गाने, पर ने कहे थूं क्यूं नहीं जाने ॥गु.॥३॥ थे [illegible] फेरो माला, थांरे पेट मांहि कुदाला, [illegible] मुनिवर का मुंह काला ॥गु॥४॥ आप पीते निग्रन्थ गाजो, [illegible] ज्यूं किम गाजो घरे जातां मन में नहीं लाजो ॥गु॥५॥ थें मनुष्य मार धन लावो, थें पेला मने समझावो, थांरा झोली पातरा देखावो ॥गु॥६॥ सुण बातां अचरज पाया, आ किम जाणे मारी माया, मुनि दौड़ ने आगे आया ॥गु.॥७॥

दोहा—अल्प दोष छे माहरो, क्यूं कहो स्वामी नाथ ॥
पग बलती देखो नहीं, थें कोधी बालकां री घात ॥१॥
इम सुणी आगे चाल्या, आ किम जाणे दोष ॥
रूप भाव कारां करि लीधा आडम्बर रोक ॥२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देशी– पूर्ववत)

संघाड़ो इकट्ठो कियो हो, किया नर नारियां का ठाठ ॥ सेहज वा घोड़ा घणा ए, सेल घणी गह-गहाट ॥ पूजजी आज पधारिया ॥ जूना श्रावक घणा समझणा ए, मुंडे मुंहपत्ति-बांध ॥ प्रदक्षिणा तो देवे करी ए भली प्रकार पग वांद ॥पू०॥२॥ मैं आपने

दन आवता ए, मारे पूरो पूज्यजी सुं राग ॥ आप
ो मारां गिल्वा ए, भला खुलिया मांरा भाग ॥पू०॥३॥
दर्शन कीना आपरा ए, म्हाने दूनो छे स्नेह ॥ मन
छित कारज फलिया ए, प्रसन्न हुई म्हांरी देह ॥पू०॥४॥
न दर्शन रे कारणे ए, वंदू वार हजार ॥ कृपा करने
ीजिये ए, सूजतो आहार ॥पू०॥५॥ गुरु कहे श्रावक
ामनो ए, थांरो भलो छे राग ॥ पिण आहार वेहरण
ो ए, हियड़ा में नहीं लाग ॥पू०॥६॥ घणी तो
न करो मती ए, म्हारा लेवा रा नहीं परिणाम ॥ थें
ाम वेहरावणो ए, जोरावरी रो नहीं काम ॥पू०॥७॥
लता श्रावक इम कहे ए, जोड़ी दोनु हाथ ॥ हठीला
ाम। थें घणा ए, बोनी किम छो पात ॥पू०॥८॥ दो
हर दिन ढल गयो ए, थांरे हुवो भिक्षा रो काल ॥
ीचड़ी वड़ियां भली ए, रोटी घोरत ने दाल ॥पू०॥९॥
ी दासां रो धोवण सूझतो ए, आ पूरन भरी ए परात ॥
न मोहे नो मीठी लीजिये ए, थोला मिसरी निवात
॥पू०॥१०॥ गुरु ने वेहराया विना ए, म्हाने नहीं जीमण
ो नेम ॥ वेगा खोलो पातरा ए थें झोली नहीं खोलो
म ॥पू०॥११॥ थें तो श्रावक घणा मांवठा ए, लीदो
ो मांने वेर ॥ किम जावन देवो नहीं ए, मैं मन रो हो
यो सेर ॥पू० ॥१२॥ पूज्य सुणो थें पादरी ए, मांडो
ातरा मन करो जेज ॥ मैं श्रावक छां आपरा ए,

[illegible] लागियो [illegible] ॥गु०॥१३॥ मैं आग [illegible] देखिया रे, [illegible] ॥ कहीं मैं नहीं देखी रे, देखी [illegible] ॥गु०॥१४॥

दोहा-[illegible] करता थका, [illegible] लोग ॥
भड़की ने गुरु [illegible], झोली लीनी मांग ॥१॥

॥ ढाल छठो ॥

([illegible])

आमी ने सामी खांचता, झोली खोलाई नीठ नीठ ॥गुरांजी॥हो॥ पातरा मांहने गेहणा पडिया, सब लोगा ने दिया दीठ ॥गुरां०॥१॥ गेहना कठा सुं लावियां, कहो थांरा मन री बात ॥गु०॥ भेष लजाया लोग में, कह्यो कठा लग जात ॥गु०॥२॥ इतरी वातां वीतां पछे, आया बाप ने मांय ॥गु०॥ गेहना तो गया मारा आगड़ा, मारा बालुड़ा देवो बताय ॥गु०॥३॥ मांय बाप कहे रोवता, सुत बिना गेहना साल ॥गु०॥ तड़पे छे मारो कालजो, ज्यां लग नहीं देखा लाल ॥गु०॥४॥ वेगा मांने बताय दो, जेज करो काय ॥गु०॥ छाने कठे थें छिपाविया, म्हारो जीव निकलियो जाय ॥गु०॥५॥ जीवता होवे तो जाय लेसां, मुवा होवे तो देवां दाग ॥गु०॥ गुरु आंख्या मीच अबोला रया, आवी लाज अथाह ॥गु०॥६॥ जो धरती फाटे पड़े, तो पैस जाऊं पाताल ॥गु०॥ मोटो अकारज मैं कियो,

मारिया नानड़ा वाल ॥गु०॥७॥ अरिहंत सिद्ध साधु धरम नो, चित धरिया सरणा चार ।.गु० ॥ अबकी आन पड़ी छे माथे, म्हाने सरणा रो आधार ॥गु०॥८॥ देवता चरित्र अलगो कियो रे, आई आंख्यां में लाज ॥ गु०॥ लाज रही तो मारग आवसी लाज सु सुधरे काज ।गु०।६।

दोहा-वाहरू लागा वाहरू, गुरु हुवा भय भ्रान्त ॥
देवां ज्ञान में देखियो, आय मिल्यो सब तंत ॥१॥
सरव माया समेट ने, चेला नो रूप वणाय ॥
मथेण वंदना गुरु सु कही ऊभो आगे आय ॥२॥
तुम मारग में आवतां, कई देख्यो महाराज ॥
पलक एक नाटक देखियो, तब चेलो बोल्यो वाय ।३।
पलक कहो तुम एक ही, पण निरख्यो छै: मास ॥
देखो सूरज मांडलो, जोवो ये विभास ॥४॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(देसी—नींदडली ए)

रूप किया देवता तणो रे लाल, कियों ऋद्धि तणो विस्तार हो ॥गुरांजी हों॥ हूं चित्त वलभ चेलो पूज रो रे लाल उपनो स्वर्ग मंझार हो ॥१०॥१॥ राखो अरिहंत वचना री आस्था रे लाल, टालो समकित दोप हो ।गु०। स्वर्ग नरक निश्चय जाण जो रे लाल, कम खपाय जाणो मोक्ष हो ॥गु०॥२॥ हूं संजम पाली

भाणा री माखी उड़ावे ॥७॥ इतरा में कूको पड़ियो, थावरचा काने सुणियो, सांभल ये ए माता माहरी, ये किम रोवे नरनारी ॥८॥ इण पर तो बोली माया, सांभल रे मारा जाया, बेटो जायो सो मुवो, तिण कारण रुदन हुवो ॥६॥ माता इम वात सुणाई, थावरचा ने व्यथा थाई, मां बाप अरड़ावे रोवे बालक ना मुख ने जोवे ॥१०॥ मां ये क्रूर शब्द अरड़ावे मां सु सुन्यो नहीं जावे, जन्म ने पुत्र किम मुवो, अचरज मुझ ने हुवो ॥११

दोहा-उग्यो सूरज आथमे, फूले सो कुमलाय
जनमे सो मरसी सही, चिंता इण में क्युं थाय ॥१
इण संसार में आ बड़ो, जनम मरण रो भोड़
जनम मरण ज्यां छे नहीं, इसडी नहीं कोई ठोड़ ॥
हाथ रो कवो हाथ में, और मुंह रो है मुंह मांय
माताजी हूं मरूं नहीं, इसडी ठौर वताय ॥
सुख भोगो संसार ना, और करो आनन्द
जनम मरण ने मेटसी, यादव नेम जिणंद ॥४॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देसी-पूर्ववत्)

माता ओ संसार असारो, मैं तो लेऊं संजम भारो, संसार नी माया झूठी, सब ने एक दिन जाणो उठी ॥१॥ संसार में मोटी खोड़, जनम मरण रो अठे भोड़, किम

रा मायने किण रा बापो, जीव बांधे छे बहुला पापो ॥२॥ थावरचा लीधो धार, कीधो नेमजी त्यांथी विहार, स्वामी सुखे द्वारका आया, सगला रे मन सुहाया ॥३॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(देसी–शांति जिनेश्वर सोलमा रे लाल)

नेम जिणंद समोसरिया रे, द्वारका नगर मंझार रे भविक जन ॥ नर नारी तिहां वांदतां रे, भव भव नो निस्तार रे ॥भ०॥१॥ प्रभुजी तिहां पधारिया रे, सहस्राम्र नामे बाग रे ।।भ०॥ तरण तारण जग प्रगटिया रे, भव्य जीवां रे भाग ॥भ०॥२॥ सहस्त्र अठारे साधुजी रे, आर्ज्यां चालीस हजार रे ॥भ०॥ ज्या में आण मनावता रे, शासन ना सिरदार रे । भ०॥३॥ कोई ने दिन पन्द्रह हुवा रे लाल, कोई ने महीनो एक रे ॥भ०॥ कोई ने वरस दिवस हुवा रे लाल, कोई ने बरस अनेक रे ॥भ०॥४॥ कोई लेवे मुनिवर वांचणी रे लाल, कोइ एक सरसा बोल रे ॥भ०॥ समझावे भवि जीव ने रे लाल, ज्ञान चक्षु दे खोल रे ॥भ०॥५॥ नेमजिनंद आया सुणी रे लाल, नर नारी हर्षित थाय रे ॥भ०॥ तेमना दरसन कीदा बिना रे लाल, चण लाखीणो जाय रे ॥भ०॥६॥ कोई कहे प्रश्न पूछसां रे लाल, कोई कहे सुनसां वखाण हो ॥भ०॥ कोई कहे सेवा करसां रे लाल, करसां जनम प्रमाण रे ॥भ०॥७॥ एम कहे श्री कृष्ण ने रे लाल,

वन पालक कर जोड़ रे म० । दीधी कृष्ण वधावनी रे लाल सोनैयां बारा क्रोड़ रे म० ॥८॥ केई वेठा हवेलियां रे लाल केई चढ़िया गजराज रे म० । केई सुख पाले पालकी रे लाल केई एक डोले साज रे लाल म० ॥६॥ चतुरंगी सेना सजी रे लाल, घणो साथे गहगहाट रे लाल म० । केई बोले विरदावली रे लाल भोजक चारण भाट रे म० ॥१०। छत्र चॅवर देखी करि रे लाल सब कोई हर्षित थायरे ॥म०॥ नृप तिहां पर आविया रे लाल, वांदिया श्री जिनराज रे ॥११॥

दोहा-तिण काले ने तिण समये, द्वारका नगर मझार।
नेम जिणंद समोसरिया, सहस्रवन बाग मझार॥१
थावरचा तिण अवसरे, बैठो महल मझार
लोक घणा ने देख ने, मन मे करे विचार ॥२

॥ ढाल चौथी ॥

(देशी—जिलनो रे)

लोग सब मिल कठे जावे, सेवक ने पास बुलाया
कहै सेवक सुण राया, अठे नेम जिनेश्वर आया ॥१
बात नेम आगम री ताजी, सुण थावरचा हुओ राजी
पुण्य जोग प्रभु अठे आया, वाँद सफल करूं म्हारी
काया ॥२॥ म्हारा मनरा मनोरथ फलिया, म्हारा
भव ना दुख टलिया, हम हरषे धरि सिर पाग, [illegible]
[illegible] नव रंग बाग ॥३॥ उत्तरासन

न्या किलंगो तुर्रा, कडा हाथ कानो में मोती, जाणे
ागी जगमग ज्योति ॥४॥ दसों अंगुलियां मुंदरी
ले डोरो, मन मे नेम वंदन रो कोड़ो, देख चवर छत्र
र प्रेम आण ने वांदिया छे श्री नेम ॥५॥ भवि जीवां
। काटन क्लेश, दीधो स्वामी इसो उपदेश, दुख जन्म
ारण रा भारी, बांधे कर्म तो आगे त्यारी ॥६॥ हँस हँस
। वांधिया भूठे, तिका रोणा सुं भी नहीं छूटे, आवे
ाल भपेटा लेतो, वले वत्र नगारा देतो ॥७॥ सुणी
क चित्त प्रभु नी वाणी, होती मन में चिछुडे जाणी,
र जोड़ ने कहे सुणो स्वामी, दीक्षा लेस्यूं अंतर-
ामी ॥८॥

दोहा-जिम सुख थावे तिम करो, इम बोले श्री नेम,
ढील लगार करो मती, जो चाहो कुशल ने क्षेम॥१॥
प्रभु ने वंदन कर चालिया, कीधो महल प्रवेश,
माता पासे जायने मांगे इम आदेश ॥२॥

॥ ढाल पांचवी ॥

(देसी-तू मुझ प्यारो रे)

आज्ञा दो मुझ मातजी हो, माता ओ संसार असार ॥ काल आण घेरियां थका हो माता कोई न राखण हार ॥ ओ माता । आज्ञा दीजै वेग । टेर ॥ वाणी अपूर्व सांभली ए माता, पडी मूरछागत थाय ॥ सावधान बैठी करी ओ माता भालां सीतल

घटाऊ पागणो रे० ॥९॥ इतर कुटुम्ब परिवार फंसिगो माया जाल सुण० । भँवरो जिम कमल परे रे० ॥१०॥ सांभल श्रीजिन वाण लागो वैराग नो वाण सुण० । धन्नो कहे कर जोड़ ने रे ॥११॥ में लेखूं संयम भार, छोड़ बत्तीसे नार सुण० । आऊं आज्ञा लेयने रे० ॥१२॥ भाखे श्री जिणराज जिम थाने सुख थाय सुण० । जेज मत करो इण कार्य में रे०॥१३॥ वांदिया दीन दयाल आ थ दूजी ढाल सुण० । माता पासे आविया रे० ॥१४॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(देसी-राणपुरो रळियामणो रे)

घर आई माता ने इम कहे रे लाल हुँ लेसुं संयम भार सुणो माता जी हो आज्ञा दीजे मो भणी रे लाल ढील न करो लिगार सु० कृपा करीने दीजे आज्ञा लाल ॥१॥ एह वचन श्रवणे सुणी रे लाल मूर्छागत थ मात हो सु । सावचेत हुई चिंतवे रे लाल आज्ञा दीधी जाय सुत सांभलो रे चारित्र छे बहु दोहिलो रे लाल॥२॥ । पांच महाव्रत पालना रे लाल करणो माथा रो लोच सुत. । बावीस परिसह जीतना रे लाल किंचित न करणो सोच सुत० ॥३॥ खड्ग धारा पे चालणो रे लाल करणो उग्र विहार सुत० । मोह माया सहु छोड ने रे लाल शील पालनो नव वाड़ रे सुत.॥४॥ औषध सावद्य ना करे रे लाल मारग दुष्कर घोर सु०। हरगिज थासुं ना पले रे लाल मत

कर कूडी झोड़ सु० ॥५॥ पुत्र एकाएक मांरो रे लाल आज्ञा देऊँ किण रीत सुत० । ए कंचन ए कामिनी रे लाल सुख भोगवो धर प्रीत सुत ॥६॥ कुंवर कहे माता सुणो रे लाल गयो हुं नरक निगोद रे मांय सुणो० । दुख अनंता मैं सह्या रे लाल कयो कठा लग जाय सुण० ॥७॥ हरगिज माने वरजो मती रे लाल हुँ छोड़ सुं माया जाल सु० । माता वरजती थाकी गई रे लाल पूरी थई तीजी ढाल रे ॥८॥

॥ ढाल चौथो ॥

(देसी-बिछिया री)

हाँ रे लाल महाबल कुंवर तणी रे, माताजी आज्ञा दीनी रे ला. । कृष्ण थावरचा नी परे मोटे मंडाने दीक्षा लीधी रे लाल ॥१॥ गेणा गांठा उतारिया, माता लीना खोला ने मंझार रे लाल । ढलक ढलक आँसू पड़े, जाणे टूट्यो मोत्यां रो हार रे लाल वि० ॥२॥ माता प्रभु ने दीनी भोलावणी बेटा ने देवे सीख रे लाल । क्रिया में कसर राखे मती गुरु आज्ञा में रहीजे ठीक रे लाल वि० ॥३॥ माता चरण वांदी गई निज स्थान पे, धन्नोजी हुआ अणगार रे लाल । नित सुमति गुप्ति नी खप करे किरिया पाले अपार रे लाल वि. ॥४॥ चरण वांदी जिनराज ना दीक्षा लीधी तिण वार रे लाल । बेले बेले करूं पारणो जावजीव ने पाडूँ भिन्न रे लाल वि० ॥

मुनिश्वर तप तपे ॥१॥ सूरत जाय लागी मुखो रे। काया तो खंखर डरावनी सूखो सरप नो खोखो रे धन्ना० ॥२॥ मूंग उड़द कोमल फली, सूखो तेनी फलियां रे। तेरी धन्ना मुनिराज नी सूखी पग नी अंगुलियां रे ध० ॥३॥ पंखी तो काग ने मोरिया तेनी सुखी पगनी जंघा रे। गोडो तो गांठ वनस्पति पिण परिणाम चगा रे ध० ।४॥ साथल पिगु कूपल सारखी कडिया उंट अरध पगो रे। उदर तो जाणे सूखी दिवड़ी पेट ऊंडो अथागो रे ध० ॥५। आरिसा उपरा ऊपर मेलिया, जेवी पासलियां जाणो रे। हाथ कड़ासन जेड्वा पासली तारली पिछाणो रे ध० ॥६॥ छाती तो जाणे दुपडो वींजणो वांस सुरी खेजड़ फलियां रे हाथ नो पंजो वनरो पानडो, कुलथ फली सूखी उंगलियां रे ध० ॥७॥ गलो तो सूखो करवा जेवो दाढ़ी आंबा कुली जानो रे। सूखी जलोख होठ जेवा जिह्वा सूखी साग पानो रे ध० ॥८॥ नाक बिजोरा नी कातली आंख्यां छिद्र दो वीणा रे। अथवा तारो परभातियो, कान कांदा सु झीणा रे ध० ॥९॥ सूखो कोलो अथवा तूम्बड़ो जेवो सूखो रिषि नो शीशो रे। काकड़ा भूत काया कसी सूखा बोल इकवीसो रे ध० ।१०॥ उदर कान होठ जीभ में या में साम नसा जालो रे। सतरे बोला में गालिया हाडका, डील दिसै महा विकरालो

रे ध० ॥११॥ [illegible] पाकदो, [illegible]
[illegible] रे । [illegible]
[illegible] रे ध० ॥१२॥ [illegible]
सांकली, जिम [illegible] रे । आंकिया
[illegible] जमी, [illegible] आडो रे ध० ॥१३॥
ढाल भणी [illegible], मुनि काया [illegible] कली रे ।
परता नहीं रागी ढीलशी, सुगत सुगति में वसी रे
ध० ॥१४॥

॥ ढाल छठो ॥

(देशी—प्रत्येक बुद्ध की)

नगरी राजगृही समवसरिया हो ॥ जिणंद राय
करता उग्र विहार हो, परसदा आई वंदवा ॥ जिणंद
श्रेणिकराय आयो सपरिवार हो ॥१॥ धरम कथा जिन
कही ॥श्रेनिक राय॥ वंदे शीस नमाय दुःख हर कर
निर्जरा ॥जिणंद राय॥ चवदे सहस्र में कुण थाय हो
वीर जिणंद इम उच्चरे ॥ श्रेनिक राय ॥ मुनिवर चौदह
हजार हो मारो धन्नो नाम अणगार हो । ३॥ श्रेणिक
कहे कारण किमो ॥ जिणंदराय ॥ कह तो लारलो सहु
विस्तार हो वीर वांदी धन्नाजी तणा ॥ श्रेनिक राय ॥
चरण वंदे वारंवार हो ॥४ । सुकृत नर भव थें लियो धन
रिषि तुम अवतार हो स्वयं वीर वखानिया दुष्कर करणी
वतार हो ॥५॥ नृपति गुण कीर्तन करी वांदिया [illegible]

जेनराय हो। राजा गयो निज स्थान पे मुनिवर ना गुण गाय हो ॥६॥ ढाल छठी पूरी थयी, विराज्या राज गृह बाग हो। धन्नोजी जाग्या रातरा जाग्या बहु वैराग्य हो ॥७॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(देसी—हु बलिहारी हो जादवा)

धन्नोजी रिख मन चिंतवे, तप करतां हम तणी त्रूटी काय के।। वीर जिणंद ने पूछ ने आज्ञा ले संथारो ठाय के। धन करणी मुनिराज री ॥टेर॥१॥ प्रह उगे वांदया श्री वीर ने, श्री मुख आज्ञा दी फुरमाय के। विमल गिरी थेवरां संगे चाल्या समस्त साधु खमाय के ॥धन०॥२। आयो संथारो एक मास नो, आया प्रभुजी रा गोढ के। भंडोपकरण सब सौंपने गौतम पूछे बे कर जोड़ के ॥धन०॥३॥ तप तप्या मुनिवर आकरा, कहा स्वामी कहां जाय वासो लीदो के। सागर तैतीस रो आउखो, नव महीना में स्वारथ सिद्धि लीदो के ॥धन०॥४॥ महाविदेह क्षेत्र में सिंझसे, विस्तार नवमां अंग माय के। विलसपुर गुण गाविया पूज्य रामचन्द्र प्रसाद के ॥धन०॥५॥ संवत अठारह सौ उनसठे वैसाख वद पक्ष मांय के। आस करण गुण गाविया, भवियण सुनो चित लाय के ॥धन०॥६॥ सत ढालियो पूर्ण हुवो,

मुनिवर कहे जिम सुख हुवे, तिम करो तत्काल॥
धर्म ढील न कीजिये, भाखी ए दीनदयाल ॥३॥
मुनि वंदी घर आविया, खंदक नाम कुमार॥
किण विध मांगे आज्ञा ते सुणजो अधिकार ॥४॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देसी-ख्याल की)

कुंवर कहे कर जोड़ ने स कांई यह संसार असार॥ धन संपत सब कारमी स कांई शंका नहीं लगार हो॥ माताजी मोरा, आज्ञा देवो तो संजम आदरुं ॥१॥ वचन सुणी इम पुत्र का स कांई मुर्च्छाणी तत्काल॥ सुद्ध बुद्ध सगली वीसरी स कांई, मोह की मोटी जाल हो ॥माता०॥२॥ शीतल नीर समीर प्रभावे, कांई थयी हुशियार ॥ करुणा स्वरे नयनां जल वरसे, ज्यं श्रावण जलधार हो ॥माता०॥३॥ तू मुझ नंद एकाकी कुल में जीवन प्राण आधार ॥ उंबर फूल सम दरश थारो, मत ले संजम भार हो ॥ सुण नन्द हमारा, जोबन ढलियां सु लीजे जोग ने ॥४॥ विनय करी ने कुंवर प्रजंपे, काल व्याल विकराल ॥ हरि हर इन्द्र चन्द्र न छोड़े, छिन में करे बेहाल हो ॥माता०॥५॥ जिण हेत होय काल रिपु से, भागी जाणे की पहोंच। अथ जाणे हुँ कदी न मरशुं, उण के तो नहीं सोच ॥माता०॥६॥ राज लच्छमी संपत बहुली, हय गय

न्त पूर ॥ ए भोगव फिर संजम लीजे, मान केणी रुर हो सुन०॥७॥ धन दौलत और माल खजाना ज्युं ंजली चमकार ॥ चोर अग्नि स्वजन भय धन में, रकगति दातार हो ॥माता०॥८॥ कोमल काया कंचन रणी, तरुणी सुं सुख भोग ॥ वृद्धपणे जब आवे तन नं, तब आदरजे जोग हो ॥सुन०॥६॥ काया माया बादल छाया, मल मूत्र भंडार ॥ रोग शोक नो भाजण इण में तप जप संयम सार हो ॥माता०॥१०॥ भोग हलाहल जहर सुं ज्यादा फल किंपाक समान ॥ अल्प सुख सुं दुख अनंता शहद छुरी जिम जाण हो ॥माता०॥११॥ रतन पिंजरे शुक नहीं राजी तिम हुँ इण संसार ॥ जनम मरण, सुख मोहनो बंधन कहतां न आवे पार हो ॥माता०॥१२॥ मोह नाता वश माता बोले, तूं वत्स अति सुकुमाल ॥ पांच महाव्रत मेरु समाना, तोड़नां मोह जंजाल हो ॥ सुण पुत्र पियारा संजम लेणोजी दुक्कर कार छे ॥१३॥

पग अणवाणे चालणो स कांई लोचन सोच अपार । ाईस परिषह जीतणा स कांई चलणो खांडा धार । ॥सु०॥१४॥ घर घर भिक्षा मांगणी स कांई, दोष यालीस टाल ॥ कोइक देवे उलट परिणामे कोईक देवे ाल हो ॥सु०॥१५॥ वाय भरेवो कोथलो स कांई

[illegible] ॥ [illegible]
दीक्षा [illegible] ॥ग०॥१६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
संजम, [illegible] ॥ग०॥१७॥ निर्लोभ [illegible]
[illegible] मात पिता [illegible]
समझातां, [illegible] ॥ग०॥१८॥

दोहा—क्रिया महोत्सव दीक्षा तणो, सूत्रमांहि विस्तार ॥

पांच महाव्रत आदर्या, भए खंदक अणगार ।१॥
मात पिता मोहनी वशे, पंचसया परिवार ॥
राख्या रक्षा कारणे, सुभट बड़ा होशियार ।२॥
जिहां जिहां मुनिवर संचरे, तिहां तिहां रहे सो लार ॥
नृप चुकावे नौकरी जाणे नहीं अणगार ॥३॥

॥ ढाल तीजी ॥

(देसी-चंपक वृक्ष नीचे मुनिवर विराजे)

खंदक मुनि गुण वंदक जग मे, पंच महाव्रत पा
रे लो । पांच समिति तीन गुप्ति आराधे, पंच प्रमा
मद टाले रे लो ॥खं०॥१ । छः काया प्रतिपाल दयानि
पांच क्रिया परिहारी रे लो । सतरा भेदे संजम पा
द्वादश तपस्या धारी रे लो ॥खं.॥२॥ चाकर ठाकर
सज्जन, सम जाणे रिखराया रे लो । क्षमा सागर
रतनाकर, त्यागी जगत की माया रे लो ॥खं.॥३॥
परिषह शूर परिणामे, चार कषाय निवारी रे लो । म

,।स तप करत निरंतर, शम दम उपशम धारी रे लो
।खं॥४॥ ज्ञान अचल मुनि ध्यान में शूरा, एकाकी
पड़िमा विहारी रे लो । ग्राम नगर पुर पाटण विचरे,
तारे बहु नर नारी रे लो ।ख।५॥ एकदा मासखमण
तप करतां कुंती नगरी में आया रे लो ॥ सुभट विचारे
इहां मुनिवरना, बहेन बनेवी राया र लो ॥खं.॥६॥
इहां डर कारण नहीं जरा भर,उतरिया बाग मझारे रे लो ।
लागा सहुभोजन करवाने, ते मुनिवर तिण वारो रे लो
॥खं.॥७॥ प्रथम पहर में सूत्र चितारे, दूजी मे ध्यान ज
ठाया रे लो ॥ त्रीजी पहेरसी पारणा,कारण मुनि गोचरिये
सिधाया रे लो ।खं०॥८॥ कोमल काया पग अणुवाणे,
परसेवे भीज्यो शरीरा रे लो । खड़ खड़ बाजे हाड मुनि
ना, चाल चले अति धीरो रे लो ।ख॥९॥ चल आवे
नृप महलनी पासे राजाजी तिण वारो रे लो । राणी
संघाते चोपड़ खेले, हर्ष वदन हुसियारो रे लो ॥खं॥१०॥
राणी की दृष्टि पड़ी रिषि ऊपर, मन में ताम विचारी
रे लो । मुझ बंधव पण संजम लीनो, सहतो होसी दुःख
भारी रे लो ॥ख।११॥ ऊणारत आणी अति राणी,
आंसू नत्तखण आया रे लो । नृप पूछे सो कांइ न बोली
नीचे देख्यो तब राया रे लो ॥ख॥१२॥ मुनिवर देखा
वैर ज जाग्यो, अधिको क्रोध भराणो रे लो । ओ मोडो
इण पंथ क्युं आव्यो,चाकर सुं कहवाणो रे लो॥खं.॥१३॥

लगाई पग लगे रे, छोली मुनिवर खाल ॥ नाके सल
लाया नहीं भाई, मेटी क्रोध की जाल रे ॥धन०॥५॥
उजली वेदना ऊपनी रे, कहेतां न आवे पार ॥ के दुःख
जाणे आतमा भाई के जाणे किरतार रे ॥धन०॥६॥
मुनिवर मन में चिंतवे रे, उदे थया मुझ कर्म ॥ सम
परिणाम राख्यां थका भाई, निपजसी आत्म धर्म रे
॥ध०॥७॥ अज्ञान पणे, अति हरख सुं रे बांध्या निका-
चित पाप । भुगतियां विन छूटे नहीं भाई, भोगवे आपो
आप रे ॥ध०॥८॥ तुं पुद्गल सुं भिन्न छे रे, अजर अमर
अविकार ॥ नाश नहीं त्रिहुँ काल में भाई, मन मांही
साहस धार रे ॥ध०॥९॥ थिर परिणामे मुनिवरों रे,
ध्यायो शुक्ल ज ध्यान ॥ अंतगड़ केवल पायने भाई,
पाया पद निर्वाण रे ॥ध०॥१०॥ धन जननी जिण
जनमिया रे, धन धन ते अणगार । पाछे देही पडी भू परे
भाई पेली लह्यो भव पार रे ॥ध०॥११॥ हवे बीतक
सुणो पाछलुं रे सुभट जे मुनिवर लार ॥ देख्या नहीं
रिषि नयण सुं भाई शोधे नगर मझार रे ॥ध०॥१२॥
तिण समे दासी रावली रे, ओलखिया असवार ॥ पूछ्युं
कारण तिणे दाख्युं भाई, राणी थी कह्या समाचार रे
॥ध०॥१३॥ राणी कहे निज कंत सुं रे सुण राजा
मुरझाय ॥ बीतक बात कही तदा भाई, राणी पड़ी
मूर्च्छाय रे ॥ध०॥१४। फिट फिट कंता शुं कियो रे,

म्होटो ए अकाज । मुझ वीरो हीरो गुण तणो भाई महा मोटो रिखराज रे ॥ध०॥१५॥ क्षण एक तो धरती ढले रे क्षण एक नाखे निसास । क्षण एक दे ओलुंभा रे भाई, रुदन करे अति त्रास रे ॥ध०॥१६॥ रोने राणी रावली रे, काने सुणी नहीं जाय । रोतां सहु रोवाड़िया भाई हाहाकार पुर मांय रे ॥ध०॥१७॥ झूरे सुनंदा बेनडी रे झूरे पुरिससेण राव । मोटं अकारज ए थयो भाई, घात करी मुनिराय रे ॥ध०॥१८॥ तिणसमे केवल धारण रे, समोसरया मुनिराय । राय गयो वंदन तणी भाई, पूछे शीश नमाय रे ॥ध०॥१९॥ निरपराधी महामुनि रे, किम उपनो मुझ द्वेष । पूरव वैर कांई हुतो भाई, ते दाखो कर्म रेख रे ॥ध०॥२०॥ मुनिवर कहे सुण भूपति रे, पूरव भव मंझार । काचरा नो जीव तुं हतो भाई, नृपनंद खंदकुमार रे ॥ध०॥२१॥ छाल उतारी हरख शुं रे आनंद अंग न माय । कीधी सराहणा तिण तिह भाई, वार वार मन वाय रे ॥ध०॥२२॥ वैर जाग्यो रिपि देख ने रे, कर्म न छोडे कोय । जिन चक्री हरिहर भणी भाई हिरदे विमासी जोय रे ॥ध०॥२३॥ कर्म निकाचित बांधिया रे तेरे क्रोड भव माय । काचरा नुं जीव तुं थयो भाई, ते तो थया मुनिराय रे ॥ध०॥२४॥ कर्म समो शत्रु नहीं रे, कर्म करो मत कोय । रत्नाला पांच सो सुभट था भाई आडा आयो

कोय ॥ध०॥२५॥ राणी राय अने सुभटां रे सांभली ए अधिकार । संजम लेई मुक्ते गया भाई, वरत्यो जय-जयकार ॥ध०॥२६॥ संवत उगणीशे गुनचालीस में, जेठ शुक्ल दूज जाण । लश्कर घोड़नदी विषे भाई, गुण किया वखाण रे ॥ध०॥२७॥ खदक जिम क्षमा करो रे तो उतरो भवपार । तिलोख रिख कहे चौथी ढाल में भाई धर्म सदा श्रीकार रे ॥ध०॥२८॥

॥ अथ मेतारज मुनि नुं चौढालियो ॥

दोहा—श्रीजिन समरुं भाव सुं सत गुरु लागूं पाव ।
कथा अनुसारे गावशुं मेतारज मुनिराय ॥१॥
पूरव भव दो मित्र था ब्राह्मण केरी जात ।
देशना सुणी रिषिराज की संजम लियो संघात ॥२॥
संजम पाले भावसुं, तपस्या करे करूर ।
एक दिन मन में चिंतवे पूरव पाप अंकुर ॥३॥
जैन धर्म श्रीकार छे शंका नहीं लगार ॥
स्नान नहीं इण मार्ग में ए तो कही आचार ॥४॥
कुलमद दुगंछा भाव थी नीच कुल बंधन कीण ॥
आलोचणा विण सोचवी, सुरगति दाणु लीन ॥५॥
दोय मित्र तिहां देवता, बोले आपस मांय ॥
जो पहेलो नरभव लहे घालीजे धर्म मांय ॥६॥

संजम लेवाणो तिन भणी करि कोय दाय उपाय ॥
इम संकेत कीनो उभे, सुरभव आपस मांय ॥७॥
कुलमद जिन कीनो हुतो, ते पहेलो चव्यो तेथ ॥
मातंग कुल में अवतरयो, उदय कर्म के हेत ॥८॥
शेप पुण्य प्रताप थी, पायो संपति सार ॥
किण विध ते संयम लियो ते सुण जो अधिकार॥६॥

॥ ढाल पहली ॥

(देसी—सोहन सिहासन रेवती)

शहर राजगृही दीपतु राज करे श्रेणिक राय रे
सेठ युगंधर दीपतो, लक्ष्मी वंत कहाय रे ॥शहर०॥१॥
श्रीमती नार सुलक्षणी, रूप गुणे अधिकाय रे ॥ अवगुण
कर्म प्रभाव थी मृत वंझणी ते थाय रे ॥श०॥२॥ एकदा
गर्भ रहयो तेहने चिंतवे ते मन मांय रे ॥ जीवे नहीं
बालक माहरे, धन रखवालक नांय रे ॥श०॥३॥ जिम
संतति रहे कुल विषे, तिम करु कोई उपाय रे ॥ एटले
आवी मातंगणी, गर्भवती सा देखाय रे ॥श०॥४॥
तिण ने एकान्ते लेई करी, दीयो घणो सम्मान रे ॥
संपत्ति छे मुझ घर घणी, जीवे नहीं मुझनी संतान रे
॥श०॥५॥ जो तुज होवे नंदन कदा गुप्त पणे घर मोय
रे ॥ मेलजे तु निशि ने समे ठीक पडे नहीं कोय रे
॥श०॥६॥ द्रव्यं देशु तुझ सामटं, होसी सुखी तुझ
पूत रे ॥ प्रेम हुं रास शु अति घणो, रहेसी मुझ घर

तणो दूत रे ॥स०॥७॥ राजी थयी तिण मानियो, जनमियो, नंद जिणवार रे ॥ प्रछन्नपणे तिणे मोकल्यो, ठीक नहीं पुर नर-नार रे ॥श०॥८॥ जनम महोत्सव सर ही कियो, दिवस थया जब चार रे । दियो दशोठण जात में वरतिया मंगलाचार रे ॥श०॥९॥ नाम मेतारज थापियुं प्रतिपालण करे पंच धाय रे, । पूरव पुण्य प्रभाव थी, रूप गुणे अधिकाय रे ॥स०॥१०॥ कुलमद कियो तिण कर्म थी, मेहतर घर अवतार रे । बीज शशि जिम दिन दिने, वधे तम जस विस्तार रे ॥स०॥११॥ बहोतर कला में पंडित थयो, आवियो यौवन मांद रे । तिलोक रिख कहे पहली ढाल में, पुण्य थी सुख सवाय रे ॥स०॥१२॥

दोहा-यौवन वय जाणी करी, कन्या परणाई सात ॥
पंच इन्द्रिय सुख भोगवे आनंद मे दिन रात ॥१॥
हवे तिण अवसर नें विषे, पूर्वे कीनो करार ॥
ते सुर आई उपदिशे लेमुं संजम भार ॥२॥
तल्लालीन ते भोगवे माने नहीं लगार ॥
कीनी सगाई वलि तणे ते सुणजो अधिकार ॥३॥

॥ ढाल दूजी ॥

(देशी-धन सरवरिया री पाल)

आठमी कन्या तेह परणवा उम्माहा ॥ म्हारा लाल ॥परण०॥कीनी सजाई जान, जानी भेला थया

।मा०।।जा०।। केशरियो जामो पहेर मुकुट सिर प
रयो ।।मा०।।मु०।। माथे वांधियो मोड वींद नो वेश करयो
।मा०।.वी०।।१।। शिर पर शिर पेच जडाव, तुर्रा झुगझुग
सही ।।मा०।।तु०।। कलंगी तिण ऊपर जाण, अधिक
झलकी रही ।मा०।।अ०।। झगमगे कुंडल कान, हार
झगमग करे ।।मा०।।हा०।। वाजुबंद भुजदंड, पोंची कडा
कर सिरे ।।मा०।।पो०।।२।। मुंदरी अंगुली के मांय
झलके हीरा तणी मा०।।झ०।। कमर कंदोरो जडाव,
सुवर्ण की खिखणी ।।मा०।।सु०।। अत्तर अंग लगाय
तिलक भाले करयो ।।मा०।।ति०।। कियो उत्तरासण त
सुर थकी सो नही डरयो ।।मा०।।सु०।३।। बैठो हो
असवार लाडो वणयो सो सही ।म०।।ला०।। गा
मंगल नार, अधिक उच्छावही ।।मा०।।अ०।। धप म
मादल नाद, के साद सुहामणो ।।मा०।।के०।। धड़िद
धड़िदा ढोल, तिड़ किड़ त्रांसा तणो ।।मा०।।ति०।।४
चाल्या अधिक उत्साह, ब्याह करवा भणी ।।म०।।वि०
आया मध्य बजार बणी शोभा घणी ।।मा०।ब०।। ति
सर्प सो सुर कीध, बात कौतुक तणी ।।मा०।वा०।। मात
मन दियो फेर हेर अवसर अणी ।।मा०।।हे०।।५।। ली
हाथ में लट्ट, घट धींटो घणो ।।मा०।।ध०।। आयो ज
के मांय घरी कुलंट पणो ।।मा०।।व०।। माने नहीं व
शंक, बंक एकी जणो । मा०।व०।। आयो सो बींद ह

कास नहीं दूर तणो ॥मा०।का०।६॥ सघला ही रह्या
देख, बोले सुणो नंदना ।।मा०।बो०।। हुँ छु तणो तुझ
बाप, लाणे मत फंदना ।।मा०।ला०।। सात कन्या व्याही
वणिक परणाऊ एक माहरी ।।म०।प०।। पकड़ी अश्व
लगाम, कोई नहीं वाहरी ।।मा०।को।७।। वदलायो चित्त
लोक थोको सबने पडयो ।।मा०।थो०।। साची दीसे ए
घात, जोग इसडो घडयो ।।मा०।जो०।। लोक गया सब
ठाम वींद रह्यो एकलो ।।मा०।वी।। अधिक खिसियाणो
होय, देखे सो भुंई तलो ।मा०।दे०।८।। तिण समे सो
सुर वेग, कहे श्रवण विषे ।।मा।क०।। ले हवे संजम भार,
कहे गो भूंडो दिसे ।भा०।क०।। हवे पाल्यो होय सुजस,
परणु कन्या वणिक नी ।।मा०।प०।। नवमी परणू भूप
सुया श्रेणिक नी ।।मा०।श्रे०।६। वारा वर्ष गृहवास,
रहूं तदनंतरे ।।मा०।र०।। लेसु पछे संजम भार, वचन
ए नहीं फिरे ।।मा०।न०।। एम सुणी सुर वेण, सेण मन
फेरियो ।।मा०।से०।। झूठी मातंग नी वात वींद वली
हेरियो ।।मा०।वीं०।१०।। हुई सजाई सर्व तिहां वली
विवाह नी ।।मा०।।ति०। आया सांई बाजार वात थयी
ह्यावनी ।मा०।आ०।। महेतर आयो सो चाल, जान
मांही दोडी ने ।।मा०।।जा०।। उण मदिरा पीध बोले
कर जोडी ने ।।मा०।जो०।११।। ए नहिं माहरो नंद,
खोटो हुं बोलियो, ।।मा०।खो०।। माफ करो अपराध,

हाँ लाना छोडिने, पूछियो जिमरुं नाय हो
लाल ॥रा०६॥ राय कन्येरी लाविया, छन अंतर नी
मांय हो लाल। बकारी केरी जिन गमे, दुर्गंध रही
फैलाय हो लाल ॥रा०७॥ नगर सहु व्याकुल थई, उठि
चाल्या सहु लोक हो लाल। पूछे भूप कारण किसुं
बात थई ए फोक हो लाल ॥रा०८॥ सुभट कहै झूठी
नहीं, एही रतन दातार हो लाल। पूछे कारण कुंवर
सुं मुगट गया तिण वार हो लाल ॥रा०९॥ पूछ्यां
कारण कुंवर थी, किण कारण दुर्गंध हो लाल। उगले
नहीं किम रत्न ते, दाखो तेह प्रबन्ध हो लाल
॥रा०१०॥ सो कहे शुक राणी करे, रत्न उगले श्रीकार
हो लाल। नहीं तो एह दुर्गंध बुरी, शंका नहीं लगार हो
लाल ॥रा०११॥ राय कहै ते कारिका देवै रत्न नी
मांय हो लाल। शुक मांगी परन्तु तिका देवूं हूं खुशी
होय लाल ॥रा०१२॥ सो कहे कन्या तुम तणी,
दो शुक नै परणाय हो लाल। रत्न उगलसी ए भला,
हाम भरी तब राय हो लाल ॥रा०१३॥ गुण मंजरी
कन्या भली, कीधो ब्याह उत्साह हो लाल। तिलोक
रिख कहै तीजी ढाल में, कुंवर ना पुरियो उमाह हो
लाल ॥रा०१४॥

दोहा-नव कन्या परणी भली, नवनिधि पति जिम तेह।
भोगवे सुख संसार ना, दिन दिन वधते नेह ॥१॥

बारा वर्ष इम वीतिया, सो सुर आयो चाल।
कहे ले हवे तु वेग शुं, संजम चित उजमाल ॥२॥
नहिं तो देऊं संकट घणो, इण में फेर न फार।
सियाल परे श्री वीर पे, लीधो संजम भार ॥३॥
मन में ताम विचारियो, धिक धिक काम विकार।
पायो हीनता लोक में महेतर घर अवतार ॥४॥
हवे करणी दुक्कर करूं कर्म करुं सब छार।
मास मास तप धारियो निरंतर चौविहार ॥५॥

॥ ढाल चौथी ॥

(देशी–जमीकंद में रे जीव जाई ऊगने)

नित नित प्रणमुं रे मेतराज मुनि, तारण तरण जहाज। परम वैरागी रे त्यागी धर्म ना साधे आतम काज ॥नि०॥१॥ थिविरां पासे रे सिख्या गिर मने, नव पूरव को रे ज्ञान। ग्राम पुर पाटण विचरतां, ध्यावे निर्मल ध्यान ॥नि०॥२॥ कोई समे आया रे राजगृही नगरी, पारणा आयो रे ताम। प्रभु आज्ञा लेई गोचरी पधारिया, जिहां निरवद्य काम ॥नि०॥३॥ मारग जाता रे सुवर्णकार के, आंगणियां रिषिराय। एक जणाई धाय अंगार नगर, गोचरी कारण जाय ॥नि०॥४॥ [illegible] रे हम घर मा पूजी, कृपा करो मुनिराय [illegible] आहार के पाडंर वोले ने तब उसा [illegible] मुनिराज लिहां [illegible] गया, उ

हिया रे वार । सोनी घर में रे आयो वेग सुं वहोरावण
णी आहार ।।नि०।६।। सुवर्ण जव था रे राय श्रेणिक
ा, कुर्कुट आयो रे चाल । सो जव चुगि ने रे गयो ने
ीघ्र सुं मुनिवर रह्या रे भाल ।।७।। वाहिर आयो रे
प्राहार वेहराय ने, जव नहीं दीठा रे नयण । कहो कुण
ीधा रे कुण आयो इहां, कहे रोपे भरयो वेण ।।८।।
ुनिवर सोचे रे देख्या ना कहुँ, भूठज लागे रे मोय ।
कुर्कुट चुग्या रे इम उच्चारतां हिंसा पातक होय
।।नि०।९।। देख्यो अदेख्यो रे कांई न वोलणो, निश्चय
कियो अणगार । मौनज पकड़ी रे आण अराधवा,
धन्य सो करुणा भंडार ।।१०।। मौनज जाणी ए
सुवर्णकार तें, आई रीस अपार । इणना भेद में थई
चोरी सही, पूछे वारंवार ।।नि०।११।। मारे चपेटा रे
कहे वलि चोर तुं, किम नहीं वोले रे सांच । मुनिवर
क्षमा रे धारी तन मनें, वोले नहीं मुख सु वाच
।।नि०।१२।। तिम तिम अधिको रे सो क्रोधे भरयो,
सोचे ए अति धीठ । कूटया विन रस ए देवे नहीं, मूरख
चोल मजीठ ।।नि०।१३। मुनि कर पकडी रे ले गयो
वाड़ा में सिरपर आलो रे चर्म । खेंची ने वांध्या रे
तावड़े राखिया, वेदना उपनी परम ।।नि०।१४।।
लोचन छटकी रे वाहर निकल्या, तड़ तड़ तूटी रे नाड़
मुनिवर थिर मन दृढ करि राख्युं, जेम सुदर्शन पहाड़

॥नि.॥१५॥ केवल पाई रे मुगत सिधाव्यां, अजर अम
अविकार । देव बजावे रे दुंदुंभि गगन में, बोले ज
जय कार ॥नि.॥ तिण समे मोली रे एक कठियार
नाखी धमक सूं ताम ; वींटन कीनी रे कुकुट भयक
लव पड़िया तिण ठाम ॥नि.।१७॥ सोनी देखी रे
थर धूज्यो कीधो महोटो अकाज । में मूढ भावे
निरपराधिया, घात करी रिखराज ॥नि०।१८॥ रा
श्रेणिक भेद ए जाणशे, करसे कुटंब संहार । एम जा
ने रे श्री वीर पै, लीनो संजम भार ॥नि०।१
तप जप करणी रे कीनी सहुजणा, पाया सुर अवत
अनुक्रमे जासी रे करम खपाई ने सहु ते मोच म
॥नि०।२०॥ नव कोटि धन नव कन्या तजी नें,
विधि ब्रह्मचर्य धार । नव पूरव धर नव संवर करी,
भवजल पार ॥नि०।२१॥ एहवा मुनिवर चमा सा
तस गुण गाया उमाय । तिलोख रिख दाखे रे
ढाल ए, सुणतां पातक जाय ॥नि०।२२॥ संवत उग
रे गुण चालीस में, आषाढ वदी पड़वा वखा
दक्षिण देश रे पूना शहर में, नाना की पेठ में
॥नि०।२३॥ ओछ् अमारी रे विपरीत जो क
मिच्छामि दुक्कडं मोय । भणशे गुणसे रे विधि
जाणसुं, तस घर मंगल होय । नि०।२४॥

मेघकुमार की ढालें

।। ढाल पहली ।।

(देसी—इन्द्र इन्द्राणी हो सुखमर)

धारणी समझावे हो मेघकुंवर ने जी तू तो जाया एकज पूत । तुझ बिन जाया रे दिन किम नीसरे राखो म्हारा घरतणो सूत ।।धा०।१।। अन्न धन लक्ष्मी रे जाया मारे छे घणीजी विलसो नी हतरे संसार । छत्ती ऋद्धि विलसी रे जाया घर आपणेजी पछे लीजो संयम भार ।।धा०।२।। तुझ ने परणाई रे जाया आठ अन्तेवरी ये हैं बहुआं रूप रसाल । गजगति चाले हो मलकतीजी नैन वैण सुकमाल ।।धा०।३।। ऊंचा घरां हो ऊंचा मन्दिर मालियाजी यौवन मलके जी भाल । नाटक नाच हो जाया थारा महल में जी खेलो थारे राणियां रे परिवार ।।धा०।४।। एक ऊणायत हो जाया म्हारे छे घणीजी खेलाऊं मारी बहुआंतणा बाल । देव हठीलो हो संशय नहीं मेटियोजी, पछे लीजो वैरागी रो भार ।।धा०।।५।। रत्न कचोले रे जाया थारे जीमणोजी नित नव भोजन तैयार । घर घर फिरनो रे जाया पछे गोचरीजी सरस नीरस रो आहार ।।धा०।६। एक पहर री माजी ! म्हारी गोचरीजी सात पहर को राज । घर सुं भली हो माजी ! मारी कचोलड़ीजी भांत भांत रो जी

आहार ॥धा०।७॥ इतरो कही ने हो थाकी माता धारणीजी नहीं समझिया मेघकुमार । छोड़ देवूं घ घरवास जाय रहसूं वनवास ॥धा०।८॥ मेघकुमार की माता कहीजे धारणीजी संजम लेस्यां प्रभुजी रे पास पांच रतन हो प्रभुजी सुं पाया हो जी हो जो मंगलाचार (हो जो कोड कल्याण) ॥धा०।६॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(तर्ज–चम्पक वृक्ष नीचे मुनिवर विराजे)

मेघकुंवरजी री धारणी माता बोले छे मीठी वाणीजी । अणगमता रे माता वचन सुणावे थारे आंखियां में पड़सी पाणीजी, मोह तणे रे वश भारखी बोले ॥१॥ नीठ नीठ रे जाया नर भव पायो, थारी ओछी उमर में कछु न खायोजी । आठों ही राणियां ने जाया छेह न दीजे, भर यौवन लाहो लीजे जी ॥मो।२॥ खाणो तो पीणो ये माता कर्म बन्धाणो भोगवणो महा दुःखमी रोगोजी । यौवन चिपे के तो पुण्यवंत बोले म्हें आदर सुं जोगोजी ॥मो।३॥ कोईक रे तो जाया सरस वहरावे, कोईक लूखो सूखोजी । टूंसी टूंसी रे तो जाया आहार न कीजें, कीजें देह परमाणोजी ॥मो।४॥ कोईक तो रे जाया मोदक वहरावे कोईक वसला सुं छेदेजी । साधु ने रे जाया क्षमा ज करणी राग द्वेष दोनों तजनो जी ॥मो०।५॥ श्रेणिक राजा तो कहे कुंवर ने

अति सुकुमारोजी । सदा खुशाली में रहतो रे
। मारी पूठ न चिंतो जी ॥मो०।६।। थोड़ा वरस
जाया जोग नहीं छे, जावजीव लग सहनोजी ।
ड़ी तो वातां माता किणने सुणावे, म्हारो मन होसी
जम करसुंजी ॥मो०।७॥ सीयाला रे जाया सीयज
व्रमणो उन्हाला री लूआ जालोजी । चोमासा रा जाया
मैला जी कपड़ा तूं छे अति सुकुमालोजी ।.मो०।८॥
कायर ने माता सहणो दोहिलो शूरा ने अति सोरोजी ।
। म्हारी तो सुरत माता लागी मुगत सुं मैं आदरसुं
जोगो जी ॥मो०।९॥ जो तू रे जाया दीक्षा लेसी,
सामो जोवो जी । नाना थी मैं मोटो ज कीनो
ान्धव नहीं कोयोजी ॥मो०।१०॥

॥ ढाल तीसरो ॥

(देसी-मीठी वाणी सु गुराणी सा रे)

मोटी वनाई एक शिविका जी जिण मांही बैठा
कुमारजी । झूर झूर रोवे वारी कामिनियांजी वरसण
ागो सावन मास जी । झुर झुर कायर रो हिवणो
ारहरेजी ॥१॥ कदियन करडी नजरा जोवताजी
कदियन बोल्या मुख सुं वैणाजी । सयम लेवो तो चूक
---य दो जी, ये वातां नहीं आवे म्हारे दायजी
ो०।२। थां सुं तो नेह मारे अति घणोजी, आंसूडा
रो छो केमजी संजम लो तो ढील करो मती ज्ञी मांचो

तो थांरो नेहजी ॥कु०।३॥ इतरो सुणी बोल्या नहीं अ
मन मांहि समझिया मेघकुमारजी । आप स्वारथ रां
कामिनियांजी बिन रे स्वारथ नहीं कोयजी ॥कु०।४॥
कोई नरनारी मंदिर मालिया पे जी झांके जालिया
मुंडो घालजी । मुख कुम्हलाणो मालती रा फूल ज्यों
कुंवर कुम्हलानो काची केल ज्यूंजी ॥कु०।५॥ कोई न
नारी मुख सुं इम कहेजी, संजम लेसी मेघकुमारजी । अ
धन लक्ष्मी थांरे अति घणीजी नहीं दे परमेसर खा
खाणजी ॥कु०।६॥ कोई नरनारी मुख सुं इम कहे
संजम लेसी मेघकुमारजी । बले विशेखे थांरी कामनि
जी छांडे भोजन में मीठी खीरजी ॥कु०।७। परभा
चायां चाली मामरेजी गावे वे गहरा मधुरा गीतजी
कायर हिया रो रोवे मानवीजी नहीं जाणे धर्म
रीतजी ॥कु०।८॥ नगरी के बीच होय नीसरिया
वन मांहि आया शूरवीरजी । बाजा नो बाजे व
महावनाजी, कायर हियारो दिलगीरजी ॥कु०।९॥

॥ ढाल चौथी ॥

बोल्या बोल्या ए माती मारे दादर मोर लाल झां
बांनी कोयली । वन झाणे पोली कोयली ॥१॥ म
हेलां ए माती मारो मेघकुमार, बले विशेषे थारी कामिनि
।२॥ पहरियो पहरियो ए माती मारे नवसर हार

जी । चीत चीत सहू नीसरीयां मारी कोई न पूछी
ाजी । जोई जो रे चल गति करमा की । आवताजी
ाता साधुजी मने हेत करी ना वतलायो जी । साथे
ाला तो कोई साथिया मारी मूल न राखी आसोजी
ाजी.॥२॥ म्हे तो श्रेणिक राजा रो दीकरो मारे माथे
ाहती पाणोजी । पाग हेठी मेलिया पछे मारो उतर गयो
ाआणोजी ॥जो.॥३॥ म्हें तो संसार में सुखियो हुं तो मारे
ाबहुला लोगोजी । खमा रे खमा करता सहु मारी
ाई न लोपता कारोजी ॥जो ॥४॥ म्हारे ऊंचाजी मन्दिर
ालिया म्हारे गौरियाँ गावे गीतोजी । नाटक भली
ाली भांति रा म्हारे पाछे रही सहू रीतो जी ॥जो ॥५॥
म्हारे कुशलावती पद्मावती म्हारे अविचल रे उणियारो
ाडी । मोटा जी कुलरी ऊगनी मैं तो जाय करुँला संभा-
ा लोजी ॥जी.॥६॥ मैं तो नहीं लीधी या भेले गोचरी में
ाहीं लीधो या भेलो आहारोजी । दिन उगा मारे
ाजाऊं विलखूं ला लील विलासोजी ॥जो.॥७॥ मैं तो
ाघा जी पात्रा मेल देसूं मैं तो मेल देसुं सहु
ारपावोजी । दिन उगिया मारे घर जासूं मारे पूछणरी
ाऊ रीतोजी ॥जो.॥८॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(देसी—कोयल पर्वत धूधलो रे)

पौं फाटी पगडो हुवो हो मेघजी आया श्री वीरजी

ठो जी । चीत चीत सहू नीसरीयां मारी कोई न पूछी
ारोजी । जोई जो रे चल गति करमा की । आवताजी
ावता साधुजी मने हेत करी ना वतलायो जी । साथे
ालो तो कोई साथिया मारी मूल न राखी आसोजी
ाजी.॥२॥ म्हे तो श्रेणिक राजा रो दीकरो मारे माथे
हती पागोजी । पाग हेठी मेलिया पछे मारो उतर गयो
ागोजी ॥जो.॥३॥ म्हें तो संसार में सुखियो हुं तां मारे
ारे बहुला लोगोजी । खमा रे खमा करता सहु मारी
ोई न लोपता कारोजी ॥जो.॥४॥ म्हारे ऊंचाजी मन्दिर
ालिया म्हारे गौरियों गावे गीतोजी । नाटक भली
ली भांति रा म्हारे पाछे रही सहू रीतो जी ॥जो.॥५॥
हारे कुशलावती पद्मावती म्हारे अचिचल रे उणियारो
ी । मोटा जी कुलरी ऊपनी मैं तो जाय करुँला संभा-
ोजी ॥जो.॥६॥ मैं तो नहीं लीधी या भेले गोचरी मैं
ो नहीं लीधो या भेलो आहारोजी । दिन उगा मारे
र जासूं विलसूंला लील विलासोजी ॥जो.॥७॥ मैं तो
ओघा जी पात्रा मेल देसूं मैं तो मेल देसुं सहु
सिरपावोजी । दिन उगिया मारे घर जासूं मारे पूछणरी
छे रीतोजी ॥जो.॥८॥

॥ ढाल सातवीं ॥

(देसी—कोयल पर्वत ढूंढले रे)

पौ फाटी पगडो हुवो हो मेघजी आया श्री वीरजी

रे पास हो मुनीश्वर मेघ। पडिक्कमणो ठायो नहीं
मेघ दुख वेदिया भरपूर हो मुनीश्वर मेघ। श्री
जिनेश्वर बोलाव्या मेघ ॥१॥ गज भव सुसलियो राखि
हो मेघ, हाथीरा भव मांय हो मुनीश्वर मेघ। श्रेणि
राजा रा दीकरा हो मेघ अब हुआ मोटा मुनिराज
मुनीश्वर मेघ ॥श्री ॥२॥ नरक निगोद मे थें भम्या
मेघ अनंती अनंती वार हो मुनीश्वर मेघ। वीजे वि
थकी चवी करी हो मेघ महाविदेह क्षेत्र मझार हो
॥श्री.॥३॥ दान शील तप भावना हो मेघ शिवपुर मा
चार हो मुनीश्वर०। कर्म खपाय मुगते गया हो मेघ व
हे मंगलाचार हो मुनीश्वर मेघ ॥श्री.॥४॥

लाई [illegible] ॥ राजा ने लाव
[illegible] दीनी दूर ॥राज०४॥
[illegible] कारण, [illegible] मालको नहीं होय
राजिंद [illegible] पालखी, [illegible] क्यों नहीं
होय ॥राज०६॥ [illegible] अरजी क
माथे नहीं मत नाह । [illegible] चवन लावन
तिण कारण कई र उतार ॥राज० ७॥ उतरो सुनी
यो राजिंद चिंतवे बहु मिलिया बहु दुःख । इण अ
माहि कोई किणरा नहीं जीव एकाएकीज सुख ॥राज०८
उज्वल भाई बहु राजिंद भावना, दियो छह काया
अभयदान । नमी नामे राजिंद वीर हुआ ऊपन्यो जा
समरण ज्ञान ॥राज०।६॥

दोहा–सुख भर निद्रा आ गई उगंते प्रभात
वैरागी मन वालने छोड़ी मन नी आस ॥
हाथी घोड़ा रथ पालखी छोड्या मुलख भंडा
ध्यान रह्या वनखंड में नमि नमो अणगार ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

पहला देवलोक रा धणी नमी ऋषिराय
ज्ञान करी ने जोय नमी ॥१॥ आयो आयो ऋद्धि छिट
ने नमी ध्यान ध्यायो एकाएक नमी ॥२। परि
तो ले देवता नमी मुनिवर गोडे आय नमी ।

[illegible] की [illegible] करोड़।
[illegible] नहीं [illegible] कोड ।१।
[illegible] इन्द्र [illegible] भेद को जीव
[illegible] समकित नींव।

॥ ढाल तीसरी ॥

([illegible])

इन्द्र कहे नमिराय ने हो सांभलजो मुनि राया श्री सौभागी। मिथिला नगरी जल रही रे लाल, लोक दुखी तिणवार हो सौभागी। श्री इन्द्र कहे नमिराय ने रे लाल ॥१॥ अन्तेवर नहु मारते हो, जल रयो गढ़ बजार हो सौभागी। करुणा करोनी स्वामी या थकी रे लाल सामो जोवोनी एक वार हो सौभागी ।।२॥इन्द्र॥ वलता मुनिवर इम कहे हो ज्ञानादिक गुण होय हो सौभागी। मिथिला नगरी दाजती रे लाल, म्हारो वले नहीं कोय हो सौ. ॥इन्द्र॥३॥ स्वकीय समाधि में वसूं म्हारे सुगति जावण रो कोड हो सौ.। म्हारी मिथिला किन कारणे रे लाल, मैं तो निकलिया छोड़ हो सौ. ॥इन्द्र॥४॥ यह वचन श्रवणे सुण्या यो धन धन मुनिवर है यम सो। मोह कर्म जीत्या घणा रे लाल नहीं गुण रो छे पार हो सौ. ॥इन्द्र॥५॥ प्रश्न पूछे तीसरो करावो पोल प्राकार हो सौ. किवाड फिरणी भांगल आदि देई रे लाल, [illegible] ने जंत्र रसाल हो सौभागी ॥इन्द्र.॥६॥ किला,

कंट सेटा करो रे लाल, नहीं लागे वैरियां रो जोर हो सौ । लारला याद करसी घणा रे लाल, इसडा राजा बीजा नहीं हो ओ सौभागी ।।इन्द्र ।।७। वलता मुनिवर इम कहे हो श्रद्धा रूपनी पागार होय हो सौ वैराग्य रूपणी पोल छे रे लाल । गंजी न सके कोई ओ सौ. श्री नमी यो कहे ब्राह्मण सांभलो रे लाल ।।इन्द्र।।८।। आगल सवर तपतणी हो गढ़ क्षमा रूपी जाण हो सौभागी । गुप्ति खाई में आराधता रे लाल, पराक्रम धनुप प्रमाण ओ सौभागी ।।इन्द्र.।। तप रुपियो लोह-बाण छे रे लाल भावे संग्राम होय हो सौ । संसार नगरी कारमी रे लाल, अविचल मुगत्यां रो राज सौभागी ।।इन्द्र.।।१०।। जीवा ईर्या रूपणी रे लाल, धीरज पणो मध्य भाग हो सौभागी कर्मा ऊपर कटकी करो रे लाल, मारे मुगति जावण रो कोड हो सौभागी ।।इन्द्र ।।११।। यह वचन श्रवण सुण्या धन धन मुनिवर हे महा सौभागी । इन्द्र सुणी हरख्या घणा रे लाल, सांभलो चौथी ढाल हो सौभागी ।।इन्द्र.।।१२।। इति

दोहा-चौंथों प्रश्न किस विधे, पूछू छु कर जोड़ ।
सावधान होइ सांभलो, आलस निद्रा छोड़ ।।१।।

।। ढाल चौथी ।।

अहो ! इन्द्र कहे नमिराय ने जल मिन्त्र महल

चुणाय हो। जाली झरोखा सामंता दीठा ही आवे दाय
हो। श्री इन्द्र कहे नमीराय ने ॥१॥ अहो! मतमोम्य
अति शोभंता ठंडा जल री आवे लहर हो। नमी ए विन
कुण कुण करे थारे नाम को रहसी केम हो
॥श्री इन्द्र॥२॥ अहो वलता मुनिवर इम कहे, कुण रावे
अज्ञानी लोक हो। ने छेही इक दिन चालणो पर
शाश्वत म्हारे मोक्ष हो। नमी कहे ब्राह्मण ने ॥३॥ अहो
वाट मारग वासो वस्यां, हरख्यो फूल्यो घणो जी
हो। काल लेऊं रे लेऊं कर रह्यो, कुण देवे कारमी नी
हो ॥नमी०॥४॥ अहो ये वचन श्रवन सुणया हरख्या
गति ना नाग हो। प्रश्न पूछे पांचवो इन्द्र जोड़िया
दोनो हाथ हो ॥श्री इन्द्र॥५॥ अहो चोर गांठ छोड़ी करी
फांसीगर ने भटियारा हो। इतरा ने वश वरताय ने
पछे लीजो संजम भार हो ॥श्री इन्द०॥६॥ अहो लोक ने
खबर पड़ी नहीं चोरां न सेटा कीजे हो। चोरां ने गो
सहजे जुगत सुं मन वांछित भाजन नहीं दीजे हो
॥श्री इन्द०॥७॥ अहो वलता मुनिवर इम कहे सुन
ब्राह्मण मारी वात हो। में म्हारा चोर सेंटा किया पर
चोरां ने पकड़े केम हो ॥श्री नमी० ॥८॥ अहो पांचों
इन्द्रियां चोरटी ज्यांने दीवी है जो मोकलाय हो। श्री
न करे [illegible] नावरा चोरां री खबर न काग
॥श्री नमी०॥९॥

धर्म केरो एक दीप ॥मुनि०।८॥ [illegible] रा [illegible] करीजे तो तिणगुं [illegible] अधिको हो तिणगुं तो अधिको हो, धर्म केरो एक दीप ॥मुनि०।९॥ मास मास ना पारणो कीजे डाभरी अणी डाभरी आवो हो जितो अन्न जल ए ॥मुनि०।१०॥ संजम रा गुण कहा अमोलक दान तो नहीं हो, दान तो नहीं हो कोई संजम रे तोल ॥मुनि०।११॥ चलता तो मुनिवर ते इम मांहे साधु तो मोटा हो साधु तो मोटा हो, जग में छह काया रा नाथ ॥मुनि०।१२॥ सोलहवीं कला साधुजी री कहिये तिणरे तो तुले हो तिणरे तुले हो लागे नहीं कोय ॥मुनि०।१३॥ यह वचन सुणी ज्ञानीजी कने इन्द्र तो हरख्या हो इन्द्र तो हरख्या हो मन मे असमान ॥मुनि०।१४। इति

दोहा–छठो प्रश्न किस विधे, पूछूं छुं कर जोड़।
जिम जिम उत्तर सांभलो, तिम तिम अधिको प्रेम ॥१॥

॥ ढाल छठो ॥

इन्द्र कहे नमिराय ने हो, सोनां ने रूपो वधाय माणक मोती आदि देई हो संचय थारा राज में मोकलो माल, श्री इन्द कहे नमिराज ने ॥१॥ संचय कांसी भाजण तणा हो वस्त्र थिरमा दुशाला। हाथी घोड़ा रथ पालखी हो मोकला घालोनी राज भंडार। श्री इन्द्र कहे नमिराय

लाडू पेडा ने दाना ताजा, भेले घेवर खांड ने खाजा
गोसाईजी ॥४॥ फिणी रोटी ने रस पोली भेले अरकिय
घीरत भवोली हो गौसाईजी ॥५॥ पेडा दोठा ने माल
पुआ भेले मसाला घालिया सवाद हुओ हो गोसाईजी
॥६॥ पीपल पाक बीजोरा ने कोला केरी पाक गटकावा
कोरा हो गौसाईजी ॥७॥ मन आनंद कुलकंद कलाकंद
खाया आनन्द हो गौसाईजी ॥८॥ दाल चावल ने भीरा
रसलेई ने जीमो धीरे धीरे हो गौसाईजी ॥६॥ गीरी
गीदोंडा गुलपको जोगी जीमता नहीं थाको हो गोसाई
जी ॥१०॥ इत्यादिक खीर रंधाई पछे तरकारियां
जुगत बनाई ॥११॥ जूती उरी रे मंगाई नानी कतरी
सांगरिया बनाई हो गोसाईजी ॥१२॥ भैंस रा
में छिमकाई भले कस्तूरी री वास लगाई हो गोसाई
॥१३॥ इत्यादिक पट् रसोई बनाई पछे पिताउ
कसर न काई हो गोसाईजी ॥१४॥ जोगी जिमिया
पेला मेवा मिठाई पछे राईता री धूम म मचाई हो
गोसाईजी ॥१५॥ जोगी जिमिया ने हुआ राजी,
दरगिया ने राणी राखी बाजी हो गोसाईजी ॥१६॥
दोहा-जीम चूटने निसरिया, आया तो शाला माय
लोग सुपारी इलायची राजा मुखवास दियो लाय ॥
... दा... भगति सुं नीचो शीश नमाय

ाजा बहु हर्षित हुआ स्वामी आनन्द पामिया आज ॥२॥
ोगी बहु हर्षित हुआ स्वामी आनन्द पाम्या आज।
ाज भार हलका हुआ स्वामी विदा करीजे आज ॥३॥
ौर आज्ञा लेई ने नीसरिया आया तो शाला-बहार।
ग मोजड़ी दीसे नहीं मन में करे विचार ॥४॥
तुर पुरुषां री पावड़ी, किन लीधी नर ने नार।
े पावड़ी कहां निकलसी ते सुनजो विस्तार ॥५॥

॥ ढाल छठी ॥

राजा श्रेणिक पास सभा छे अति घणी पूछे वारंवार खबर मोजडी तणी राय सभा रे माय लोक सर्व मालुम हुई, दूत भेज्यो सगला शहर में खबर पाई नहीं, राजा कहे एम अंतेवर जोओ सही, राय तणा सुणिया वैण तिहाते नीसरिया आया उतावला वेग महला मांहि परवरिया राणी कहे एम। राजाजी ने जाय कहो मोजडी छे गुरुजी रे पास, औरों के सिर ना दीजिये, राणी तणा सुनिया तिहां थकी ते निसरिया आया उतावला वेग राज्ञ मांहि परवरिया जोडिया दोनों हाथ अर्जी इसड़ी करे सांभल जो महाराज करूं एक विनती राणी कह्यो एम राजाजी ने जाय केवो मोजड़ी छे गुरुजी के पास औराना सिर ना दीजिये। दूत तणा सुणिया वैन, मन मांहि चिंतवे ए छे चेलना रा काम औरा सु

क हजार । सुवि०।१०।। रुकिया पाप मोटका रे लाल
र घेर न घेराय रे लाल । पाप न लागे राई जीतो
रे लाल पचखिया है मेरु समान ।।सुवि०।११।। भगवंता
सरीखा गुरु मिलिया रे लाल मारे कर्मी न राखी
काय सु० । नरक पडंता ने राखिया रे लाल गयो
जमारो जीत सुविचारी रे लाल ।।१२।। आनन्द समकित
आदरे रे लाल ।

दोहा–बारह व्रत पाले भला चवदह नियम विचार ।
तीन मनोरथ चिंतवे धारे शरणा चार ।।१।।
निश्चल समकित दृढधर्मी इकवीस गुण का धार ।
चवदह वर्ष इम बीतिया करता धर्म उदार ।।२।।
पन्द्रह वर्ष वर्तता एक दिन आधी रात ।
जागरण करे धर्म की सुणजो यह विख्यात ।।३।।
आनन्द सथारा को कथन सुन विस्मित अपार ।
गौतम सुण ने आविया देखण ने अणगार ।।४।।

।। ढाल तीसरी ।।

(स्वामी मारा राजा ने धर्म सुणावजो-ए देशी)

हाथ जोड़ी आनन्द कहे विनय करी ने विनीत हो ।
स्वामी मारी उठण री शक्ति नहीं आगा चरण करावो
। स्वामी अरज करूं ओ थासुं विनती ।।१।। गौतम
रण आगा किया, वांदिया मन रे हुलास हो, स्वामी

रे लाल आचार मे ढीला थाय सुविचारी रे लाल ज्यांने हु वंदू नहीं रे लाल नहीं रे नमाऊं मारो शीष सुविचारी ॥२॥ भगवंत रा साधु साध्वी रे लाल पडिय जमाली जाग सुविचारी रे लाल दुष्ट पणो ज्यांने आदरियो रे लाल नहीं रे मारु ज्यारी सेव, सुविचारी ॥३॥ पहले हु वतरावू नहीं रे लाल एक वार दूजी वार सुविचारी. नहीं रे वेहराऊं मारा हाथ सु रे लाल अशनादिक चारो आहार ॥४॥ जो हुँ घर में बैठो रहूं रे लाल छे छन्डी रो आगार सुवि० । राजाजी हुकम फरमावियो रे लाल अठीने नहीं परिवार सुविचारी रे लाल ॥५॥ जो कोई मेह री खेच होवे रे लाल, अटवी में पड़ जावे काल सुवि० । जोरे वेहराऊं म्हारा हाथ सुं रे लाल मारी माला मे चून रो साल ॥सु०।६॥ जो कोई देवता पितर होवे रे लाल, जो कोई मोटको थाय सु. । जो कोई दुर्जन आवियो रे लाल,जो कोई नागो अड़ जाय ॥सुवि।७॥ भगवंतरा साधु-साध्वी रे लाल चाले सूत्र अनुसार सुवि. । ज्याने वेहराऊँ मारा हाथ सु रे लाल अशनादिक चारों आहार सुविचारी० ॥८॥ चार गोकुल मारे मोकलो रे लाल सोनैया बारह क्रोड सु० । शिवानन्दा नारी मोकली रे लाल बीजी नारी रा पचखाण ॥सु०।६॥ चार जहाज मारे मोकली रे लाल, दुंडा भले चार सु० । पांच सौ हल मारे मोकला गाडा

एक हजार । सुवि०।१०॥ रुकिया पाप मोटका रे लाल
घर घेर न घेराय रे लाल । पाप न लागे राई जीता
रे लाल पचखिया है मेरु समान ॥सुवि०।११॥ भगवंता
सरीखा गुरु मिलिया रे लाल भारे कमी न राखी
काय सु० । नरक पडंता ने राखिया रे लाल गयो
जमारो जीत सुविचारी रे लाल ॥१२॥ आनन्द समकित
आदरे रे लाल ।

दोहा—बारह व्रत पाले भला चवदह नियम विचार ।
तीन मनोरथ चिंतवे धारे शरणा चार ॥१॥
निश्चल समकित दृढधर्मी इकवीस गुण का धार ।
चवदह वर्ष इम बीतिया करता धर्म उदार ॥२॥
पन्द्रह वर्ष वर्तता एक दिन आधी रात ।
जागरण करे धर्म की सुणजो यह विख्यात ॥३॥
आनन्द सथारा को कथन सुन विस्मित अपार ।
गौतम सुण ने आविया देखण ने अणगार ॥४॥

॥ ढाल तीसरी ॥

(स्वामी मारा राजा ने धर्म सुणावजो-ए देशी)

हाथ जोड़ी आनन्द कहे विनय करी ने विनीत हो ।
स्वामी मारी उठण री शक्ति नहीं आगा चरण करावो
ओ । स्वामी अरज करूं ओ थासुं विनती ॥१॥ गौतम
चरण आगा किया, वांदिया मन रे हुलास हो, स्वामी

[illegible] कान श्री
॥स्वामी०।२॥ आनन्द [illegible], गौतम दिया
न [illegible] आनन्द [illegible] जो इण बात रो
[illegible] आनन्द उपकारी डमड़ो कहे
॥स्वामी।३॥ [illegible] झूठा ने लागे दोष
हो स्वामी [illegible] झूठा भणां सांचा ने किम
आणीजो ।स्वामी०।४॥ [illegible] जोड़ी आनन्द कहे विनय
करी ने विनोत हो स्वामी पं दीठो जैसो भाखियो
स्वामी प्रायश्चित लो आप हो ।स्वामी०।५॥ इतो
गुण शंका पड़ी आया प्रभु रे पास हो, स्वामी हुं
आज्ञा ले उठियो गोचरी बात दीनी प्रकाश हो
॥स्वामी०।६॥ बलता वीर डमड़ो कहे, गया वचना में
चूक हो। गौतम! जाय ने खमाय लो, तुरत दिया
पाछा मूक हो ॥स्वामी०।७॥ थे श्रावक सैंठा घणा
विनय करी ने विनवे श्रो। थे श्रद्धा ने सैंठा घणा
थारां गुण गाया महावीर हो ॥स्वामी०।८॥ शिवानन्दा
नारी भली पतिव्रता भरतार हो। वा पिण धर्म ने
समझणी जिन मारग रा परतीत हो ॥स्वामी।९॥
एक मास रो जी संथारो, गया पहेला देवलोक हो
स्वामी चार पल्य रो आउखो चवी जासी मोक्ष
हो ॥स्वामी।१०॥

सूरज पाया खोलिया, दुनिया मांय उगियो रे उद्योत के। नेम जिनंद समोसरिया सगलो परिवार वन्दन जाय के ॥१०॥ वाणी सुनी वैरागिया लीधो यह संजम भार के। कर्म खपाय मुगति गया, कुल में रह गया कृष्ण मुरार के आठो ही रानियां मुगति गई अन्तगड़ सूत्र में अधिकार के ॥हुं॥११॥

सूरज पाया खोलिया, दुनिया मांय उगियो रे उद्योत के । नेम जिनंद समोसरिया सगलो परिवार वन्दन जाय के ॥१०॥ वाणी सुनी वैरागिया लीधो यह संजम भार के । कर्म खपाय मुगति गया, कुल में रह गया कृष्ण मुरार के आठो ही रानियां मुगति गई अन्तगड़ सूत्र म अधिकार के ।हुं॥११॥

नहीं आवे लाज ।।सांभल०।।८।। सगला जगत को धन भेरो करियो थाज्यो थारा राज के मांय । तो पण तृष्णा ओ राजाजी पापणी, कदी य नहीं तृप्त थाय ।।सांभल.।६। सांभल ने इखुकार राजा बोलिया थें बोलो नी वचन विचार । के तो राणीजी थाने भोलो वाजियो के थांए पीधी मतवार । सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ।।१०।। नही तो राजाजी म्हाने भोलो वाजियो नहीं म्हांए पीधी मतवार । भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्यो में वरजण आई भूपाल ।।सांभल महाराज०।।११।। सांभल ने इखकार राजा बोलिया थें ऐसा वैरागण होय । आज तलक कोई दीसे नहीं थें बैठा म्हारा राज के माय सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ।।१२।। रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुओ जाणे सो ही फंद । हुँ पण आपका राज में कदी य न पाऊं आनंद सांभल म्हाराजा आज्ञा देओ तो संजम आदरूं ।।१३।। स्नेह रूपियो तांतो तोड़ने यारभ धन से रहूँ दूर । हुँ पण राज छोड़ी नीसरुं थें पण चेतो भूपाल ।। सांभल महाराजा० ।।१४।। दव तो लागो राजाजी वन मांहि हरिण सुसलिया बरे माय । ऊंचा माला का पत्ती देखने मन मांहि हर्षित थाय ।.सांभल महाराजा० ।।१५।। अणी दृष्टान्त राय मूरख भया, आप मुरभ रह्या मन मांय । पेला को दुख देखी चेत्या नहीं, राग द्वेष की लग रही

जग में लाय ॥सांभल महाराजा०॥१६॥ भोगव्या काम छांडि ने द्रव्ये भावे हल्का होय। वायु सरीखा पंखी नी पेरे विचरसां आपण दोय ॥सांभल महा. आज्ञा.॥१७॥ मांस री बूंटी श्रो पत्ती की चोंच में नर वंसा पंखी पड़े आय। अहि समान भोग छंडी ने चारित्र लेसां चित लाय ॥सांभल॥१८॥ गृद्ध पंखी जिम जाणिये काम वधारे संसार। गरुड़ से सांप डरतो रहे त्यों पाप से शंकाय ॥सांभल० आज्ञा० ॥१९॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने अपणे मन वन मे सुखी थाय। इणी पेरे बंधन तोड़ने चारित्र लेसां महाराय ॥सांभल महाराजा०॥२०॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई चालण हार। रात दिवस वहे वाटड़ी चेतो क्यों नी महाराज। सांभल महाराजा राणी समझावे श्रो राय ने ॥२१ कुटम्ब काजे कर्म बांध ने पडियो नरक मझार। एकलडो दुःख भोगवे कुण छुडावे महाराज ॥सांभल॥२२॥ परदेशी तो परदेश में किण से करे रे सनेह। आया कागद ने उठ चल्या, नहीं गिने आंधी ने मेह ॥साभल० ॥२३॥ व्हाला तो दुखिया थया. मिलिया वहुला लोक। देखता ही उठ चल्या, नहीं कोई राखण हार ॥सांभल० ॥२४॥ व्हाला विना एक घड़ी सरतो नहीं रे लगार। जाने मुआ ने वहु वर्ष हुआ पाछा नहीं समाचार ॥ सांभल० ॥२५॥ काची काया को कैसो गारवो, जतन करता ही जाय। उणियारो भूली गया

खीर रे तिणसुं तो अधिको पुण्य ज वधियो घाली गोभद्र घर सीर रे भाई ॥पु०।७॥

॥ ढाल तीसरी ॥

हाथ जोड़ी ने इम कहे जी सांभल मोरी ज माय। आज्ञा देओ मुझ भणीजी हुं वंदू भगवंत जाय। हो जननी अनुमति देवो आदेस ॥१॥ वलती माता इम कहे जी सांभल म्हारा पूत। ज्ञानी तो देखी रह्या थारा घट घट केरा भाव रे। जाया हूं घर बैठ्याही ज वांद ॥२॥ वलता कुंवर इम कहे जी सांभल मोरी माय। घर बैठा वंदन करुं म्हारी जुगति नहीं छे वात हो जननी ॥३॥ वलती माता इम कह्योजी दिन रा मारे ज सात। घर बाहिर निकलवा भणी तू रखे न काढे वात रे जाया तू० ॥४॥ गांव नगर विचरंता म्हारा मन का मनोरथ थाय। वली विशेखे जाणजो म्हारा समकितरा दातार हो जननी ॥५॥ शहर नगरां विचरंता म्हारो मन रह्यो हुलसाय। वली विशेषे जाणजो म्हारा गुरु आया साचात हो जननी० ॥६॥ ए मन्दिर ए मालिया जी या सुकमाल ज सेज। इतरा ने छिटकाय ने तू कांई राखे मरणा री टेक रे जाया० ॥७॥ ए मंदिर ए मालिया जी मिलिया अनंती वार। दरसण दोहिला वीरना म्हारो मन रह्यो हुलसाय हो जननी० ॥८॥ विलविलती माता

इम कह्योजी पुत्र न मानी बात । भर भर नयना माता भूरेजी जिम सुख हो तिम करो रे जाया वंदो वीर जिनंद ।।६।।

दोहा-वीच बजार थी निसरिया, साथे हुआ अनेक ।
वीर वांदन ने चालिया खडिया एकाएक ।।१।।

।। ढाल चौथी ।।

(देशो-झर सुर कायर रो हृदय तरहरे रे)

कोई नरनारी मन्दिर मालियाजी झांके जालियां में मुंडो घाल जी । सेठ सुदर्शन श्रावक चालिया जी वीर वांदण ने शूर वीरजी झुर झुर कायर रो हिवडो थरहरे जी ।।१।। कोई नरनारी मंदिर मालियाजी कोई दरवाजे ऊभी जोयजी । कोई नरनारी मुख से इम कहेजी, चौबारचा जोव जायजी ।।झुर०।।२।। कोई नरनारी मुख सुं इम कहेजी, यश रा तो भूखा दीसे सेठजी । खबरां तो पड़सी बाहिर नीसरया जी । होसी अर्जुनमाली सुं भेटजी ।।झुर०।।३।। कोई नरनारी मुख सु इम कहेजी देवां इण सेठ भणी शाबाशजी । इसड़ी विरिया में वंदन चालियाजी कीसडो उमाओ चढियो सूरजी ।।४।। (जो जो समकित रो रस परगमेजी) नगरी तो बीचे होय होय नीसरिया जी, वन मांहि आया शूर वीरजी । अर्जुन माली नजरां देखने जी आडो तो फिरियो सामो आयजी ।।जो०।।५।।

हो । मुनि०।३। राजगृही में गोचरी सिधाया जहां कीनो छे पेली वार धावो हो ॥मुनि०।४॥ छठ पारणे गोचरी जावे, लोग देखी मुनि रीस ज लावे हो ॥मु०।५॥ घर मांहि मुनिवर ने तेडे, ज्यारां पातरा में धूलज रेडे हो ॥मु०॥६॥ कोई एक तो मारे चपेटा, कोई नाखे मुनिवर ने हेठा हो ॥मु०।७॥ कोई वाल जवान ने वूढा, मुनि ने वयण सुणावे छे कूडा हो ॥मु०।८॥ कोई कहे मारिया मुझ पिता, कोई कहे पाप लागे इणरो मुख जोता हो ॥मु०।९॥ कोई कहे मारी मुझ माता, कोई कहे याने डामज देवो कर ताता हो ॥१०॥ कोई कहे मारिया मुझ भाई याने दीजै यमपुर पहुँचाई हो ॥११॥ कोई कहे मारी मुझ भगिनी, याने देखंता उठे हिये अगनी हो ॥१२। कोई कहे मारी मुझ नारी, याने दीजै मुख पर छारी हो ॥१३॥ कोई कहे मारी मुझ-बेटी, याने काढ़ो पकड़ कर घेंटी हो ॥१४॥ कोई कहे बेटा-बहुआ मारी, याने दीजो तीन तीन वार धिक्कारी हो ॥१५॥ कोई कहे मारियो मुझ काको, याने जल्दी दूरा हांको हो ॥१६॥ कोई कहे मारी मुझ सासू, याने देखंता आवे नयणां आंसू हो ॥१७॥ कोई कहे मारियो सुसरो ने सालो, यारो मुख करीजे कालो हो ॥१८॥ कोई करे वचन-प्रहारा, कोई घाव देवे तलवारा हो ॥१९॥ कोईक तो कचरो डाले, कोईक तो पाणी हिलोले हो

॥२०॥ कोईक पत्थर फेंके रीसे, मुनि ने देखी ने दांतज पीसे हो ॥२१॥ इण करम कीधा घणा खोटा, याने कोई न देसी रोटा हो ॥२२॥ इण कारण संयम लीधो इण वेष मुनि नो कीधो हो ॥२३॥ इत्यादिक सुणी जन-वाणी, मुनि रीस नहीं दिल आणी हो ॥मु०॥२४॥ सुणी ने मन में एम विचारे, मैं कीधा कर्म चडाले हो ॥मु०॥२५॥ मैं मारिया मनुष्य जीव सेती, दुःख थोड़ो छे मुकने तेह थी हो ॥मु०॥२६॥ हण्या मनुष्य इग्यारे सौ ने इकताली, म्हारी आतमा हुई घणी काली हो ॥मु०॥२७॥ आर्त रौद्र ध्यान निवारे मुनि धर्म शुक्ल चित्त धारे हो ॥मु०॥२८॥ अन्न मिले तो नहीं मिले पाणी, पानी मिले तो नहीं मिले अन्न हो ॥मु०॥२९॥ छह मास चारित्र पाली, दिया सगला पाप ने टाली हो ॥मु०॥३०॥ तप करता शरीर सुखाणो, अंतगडजी में अधिकार जाणो हो ॥मु०॥३१॥ अर्धमास संलेखना आई, अंत समय केवल शिव पाई हो ॥मु०॥३२॥ क्षमा सहित तप करणी, संसार समुद्र ज तरणी हो ॥मु०॥३३॥ उगणीस सौ गुणतीस को सालो यह तो जोड्यो है सतढान्यो हो ॥मु०॥३४॥ तिलोकरिखजी गुरु सेवीजे यह तो नरभव सफल करीजे हो ॥मु०॥३५॥ विपरीत जोड़ कोई दाखी, मिच्छामि दुक्कडं छे सब साखी हो मुनिवर हद क्षमा दिलधारी ॥३६॥

चार प्रत्येक बुद्ध की ढालें

(देशी—[illegible])

चंपा नगरी अति भली हुं वारी दधिमान राय भूपाल रे हुं वारीलाल। पद्मावती रे कूंखे उपन्या हुं वारी कर्म किया रे चंडाल रे हुं वारी लाल। करकंडुजी ने म्हारी वंदणा हु वारी ॥१॥ पहला प्रत्येक बुद्ध रे हुं वारी लाल। करकंडु नामे राय रे हुं वारी गीरवाणा गुण गावतां हुं वारी समकित थावे शुद्ध रे हु ॥२॥ लादी वंसरी लाकड़ी हुं वारी थया कंचनपुरी रा राय रे हु० बाप सुं संग्राम मांडियो हु वारी साध्वीजी दिया समझाय रे हु वारी लाल ॥३॥ वृषभ रूप देखी करी हु वारी प्रतिबोध पाम्या नरेश रे हु वारी लाल। उत्तम संजम आदरिया हु वारी देवता दियो वेश रे हु वारी लाल ॥४॥ शुद्ध संयम पालता हु वारी. करता उग्र विहार रे हु वारी लाल। दोष बयालीस टालता हुं वारी लेवंता सूझतो आहार रे हु वारी० ॥५॥ तप जप कीना आकरा हु वारी लाल दीना कर्म खपाय रे हु वारी लाल। समय सुन्दर कहे साधुजी हु वारी लाल नितनित प्रणमूं पाय रे हु वारी लाल ॥६॥

॥ ढाल दूसरी ॥

(देशी—श्यामा स्यों वर्ती चपियाजी)

नगरी कंचनपुरी रा धणीजी, जय राजा गुणवंत। न्याय नीति सुं प्रजा पालताजी। गुणमाला पटराणी दुमइ राजा दूजा प्रत्येक बुद्ध, गीर्वाणा गुण गावताजी समकित धारे शुद्ध ॥२। परती खणंता नीसर्याजी एक मुकुट अभिराम। दूजो गुरु प्रतिबोधियोजी दुमइ थयो ज्यांरो नाम ॥ दुमइ० ॥३॥ इन्द्र ध्वजा सिणगारतांजी देखंता तृप्त न थाय। खन्तक लोक खेले तिहांजी, महोद्धव मांड्यो राय। दुमइ० ॥४॥ मुकुट लेवा भणी मांडियोजी चन्द्र पद्मोतर संग्राम। चण एक राज्य खोसी लियोजी किम सुधरे ज्यांरा काम। दुमई० ॥५॥ इन्द्र ध्वजा निज पेखताजी पिघली है मिथिला मझार। अहा शोभा कारमी ए सहु अथिर संसार ॥ दुमइ ॥ ६ ॥ समय सुंदर कहे साधुजी हो नितनित प्रणमूं पाय ॥ दुमई० ॥७॥

॥ ढाल तीसरी ॥

नगरी कचन पुरी रा राय। जी हो मणिरथ राज करे तिहां ।१॥ कीनो है सबलो अन्याय, जी हो युगबाहु बंधव मारिया, मयण रेहा गई नाश जी हो तो पिण शीलज राख्यो सासतो। पद्मोत्तर अरथ भूपाल

भृग पुरोहित की ढाल

(देसी—सुखकारी सोरठ देस)

गुणसागर अणगार, करता उग्र विहार मोटा मुनिराज संयम निर्मलो पालता ए ॥१॥ आयो गरमी को काल वाजे लूआ ने जाल, मोटा मुनिराज, दुपहरा आयो तावडो ए ॥२॥ पड़ रही तावड़ा की भोट, सूख रह्या जीभ ने होठ, मोठा-मुनिराज पगल्या पाव उठे नहीं ए ॥३॥ वेदना थई भरपूर, मस्तक आयो शूल मोटा मुनिराज मूरछा खाई धरणी ढल्या ए ॥४॥ गाय चरंता ग्वाल, मुनिवर दीठा तिणवर मोटा मुनिराज तत्त्क्षण नेडा आविया ए ॥५॥ छांट्यो शीतल नीर, शीतल थयो शरीर, मोटा० चेत लही ने ऋषि बोलिया ए ॥६॥ यो किम कीधो काम, गुवालिया कहे तिणठाम मोटा० छाछ पाणी वेहराविया ए ॥७॥ उलट भाव चितलाय प्रतिलाभिया ऋषिराय मोटा० चारों ही जीव संग चोपसु ए ॥८॥ मुनिवर लीधो आहार, परत कीधो संसार, मोटा० मन मांहि हर्ष पामिया घणा ए ॥९॥ पीठ थी आया दोय वलि थोड़ा किम होय मोटा०

मत्सर भाव दिल आणियो ए ॥१०॥ आपां सावां नितमेव, आज ऋषि री करगां सेव, मोटा मु० ऋषि पासे बहुँ जणा ए ॥११॥ ऋषि दियो उपदेश, वैराग्य भाव विशेष मोटा मु० तन धन यौवन कारमो ए ॥१२॥ जाण्यो अथिर संसार, लीधो ए संजम भार मोटा मु० समकित में सुथरया घणा ए ॥१३॥ तपस्या विविध प्रकार पाले निरतिचार मोटा० अंत समय अनशन कीधो ए ॥१४॥ नलिनी गुल्म विमान, पाम्या ए देव विमान मोटा० ऋद्धि वृद्धि पाम्या घणी ए ॥१५॥ जनचंदजी बोल्या एम, पाले शुद्ध नेम, मोटा० आतम गुण उपवालिया ए ॥१६॥

दोहा-देवलोक थकी देवता जाण्यो च्यवन विचार।
पहला आया प्रतिबोधवा भृगु पुरोहित जस्सा भार ॥
ते नगरी अति दीपती देवलोक सम जान।
भृगु पुरोहित जस्सा भारिया, जारे घणी पुत्र की चाह ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

रंग रूपधारीओ अंबरधारीओ मुनिवर मुनिवर अंबरधारीओ तीन पछेवड़ी ॥ १ ॥ पातर रंगियाओ लोटवा चंगियाओ मुनिवर मुनिवर ऊचो नी जोवेओ मुख भीणा बोलताजी ॥ २ ॥ मस्तक लोच्याओ बाहियां सोवा ओ मुनिवर ईर्या जोई ने ओ पग पूंजी धरेजी

॥ ढाल तीसरी ॥

(देसी—मारू)

वालूडा संग न जाजो रे मारे घर वेगा आजो रे, कह्यो मारो मानी लीजो रे, जाया मारा मोय सुख दीजो रे ॥१॥टेर॥ रंग रंगीला पातरा, वारा हाथ में पंच रंग्यो लोट । मुंडे बांधे मुहपत्ती वारा मन माय मोटी खोड ॥वालूडा०॥२॥ पाय अरवाणे संचरया रे मस्तक लुंच्या केश । ओघो तो राखे खाख में भई मुनिवर मैला वेश । वालूडा०॥४॥ नाना तो वालक भोरवे रे गहना लेवे उतार । तीखा कतरणी पाछणा रे ऋषि राखे झोरी रे माय ॥वा०॥५॥ माथे नाखे भूरकी रे तेड्या तेड्या जाय । जो थे तेड्या जावसो रे भाई निश्चय गेल्या थाय ॥वा०॥५॥ धर्म कथा करे धूम से रे विधि से करे रे वखाण । चन्द्र तणी वे रे मोहिया भई चुम्बक लोह पापाण ॥वा०॥६॥ प्रीत लगावे प्रेम से रे मत कर जो विश्वास । साधु रुप ज देखने भई वेगा आजो भाग ॥वा०॥७॥ इम सिखाई ने मोकल्या रे खेलो चंदन चौक । वाग वाडी चौगान मे जठे खेले वहुला लोक ॥वा०॥८॥ घर घर करता गोचरी रे लेता निर्दोप आहार । मारग भूल्या साधुजी भई आया ए अटवी रे मांय रे । वंधव कुण आया रे भई आपे घर किम चालां रे ॥टेर॥६॥ थर हर लागा धूजवा रे कंपन लागो शरीर ।

तात कह्या जे आविया भई अब किम करसां एम रे ।।बंधव।।१०।। कायर नर नासी गया रे शूरा रह्या निज ठाम । तात कह्या जे आविया भई अब किम करसां एम रे ।।बंधव०।।११।। दौड चढ्या वृक्ष उपरे रे हिये न मावे सांस । केडे तो आया आपणे भई कैसे जीवन की आसो रे ।।बंधव०।।१२।। जगह तो जोवे साधुजी रे आया तरुवर हेठ । ईर्यावही पडिकमणो भई मिच्छामि दुक्कडो देय ।।ब०।।१३।। झोरी तो मेले पूंजने रे मेले निर्दोषण आहार । सरस नीरस नी गोचरी भई देखे दोनों कुमार रे ।।ब०।।१४।। रूप वरण एवो नहीं रे स्वाद नहीं तिण माय । पारस जूं पची रह्या भई ज्ञान घणो इण पासो रे ।।ब०।।१५।। कीड़ी ने दुभे नहीं रे बालक मारे केम । मोह थकी रूलाविया लघु बोले एवा वेणो रे ।।ब०।।१६।। जातिस्मरण उपनो रें आया तरुवर हेठ । मात पिता ने पूछ ने स्वामी लेसां संजम भारो रे । साधुजी भला ही पधारिया हो के सतगुरु भला ही पधारिया हो ।।१७।। जिम सुख होवे तिम करो रे भगवंत दियो फरमाय । थोड़ा मे नफो घणो भाई उत्तम देसी दानो रे । साधुजी भला ही पधारिया रे के ज्ञानी गुरु भला ही पधारिया रे ।

।। ढाल चौथी ।।

(देसी–सांमलो हो सतिया)

महलां में बैठी ओ रानी कमलावती, मारग में

नहीं आवे लाज ॥सांभल०॥८॥ सगला जगत को धन भेरो करियो घाल्यो थारां राज के मांय । तो पण तृष्णा ओ राजाजी पापणी, कदी य नहीं तृप्त थाय ॥सांभल.।६। सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें बोलो नी वचन विचार । के तो राणीजी थाने झोलो वाजियो के थांए पीधी मतवार । सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१०॥ नहीं तो राजाजी म्हाने झोलो वाजियो नहीं म्हांए पीधी मतवार । भृगु पुरोहित ऋद्धि तज नीसर्यों में वरजण आई भूपाल ॥सांभल महाराज०॥११॥ सांभल ने इक्षकार राजा बोलिया थें ऐसा वैरागण होय । आज तलक कोई दीसे नहीं थें बैठा म्हारा राज के माय सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१२॥ रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुओ जाणे सो ही फंद । हुं पण आपका राज में कदी य न पाऊं आनंद सांभल म्हाराजा आज्ञा देओ तो संजम आदरूं ॥१३॥ स्नेह रूपियो तांतो तोड़ने आरंभ धन से रहूँ दूर । हुँ पण राज छोड़ी नीसरुं थें पण चेतो भूपाल ॥ सांभल महा-राजा० ॥१४॥ दव तो लागो राजाजी वन मांहि हरिण सुसलिया बरे माय । ऊंचा माला का पत्ती देखने मन मांहि हर्षित थाय ।.सांभल महाराजा० ॥१५॥ अणी दृष्टान्त राय मूरख थया, आप मुरझ रह्या मन मांय । पेला को दुख देखी चेत्या नहीं, राग द्वेष की लग रही

जग में लाय ॥सांभल महाराजा०॥१६॥ भोगव्या काम छांडि ने द्रव्य भावे हल्का होय । वायु सरीसा पंखी नी पेरे विचरमां आपण दोय ॥सांभल महा. आज्ञा.॥१७॥ मांस री बूंटी ओ पत्ती की चांच में नर वंसा पंखी पड़े आय । अहि समान भोग छंडी ने चारित्र लेसां चित लाय ॥सांभल॥१८॥ गृद्ध पंखी जिम जाणिये काम वधारे संसार । गरुड़ से सांप डरतो रहे त्यों पाप से शंकाय ॥सांभल० आज्ञा० ॥१६॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने अपणे मन वन में सुखी थाय । इणी पेरे बंधन तोड़ने चारित्र लेसां महाराय ॥सांभल महाराजा०॥२०॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई चालण हार । रात दिवस वहे बाटड़ी चेतो क्यों नी महाराज । सांभल महाराजा राणी समझावे ओ राय ने ॥२१ कुटुम्ब काजे कर्म बांध ने पडियो नरक मझार । एकलडो दुःख भोगवे कुण छुडावे महाराज ॥सांभल॥२२॥ परदेशी तो परदेश में किण से करे रे सनेह । आया कागद ने उठ चल्या, नहीं गिने आंधी ने मेह ॥साभल० ॥२३॥ व्हाला तो दुखिया थया. मिलिया बहुला लोक । देखता ही उठ चल्या, नहीं कोई राखण हार ॥सांभल० ॥२४॥ व्हाला बिना एक घड़ी सरतो नहीं रे लगार । जाने मुआ ने बहु वर्ष हुआ पाछा नहीं समाचार ॥ सांभल० ॥२५॥ काची काया को कैसो गारवो, जतन करता ही जाय । उणियारो भूली गया

नहीं आवे लाज ॥सांभल०॥८॥ सगला जगत को धन
भेरो करियो घाल्यो थारां राज के मांय । तो पण तृष्णा
ओ राजाजी पापणी, कदी य नहीं तृप्त थाय ॥सांभल.।६।
सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें बोलो नी वचन
विचार । के तो राणीजी थाने भोलो बाजियो के थांए
पीधी मनवार । सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन
न बोलिये ॥१०॥ नहीं तो राजाजी म्हाने भोलो बाजियो
नहीं म्हांए पीधी मतवार । भृगु पुरोहित ऋद्धि तज
नीसर्यो में बरजण आई भूपाल ॥सांभल महाराज०॥११॥
सांभल ने इक्षुकार राजा बोलिया थें ऐसा बैरागण होय ।
आज तलक कोई दीसे नहीं थें बैठा म्हारा राज के माय
सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१२॥
रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुओ जाणे सो ही
फंद । हुँ पण आपका राज में कदी य न पाऊं आनंद
सांभल म्हाराजा आज्ञा देओ तो संजम आदरूं ॥१३॥
स्नेह रूपियो तांतो तोड़ने आरंभ धन से रहूँ दूर । हुँ पण
राज छोड़ी नीसरु थें पण चेतो भूपाल ॥ सांभल महा-
राजा० ॥१४॥ दव तो लागो राजाजी वन मांहि हरिण
सुसलिया बरे माय । ऊंचा माला का पत्ती देखने मन
मांहि हर्षित थाय ।.सांभल महाराजा० ॥१५॥ अणी
दृष्टान्त राय मूरख भया, आप मुरझ रह्या मन मांय ।
पेला को दुख देखी चेत्या नहीं, राग द्वेष की लग रही

उग में लाय ॥सांभल महाराज्ञा०॥१६॥ भोगव्या काम छांडि ने द्रव्य भावे हल्का होय । वायु सरीखा पंखी नी पेरे विचरमां आपण दोय ॥सांभल महा. आज्ञा.॥१७॥ मांस री चूंटी आं पखी की चोंच में नर वंसा पंखी पड़े आय । अहि समान भोग छंडी ने चारित्र लेसां चित लाय ॥सांभल॥१८॥ गृद्ध पंखी जिम जाणिये काम वधारे संसार । गरुड़ से सांप डरतो रहे त्यां पाप से शंकाय ॥सांभल० आज्ञा० ॥१६॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने अपणे मन वन में खुशी थाय । इणी पेरे बंधन तोड़ने चारित्र लेसां महाराय ॥सांभल महाराज्ञा०॥२०॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई चालण हार । रात दिवस वहे बाटड़ी चेतो क्यों नी महाराज । सांभल महाराज्ञा राणी समझावे यों राय ने ॥२१ कुटम्ब काजे कर्म बांध ने पडियो नरक मझार । एकलडो दुःख भोगने कुण छुडावे महाराज ॥सांभल॥२२॥ परदेशी तो परदेश में किण से का रे सनेह । आया कागद ने उठ चल्या, नहीं गिने आंधी ने मेह ॥साभल० ॥२३॥ व्हाला तो दुखिया थया मिलिया बहुला लोक । देखता ही उठ चल्या, नहीं कोई राखण हार ॥सांभल० ॥२४॥ व्हाला विना एक घड़ी सरतो नहीं रे लगार । जाने मुआ ने बहु वर्ष हुआ पाछा नहीं समाचार ॥ सांभल० ॥२५॥ काची काया को कैसो गारवो, जतन करता ही जाय । उणियारो भूली गया

नहीं मिलिया पाछा आय ॥सांभल० ॥२६॥ काई सूतो रे तू मानवी, सूतो मोह भर नींद । कालडो थारे बारणे ज्यों तोरण पर बींद ॥सांभल० ॥२७॥ वड़ा वड़ा तो वल गया तू भी चलणहार । काई बूझे रे तू मानवी काई करे रे टंगार ॥सांभल०॥२८॥ सांभलने इचुकार राजा चेतिया, छोड़िया है मोह जंजाल । कायर ने तजता दोहिलो वीर नर सारिया काज । सांभल महा-राजा छे हुँ जणा संयम आदरियो ॥२६॥ छे ही अनु-क्रमे प्रतिबंधिया सांचो धर्म तप सार । टलिया जन्म मरण थकी दुखरो अंत कराय ॥सांभल०॥३०॥ मोह निवारण जिन शासन मध्ये पूरव शुभ कर्म थाय । छे ही जणा थोड़ा काल में मुक्ति गया दुःख थी सुकाय ॥सांभल०॥३१॥ राजा सहित राणी कमलावती भृगु पुरोहित जस्सा नार । ब्राह्मण का दोनों बालका शिव सुख पामसी व सार ॥सांभल०॥३२॥ इति ॥

नहीं थारे आज ॥सांभल०॥[illegible]॥ [illegible] का [illegible]
मेरो हरियो [illegible] के मांय । तो पण [illegible]
तो राजाजी [illegible], [illegible] नहीं [illegible] ॥सांभल०॥
सांभल ने इणकार राजा बोलिया थे [illegible] वचन
विचार । के तो राणीजी [illegible] के [illegible]
[illegible] भरतार । सांभल महाराणी राजा ने कडुवा वचन
न बोलिये ॥१०॥ नहीं तो राजाजी म्हाने [illegible]
नहीं म्हांए [illegible] भरतार । भृगु पुरोहित आदि तज
नीसर्या में नर [illegible] आई भूपाल ॥सांभल महाराज०॥११॥
सांभल ने इणकार राजा बोलिया थे ऐसा वैरागण होय ।
आज तलक कोई दीसे नहीं थें बैठा म्हारा राज के माय
सांभल महाराणी राजा ने कडवा वचन न बोलिये ॥१२॥
रतन जड़त को राजाजी पींजरो, सुत्रो जाणे सो ही
फंद । हुं पण आपका राज में कदी य न पाऊं आनंद
सांभल म्हाराजा आज्ञा देत्रो तो संजम आदरूं ॥१३॥
स्नेह रूपियो तांतो तोड़ने आरंभ धन से रहूँ दूर । हुं पण
राज छोड़ी नीसरुं थें पण चेतो भूपाल ॥ सांभल महा-
राजा० ॥१४॥ दव तो लागो राजाजी वन मांहि हरिण
सुसलिया बरे माय । ऊंचा माला का पत्ती देखने मन
मांहि हर्षित थाय ।.सांभल महाराजा० ॥१५॥ अणी
दृष्टान्त राय मूरख थया, आप मूरख रह्या मन माय ।
पेला को दुख देखी चेत्या नहीं, राग द्वेष की लग रही

जग में लाय ॥सांभल महाराजा०॥१६॥ भोगव्या काम छांडि ने द्रव्ये भावे हल्का होय । वायु सरीखा पंखी नी पेरे विचरसां आपण दोय ॥सांभल महा. आज्ञा.॥१७॥ मांस री बूंटी ओ पत्ती की चोंच में नर वंसा पंखी पड़े आय । अहि समान भोग छंडी ने चारित्र लेसां चित लाय ॥सांभल॥१८॥ गृद्ध पंखी जिम जाणिये काम वधारे संसार । गरुड़ से सांप डरतो रहे त्यों पाप से शंकाय ॥सांभल० आज्ञा० ॥१६॥ हस्ती जिम सांकल तोड़ ने अपणे मन वन में सुखी थाय । इणी पेरे बंधन तोड़ने चारित्र लेसां महाराय ॥सांभल महाराजा०॥२०॥ केई चाल्या ने केई चालसी केई चालण हार । रात दिवस वहे वाटड़ी चेतो क्यों नी महाराज । सांभल महाराजा राणी समझावे ओ राय ने ॥२१ कुटुम्ब काजे कर्म बांध ने पडियो नरक मझार । एकलडो दुःख भोगवे कुण छुडावे महाराज ॥सांभल॥२२॥ परदेशी तो परदेश में किण से करे रे सनेह । आया कागद ने उठ चल्या, नहीं गिने आंधी ने मेह ॥साभल० ॥२३॥ व्हाला तो दुखिया थया. मिलिया बहुला लोक । देखता ही उठ चल्या, नहीं कोई राखण हार ॥सांभल० ॥२४॥ व्हाला बिना एक घड़ी सरतो नहीं रे लगार । जाने मुआ ने बहु वर्ष हुआ पाछा नहीं समाचार ॥ सांभल० ॥२५॥ काची काया को कैसो गारवो, जतन करता ही जाय । उणियारो भूली गया

नहीं मिलिया पाछा आग ॥सांभल० ॥२६॥ काई सूतो रे तू मानवी, सूतो मोह भर नींद । कालडो थारे बारणे ज्यों तोरण पर नींद ॥सांभल० ॥२७॥ बड़ा बड़ा तो चल गया तू भी चलणहार । काई नूके रे तू मानवी काई करे रे टंगार ॥सांभल०॥२८॥ सांभलने इक्षुकार राजा चेतिया, छोड़िया है मोह जंजाल । कायर ने तजता दोहिलो वीर नर सारिया काज । सांभल महा-राजा छे हुं जणा संयम आदरियो ॥२६॥ छे ही अनु-क्रमे प्रतिबोधिया सांचो धर्म तप सार । टलिया जन्म मरण थकी दुखरो अंत कराय ॥सांभल०॥३०॥ मोह निवारण जिन शासन मध्ये पूरव शुभ कर्म थाय । छे ही जणा थोड़ा काल में मुक्ति गया दुःख थी मुकाय ॥सांभल०॥३१॥ राजा सहित राणी कमलावती भृगु पुरोहित जस्सा नार । ब्राह्मण का दोनों बालका शिव सुख पामसी घ सार ॥सांभल०॥३२॥ इति ॥

મુંબઈના કોઈ એક શાયરે એ
નિશ્વાસ નાખેલો કે. 'કાઠિયાવા
ગુજરાતની ભૂમિમાં કવિઓને પ્રેરણ
સ્ફુરે તેવું કશું રહ્યું નથી, એટ
આપણે એ પ્રેરણાની શોધમાં કાશ્મીર
જવું પડે છે'

એવું આકરું મેણું પામેલા આ
કાઠિયાવાડની—આ સૌરાષ્ટ્રની—પૂરી
તો નહિ, પણ બને તેટલી પિછાન
આપવાનો આ સંગ્રહનો અભિલાષ છે.

આ પિછાન કોઈ બહારનાંઓને
નહિ પણ ખુદ આ ભૂમિનાં સંતાનોને જ
કરાવવાની છે. આપણી લોકકથાઓ
અને આપણાં લોકગીતોમાં પડેલી
પ્રેમશૌર્યની ભાવનાઓ આ રીતે
ાણી કરીને આપણી નવી પ્રજાએ
ે દિલાવર સંસ્કારના સાચા વારસદાર
ાનવાનું છે

★

દિલાવર સંસ્કારના વારસદાર

મુંબઈના કોઈ એક સાક્ષરે એવો નિશ્વાસ નાખેલો કે : 'કાઠિયાવાડ-ગુજરાતની ભૂમિમાં કવિઓને પ્રેરણા સ્ફૂરે તેવું કશું રહ્યું નથી, એટલે આપણે એ પ્રેરણાની શોધમાં કાશ્મીર જવું પડે છે'

એવું આકરું મેણું પામેલા આ કાઠિયાવાડની—આ સૌરાષ્ટ્રની—પૂરી તો નહિ, પણ બને તેટલી પિછાન આપવાનો આ સંગ્રહનો અભિલાષ છે.

આ પિછાન કોઈ બહારનાંઓને નહિ પણ ખુદ આ ભૂમિનાં સંતાનોને જ કરાવવાની છે. આપણી લોકકથાઓ અને આપણાં લોકગીતોમાં પડેલી પ્રેમશૌર્યની ભાવનાઓ આ રીતે તાજી કરીને આપણી નવી પ્રજાએ એ દિલાવર સંસ્કારના સાચા વારસદાર